

विदेह VIDEHA

UGC NET/JRF मैथिली

UGC NET-JRF Maithili

विदेह ई-लर्निङ्ग प्रश्नोत्तरी शृंखला · Videha eLearning Quiz Book Series

खण्ड ५ / ९ · Volume 5 of 9

सम्पादक / लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

VIDEHA — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

विदेह ई-लर्निङ्ग: <https://www.videha.co.in/videha-elearning.htm>

© Gajendra Thakur, Editor — Videha eJournal [Beta Version; suggestions invited]

विषय-सूची / Contents

१. भाषाविज्ञान

१००० प्रश्न

२. काव्यशास्त्र — विदेह क्विज

१००० प्रश्न

प्रत्येक अध्यायक प्रश्न-खण्डक बाद ओहि अध्यायक उत्तरमाला (उत्तर ओ व्याख्या) देल गेल अछि।

In each chapter, the answer key with explanations (उत्तरमाला) follows the questions.

अध्याय १ : भाषाविज्ञान

१. भाषाक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (B) केवल कागज पर लिखल अक्षर
- (C) केवल पशुध्वनि
- (D) केवल मौन इशारा

२. संकेतक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (B) रंगक सजावट
- (C) ध्वनि-विहीन शून्य
- (D) अर्थ पहुँचाबयवला रूप

३. यादृच्छिकताक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (B) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि
- (C) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि
- (D) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि

४. सामाजिकताक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (B) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि
- (C) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि
- (D) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि

५. ध्वनिक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (B) माटिक आकार
- (C) वस्त्रक रंग
- (D) केवल लेखनक कागज

६. व्याकरणक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल शब्दकोशक सूची
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) कथाक पात्र
- (D) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था

७. वाक्यक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल एक रंग
- (B) निर्वाक संकेत
- (C) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह
- (D) अर्थहीन अक्षर

८. मानव-विशेषताक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल वर्षाक ध्वनि
- (B) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य
- (C) केवल कीट-पतंगक चाल
- (D) केवल मशीनक आवाज

९. सृजनशीलताक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (B) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब
- (C) नियमक अभाव
- (D) अर्थक स्थिर मृत्यु

१०. परम्पराक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) एक दिनक खेल
- (B) केवल सरकारी टिकट
- (C) अकस्मात् मौन
- (D) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार

११. संप्रेषणक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) कागज फाड़ब
- (B) संगीत-वाद्यक नाम
- (C) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया
- (D) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय

१२. लिपिक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) वाक्यक अर्थहीनता
- (B) भाषाक दृश्य लेखन-रूप
- (C) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म
- (D) भोजनक स्वाद

१३. बोलचालक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप
- (B) केवल संग्रहालयक वस्तु
- (C) अर्थहीन चित्र
- (D) धातुक नियम

१४. मानक भाषाक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल घरक गुप्त बोली
- (B) अनियमित ध्वनि-संग्रह
- (C) मौन परम्परा
- (D) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप

१५. प्रयोगक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) अर्थहीन लकीर
- (B) अकस्मात् शोर
- (C) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल
- (D) केवल नियमक मृत सूची

१६. भाषा भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (16)?

- (A) केवल मौन इशारा
- (B) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (C) केवल कागज पर लिखल अक्षर
- (D) केवल पशुध्वनि

१७. संकेत भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (17)?

- (A) अर्थ पहुँचाबयवला रूप
- (B) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (C) रंगक सजावट
- (D) ध्वनि-विहीन शून्य

१८. यादृच्छिकता भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (18)?

- (A) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि
- (B) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (C) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि
- (D) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि

१९. सामाजिकता भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (19)?

- (A) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (C) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि
- (D) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि

२०. ध्वनि भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (20)?

- (A) केवल लेखनक कागज
- (B) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (C) माटिक आकार
- (D) वस्त्रक रंग

२१. व्याकरण भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (21)?

- (A) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था
- (B) केवल शब्दकोशक सूची
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) कथाक पात्र

२२. वाक्य भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (22)?

- (A) अर्थहीन अक्षर
- (B) केवल एक रंग
- (C) निर्वाक संकेत
- (D) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह

२३. मानव-विशेषता भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (23)?

- (A) केवल मशीनक आवाज
- (B) केवल वर्षाक ध्वनि
- (C) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य
- (D) केवल कीट-पतंगक चाल

२४. सृजनशीलता भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (24)?

- (A) अर्थक स्थिर मृत्यु
- (B) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (C) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब
- (D) नियमक अभाव

२५. परम्परा भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (25)?

- (A) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार
- (B) एक दिनक खेल
- (C) केवल सरकारी टिकट
- (D) अकस्मात् मौन

२६. संप्रेषण भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (26)?

- (A) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय
- (B) कागज फाड़ब
- (C) संगीत-वाद्यक नाम
- (D) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया

२७. लिपि भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (27)?

- (A) भोजनक स्वाद
- (B) वाक्यक अर्थहीनता
- (C) भाषाक दृश्य लेखन-रूप
- (D) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म

२८. बोलचाल भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (28)?

- (A) धातुक नियम
- (B) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप
- (C) केवल संग्रहालयक वस्तु
- (D) अर्थहीन चित्र

२९. मानक भाषा भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (29)?

- (A) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप
- (B) केवल घरक गुप्त बोली
- (C) अनियमित ध्वनि-संग्रह
- (D) मौन परम्परा

३०. प्रयोग भाषा-विचारमे कोन बात स्पष्ट करैत अछि (30)?

- (A) केवल नियमक मृत सूची
- (B) अर्थहीन लकीर
- (C) अकस्मात् शोर
- (D) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल

३१. नीचाँकमे भाषाक सही संकेत कोन अछि (31)?

- (A) केवल पशुध्वनि
- (B) केवल मौन इशारा
- (C) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (D) केवल कागज पर लिखल अक्षर

३२. नीचाँकमे संकेतक सही संकेत कोन अछि (32)?

- (A) ध्वनि-विहीन शून्य
- (B) अर्थ पहुँचाबयवला रूप
- (C) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (D) रंगक सजावट

३३. नीचाँकमे यादृच्छिकताक सही संकेत कोन अछि (33)?

- (A) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि
- (B) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि
- (C) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (D) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि

३४. नीचाँकमे सामाजिकताक सही संकेत कोन अछि (34)?

- (A) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि
- (B) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (D) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि

३५. नीचाँकमे ध्वनिक सही संकेत कोन अछि (35)?

- (A) वस्त्रक रंग
- (B) केवल लेखनक कागज
- (C) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (D) माटिक आकार

३६. नीचाँकमे व्याकरणक सही संकेत कोन अछि (36)?

- (A) कथाक पात्र
- (B) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था
- (C) केवल शब्दकोशक सूची
- (D) अर्थहीन ध्वनि

३७. नीचाँकमे वाक्यक सही संकेत कोन अछि (37)?

- (A) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह
- (B) अर्थहीन अक्षर
- (C) केवल एक रंग
- (D) निर्वाक संकेत

३८. नीचाँकमे मानव-विशेषताक सही संकेत कोन अछि (38)?

- (A) केवल कीट-पतंगक चाल
- (B) केवल मशीनक आवाज
- (C) केवल वर्षाक ध्वनि
- (D) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य

३९. नीचाँकमे सृजनशीलताक सही संकेत कोन अछि (39)?

- (A) नियमक अभाव
- (B) अर्थक स्थिर मृत्यु
- (C) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (D) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब

४०. नीचाँकमे परम्पराक सही संकेत कोन अछि (40)?

- (A) अकस्मात् मौन
- (B) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार
- (C) एक दिनक खेल
- (D) केवल सरकारी टिकट

४१. नीचाँकमे संप्रेषणक सही संकेत कोन अछि (41)?

- (A) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया
- (B) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय
- (C) कागज फाड़ब
- (D) संगीत-वाद्यक नाम

४२. नीचाँकमे लिपिक सही संकेत कोन अछि (42)?

- (A) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म
- (B) भोजनक स्वाद
- (C) वाक्यक अर्थहीनता
- (D) भाषाक दृश्य लेखन-रूप

४३. नीचाँकमे बोलचालक सही संकेत कोन अछि (43)?

- (A) अर्थहीन चित्र
- (B) धातुक नियम
- (C) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप
- (D) केवल संग्रहालयक वस्तु

४४. नीचाँकमे मानक भाषाक सही संकेत कोन अछि (44)?

- (A) मौन परम्परा
- (B) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप
- (C) केवल घरक गुप्त बोली
- (D) अनियमित ध्वनि-संग्रह

४५. नीचाँकमे प्रयोगक सही संकेत कोन अछि (45)?

- (A) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल
- (B) केवल नियमक मृत सूची
- (C) अर्थहीन लकीर
- (D) अकस्मात् शोर

४६. भाषा केँ समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (46)?

- (A) केवल कागज पर लिखल अक्षर
- (B) केवल पशुध्वनि
- (C) केवल मौन इशारा
- (D) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली

४७. संकेत केँ समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (47)?

- (A) रंगक सजावट
- (B) ध्वनि-विहीन शून्य
- (C) अर्थ पहुँचाबयवला रूप
- (D) अर्थ हटाबयवला बाधा

४८. यादृच्छिकता केँ समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (48)?

- (A) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि
- (B) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि
- (C) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि
- (D) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि

४९. सामाजिकता के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (49)?

- (A) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि
- (B) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि
- (C) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि

५०. ध्वनि के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (50)?

- (A) माटिक आकार
- (B) वस्त्रक रंग
- (C) केवल लेखनक कागज
- (D) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप

५१. व्याकरण के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (51)?

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) कथाक पात्र
- (C) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था
- (D) केवल शब्दकोशक सूची

५२. वाक्य के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (52)?

- (A) निर्वाक संकेत
- (B) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह
- (C) अर्थहीन अक्षर
- (D) केवल एक रंग

५३. मानव-विशेषता के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (53)?

- (A) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य
- (B) केवल कीट-पतंगक चाल
- (C) केवल मशीनक आवाज
- (D) केवल वर्षाक ध्वनि

५४. सृजनशीलता के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (54)?

- (A) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब
- (B) नियमक अभाव
- (C) अर्थक स्थिर मृत्यु
- (D) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता

५५. परम्परा के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (55)?

- (A) केवल सरकारी टिकट
- (B) अकस्मात् मौन
- (C) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार
- (D) एक दिनक खेल

५६. संप्रेषण के समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (56)?

- (A) संगीत-वाद्यक नाम
- (B) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया
- (C) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय
- (D) कागज फाड़ब

५७. लिपि कें समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (57)?

- (A) भाषाक दृश्य लेखन-रूप
- (B) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म
- (C) भोजनक स्वाद
- (D) वाक्यक अर्थहीनता

५८. बोलचाल कें समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (58)?

- (A) केवल संग्रहालयक वस्तु
- (B) अर्थहीन चित्र
- (C) धातुक नियम
- (D) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप

५९. मानक भाषा कें समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (59)?

- (A) अनियमित ध्वनि-संग्रह
- (B) मौन परम्परा
- (C) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप
- (D) केवल घरक गुप्त बोली

६०. प्रयोग कें समझबाक लेल सर्वोत्तम कथन कोन अछि (60)?

- (A) अकस्मात् शोर
- (B) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल
- (C) केवल नियमक मृत सूची
- (D) अर्थहीन लकीर

६१. भाषाक प्रकृतिमे भाषाक स्थान केहन अछि (61)?

- (A) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (B) केवल कागज पर लिखल अक्षर
- (C) केवल पशुध्वनि
- (D) केवल मौन इशारा

६२. भाषाक प्रकृतिमे संकेतक स्थान केहन अछि (62)?

- (A) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (B) रंगक सजावट
- (C) ध्वनि-विहीन शून्य
- (D) अर्थ पहुँचाबयवला रूप

६३. भाषाक प्रकृतिमे यादृच्छिकताक स्थान केहन अछि (63)?

- (A) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (B) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि
- (C) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि
- (D) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि

६४. भाषाक प्रकृतिमे सामाजिकताक स्थान केहन अछि (64)?

- (A) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (B) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि
- (C) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि
- (D) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि

६५. भाषाक प्रकृतिमे ध्वनिक स्थान केहन अछि (65)?

- (A) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (B) माटिक आकार
- (C) वस्त्रक रंग
- (D) केवल लेखनक कागज

६६. भाषाक प्रकृतिमे व्याकरणक स्थान केहन अछि (66)?

- (A) केवल शब्दकोशक सूची
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) कथाक पात्र
- (D) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था

६७. भाषाक प्रकृतिमे वाक्यक स्थान केहन अछि (67)?

- (A) केवल एक रंग
- (B) निर्वाक संकेत
- (C) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह
- (D) अर्थहीन अक्षर

६८. भाषाक प्रकृतिमे मानव-विशेषताक स्थान केहन अछि (68)?

- (A) केवल वर्षाक ध्वनि
- (B) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य
- (C) केवल कीट-पतंगक चाल
- (D) केवल मशीनक आवाज

६९. भाषाक प्रकृतिमे सृजनशीलताक स्थान केहन अछि (69)?

- (A) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (B) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब
- (C) नियमक अभाव
- (D) अर्थक स्थिर मृत्यु

७०. भाषाक प्रकृतिमे परम्पराक स्थान केहन अछि (70)?

- (A) एक दिनक खेल
- (B) केवल सरकारी टिकट
- (C) अकस्मात् मौन
- (D) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार

७१. भाषाक प्रकृतिमे संप्रेषणक स्थान केहन अछि (71)?

- (A) कागज फाड़ब
- (B) संगीत-वाद्यक नाम
- (C) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया
- (D) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय

७२. भाषाक प्रकृतिमे लिपिक स्थान केहन अछि (72)?

- (A) वाक्यक अर्थहीनता
- (B) भाषाक दृश्य लेखन-रूप
- (C) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म
- (D) भोजनक स्वाद

७३. भाषाक प्रकृतिमे बोलचालक स्थान केहन अछि (73)?

- (A) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप
- (B) केवल संग्रहालयक वस्तु
- (C) अर्थहीन चित्र
- (D) धातुक नियम

७४. भाषाक प्रकृतिमे मानक भाषाक स्थान केहन अछि (74)?

- (A) केवल घरक गुप्त बोली
- (B) अनियमित ध्वनि-संग्रह
- (C) मौन परम्परा
- (D) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप

७५. भाषाक प्रकृतिमे प्रयोगक स्थान केहन अछि (75)?

- (A) अर्थहीन लकीर
- (B) अकस्मात् शोर
- (C) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल
- (D) केवल नियमक मृत सूची

७६. भाषा सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (76)

- (A) केवल मौन इशारा
- (B) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (C) केवल कागज पर लिखल अक्षर
- (D) केवल पशुध्वनि

७७. संकेत सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (77)

- (A) अर्थ पहुँचाबयवला रूप
- (B) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (C) रंगक सजावट
- (D) ध्वनि-विहीन शून्य

७८. यादृच्छिकता सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (78)

- (A) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि
- (B) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (C) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि
- (D) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि

७९. सामाजिकता सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (79)

- (A) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (C) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि
- (D) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि

८०. ध्वनि सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (80)

- (A) केवल लेखनक कागज
- (B) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (C) माटिक आकार
- (D) वस्त्रक रंग

८१. व्याकरण सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (81)

- (A) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था
- (B) केवल शब्दकोशक सूची
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) कथाक पात्र

८२. वाक्य सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (82)

- (A) अर्थहीन अक्षर
- (B) केवल एक रंग
- (C) निर्वाक संकेत
- (D) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह

८३. मानव-विशेषता सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (83)

- (A) केवल मशीनक आवाज
- (B) केवल वर्षाक ध्वनि
- (C) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य
- (D) केवल कीट-पतंगक चाल

८४. सृजनशीलता सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (84)

- (A) अर्थक स्थिर मृत्यु
- (B) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (C) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब
- (D) नियमक अभाव

८५. परम्परा सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (85)

- (A) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार
- (B) एक दिनक खेल
- (C) केवल सरकारी टिकट
- (D) अकस्मात् मौन

८६. संप्रेषण सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (86)

- (A) अर्थ छिपाबयक मात्र उपाय
- (B) कागज फाड़ब
- (C) संगीत-वाद्यक नाम
- (D) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया

८७. लिपि सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (87)

- (A) भोजनक स्वाद
- (B) वाक्यक अर्थहीनता
- (C) भाषाक दृश्य लेखन-रूप
- (D) ध्वनिक स्वाभाविक जन्म

८८. बोलचाल सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (88)

- (A) धातुक नियम
- (B) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप
- (C) केवल संग्रहालयक वस्तु
- (D) अर्थहीन चित्र

८९. मानक भाषा सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (89)

- (A) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप
- (B) केवल घरक गुप्त बोली
- (C) अनियमित ध्वनि-संग्रह
- (D) मौन परम्परा

९०. प्रयोग सम्बन्धी उचित विकल्प चुनू। (90)

- (A) केवल नियमक मृत सूची
- (B) अर्थहीन लकीर
- (C) अकस्मात् शोर
- (D) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल

९१. भाषा-पठनमे भाषा सँ कोन बात बुझाईत अछि (91)?

- (A) केवल पशुध्वनि
- (B) केवल मौन इशारा
- (C) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (D) केवल कागज पर लिखल अक्षर

९२. भाषा-पठनमे संकेत सँ कोन बात बुझाईत अछि (92)?

- (A) ध्वनि-विहीन शून्य
- (B) अर्थ पहुँचाबयवला रूप
- (C) अर्थ हटाबयवला बाधा
- (D) रंगक सजावट

९३. भाषा-पठनमे यादृच्छिकता सँ कोन बात बुझाईत अछि (93)?

- (A) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि
- (B) प्रत्येक शब्दक अर्थ जन्मसिद्ध होइत अछि
- (C) सभी भाषा एके शब्द राखैत अछि
- (D) अर्थ प्रकृतिक रंगसँ तय होइत अछि

९४. भाषा-पठनमे सामाजिकता सँ कोन बात बुझाईत अछि (94)?

- (A) भाषा केवल अकेला व्यक्ति बनबैत अछि
- (B) समाजसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) भाषा केवल पहाड़मे जन्मैत अछि
- (D) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि

९५. भाषा-पठनमे ध्वनि सँ कोन बात बुझाईत अछि (95)?

- (A) वस्त्रक रंग
- (B) केवल लेखनक कागज
- (C) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप
- (D) माटिक आकार

९६. भाषा-पठनमे व्याकरण सँ कोन बात बुझाईत अछि (96)?

- (A) कथाक पात्र
- (B) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था
- (C) केवल शब्दकोशक सूची
- (D) अर्थहीन ध्वनि

९७. भाषा-पठनमे वाक्य सँ कोन बात बुझाईत अछि (97)?

- (A) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह
- (B) अर्थहीन अक्षर
- (C) केवल एक रंग
- (D) निर्वाक संकेत

९८. भाषा-पठनमे मानव-विशेषता सँ कोन बात बुझाईत अछि (98)?

- (A) केवल कीट-पतंगक चाल
- (B) केवल मशीनक आवाज
- (C) केवल वर्षाक ध्वनि
- (D) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य

९९. भाषा-पठनमे सृजनशीलता सँ कोन बात बुझाईत अछि (99)?

- (A) नियमक अभाव
- (B) अर्थक स्थिर मृत्यु
- (C) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता
- (D) एके वाक्य बारम्बार दोहराएब

१००. भाषा-पठनमे परम्परा सँ कोन बात बुझाईत अछि (100)?

- (A) अकस्मात् मौन
- (B) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार
- (C) एक दिनक खेल
- (D) केवल सरकारी टिकट

१०१. दैवी सिद्धान्तक मूल भाव की अछि?

- (A) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत
- (B) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम
- (C) लिपि-मात्रक इतिहास
- (D) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा

१०२. ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्तक मूल भाव की अछि?

- (A) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (B) मौनहि भाषा बनल
- (C) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार
- (D) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल

१०३. भावोच्छ्वास सिद्धान्तक मूल भाव की अछि?

- (A) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (B) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार
- (C) कागज पर छापसँ भाषा जन्मल
- (D) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल

१०४. श्रम-सामूहिक सिद्धान्तक मूल भाव की अछि?

- (A) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (B) भाषा केवल स्वप्नमे बनल
- (C) भाषा केवल चुप्पी अछि
- (D) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि

१०५. समाज-सम्पर्क दृष्टिक मूल भाव की अछि?

- (A) भाषा केवल एकाकी साधना
- (B) अर्थ बिना ध्वनि
- (C) केवल लिपिक चित्र
- (D) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल

१०६. इशारा-सिद्धान्तक मूल भाव की अछि?

- (A) विदेशी शासनक आदेश
- (B) छन्द मात्र
- (C) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल
- (D) केवल पुस्तकक जन्म

१०७. बाल-भाषा दृष्टिक मूल भाव की अछि?

- (A) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (B) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि
- (C) बालक भाषा नहि सीखैत
- (D) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि

१०८. वैज्ञानिक सावधानीक मूल भाव की अछि?

- (A) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (B) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि
- (C) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि
- (D) भाषा अचानक पूर्ण बनल

१०९. अनुकरणक सीमाक मूल भाव की अछि?

- (A) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (B) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि
- (C) अनुकरण मात्र लिपि अछि
- (D) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत

११०. सहभागिताक मूल भाव की अछि?

- (A) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (B) भाषा केवल व्यक्तिगत आह
- (C) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि
- (D) भाषा समाज-विरोधी वस्तु

१११. बहुकारणीय दृष्टिक मूल भाव की अछि?

- (A) भाषा समाज बिना विकसित भेल
- (B) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ
- (C) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल
- (D) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य

११२. संप्रेषण-आवश्यकताक मूल भाव की अछि?

- (A) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल
- (B) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध
- (C) केवल चिह्नक रंग
- (D) भाषा बिना समाज

११३. जीववैज्ञानिक आधारक मूल भाव की अछि?

- (A) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) भाषा केवल पत्थरमे रहैत
- (C) ध्वनि बिना बोलचाल
- (D) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि

११४. परम्परा-निर्माणक मूल भाव की अछि?

- (A) कोनो मान्यता बनैत नहि
- (B) सभी शब्द निजी रहैत
- (C) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल
- (D) परम्परा भाषाकेँ रोकि दैत अछि

११५. प्रतीकात्मकताक मूल भाव की अछि?

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता
- (C) सामने वस्तु बिना बात असम्भव
- (D) केवल रंग बदलनाइ

११६. भाषोत्पत्ति-विचारमे देवी सिद्धान्त कोन बात कहैत अछि (16)?

- (A) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा
- (B) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत
- (C) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम
- (D) लिपि-मात्रक इतिहास

११७. भाषोत्पत्ति-विचारमे ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्त कोन बात कहैत अछि (17)?

- (A) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल
- (B) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (C) मौनहि भाषा बनल
- (D) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार

११८. भाषोत्पत्ति-विचारमे भावोच्छ्वास सिद्धान्त कोन बात कहैत अछि (18)?

- (A) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल
- (B) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (C) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार
- (D) कागज पर छापसँ भाषा जन्मल

११९. भाषोत्पत्ति-विचारमे श्रम-सामूहिक सिद्धान्त कोन बात कहैत अछि (19)?

- (A) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि
- (B) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (C) भाषा केवल स्वप्नमे बनल
- (D) भाषा केवल चुप्पी अछि

१२०. भाषोत्पत्ति-विचारमे समाज-सम्पर्क दृष्टि कोन बात कहैत अछि (20)?

- (A) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल
- (B) भाषा केवल एकाकी साधना
- (C) अर्थ बिना ध्वनि
- (D) केवल लिपिक चित्र

१२१. भाषोत्पत्ति-विचारमे इशारा-सिद्धान्त कोन बात कहैत अछि (21)?

- (A) केवल पुस्तकक जन्म
- (B) विदेशी शासनक आदेश
- (C) छन्द मात्र
- (D) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल

१२२. भाषोत्पत्ति-विचारमे बाल-भाषा दृष्टि कोन बात कहैत अछि (22)?

- (A) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि
- (B) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (C) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि
- (D) बालक भाषा नहि सीखैत

१२३. भाषोत्पत्ति-विचारमे वैज्ञानिक सावधानी कोन बात कहैत अछि (23)?

- (A) भाषा अचानक पूर्ण बनल
- (B) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (C) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि
- (D) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि

१२४. भाषोत्पत्ति-विचारमे अनुकरणक सीमा कोन बात कहैत अछि (24)?

- (A) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत
- (B) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (C) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि
- (D) अनुकरण मात्र लिपि अछि

१२५. भाषोत्पत्ति-विचारमे सहभागिता कोन बात कहैत अछि (25)?

- (A) भाषा समाज-विरोधी वस्तु
- (B) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (C) भाषा केवल व्यक्तिगत आह
- (D) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि

१२६. भाषोत्पत्ति-विचारमे बहुकारणीय दृष्टि कोन बात कहैत अछि (26)?

- (A) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य
- (B) भाषा समाज बिना विकसित भेल
- (C) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ
- (D) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल

१२७. भाषोत्पत्ति-विचारमे संप्रेषण-आवश्यकता कोन बात कहैत अछि (27)?

- (A) भाषा बिना समाज
- (B) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल
- (C) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध
- (D) केवल चिह्नक रंग

१२८. भाषोत्पत्ति-विचारमे जीववैज्ञानिक आधार कोन बात कहैत अछि (28)?

- (A) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि
- (B) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) भाषा केवल पत्थरमे रहैत
- (D) ध्वनि बिना बोलचाल

१२९. भाषोत्पत्ति-विचारमे परम्परा-निर्माण कोन बात कहैत अछि (29)?

- (A) परम्परा भाषाकेँ रोकि दैत अछि
- (B) कोनो मान्यता बनैत नहि
- (C) सभी शब्द निजी रहैत
- (D) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल

१३०. भाषोत्पत्ति-विचारमे प्रतीकात्मकता कोन बात कहैत अछि (30)?

- (A) केवल रंग बदलनाइ
- (B) अर्थहीन स्वर
- (C) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता
- (D) सामने वस्तु बिना बात असम्भव

१३१. दैवी सिद्धान्त सम्बन्धी सही कथन चुनू। (31)

- (A) लिपि-मात्रक इतिहास
- (B) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा
- (C) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत
- (D) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम

१३२. ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्त सम्बन्धी सही कथन चुनू। (32)

- (A) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार
- (B) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल
- (C) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (D) मौनहि भाषा बनल

१३३. भावोच्छ्वास सिद्धान्त सम्बन्धी सही कथन चुनू। (33)

- (A) कागज पर छापासँ भाषा जन्मल
- (B) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल
- (C) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (D) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार

१३४. श्रम-सामूहिक सिद्धान्त सम्बन्धी सही कथन चुनू। (34)

- (A) भाषा केवल चुप्पी अछि
- (B) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि
- (C) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (D) भाषा केवल स्वप्नमे बनल

१३५. समाज-सम्पर्क दृष्टि सम्बन्धी सही कथन चुनू। (35)

- (A) केवल लिपिक चित्र
- (B) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल
- (C) भाषा केवल एकाकी साधना
- (D) अर्थ बिना ध्वनि

१३६. इशारा-सिद्धान्त सम्बन्धी सही कथन चुनू। (36)

- (A) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल
- (B) केवल पुस्तकक जन्म
- (C) विदेशी शासनक आदेश
- (D) छन्द मात्र

१३७. बाल-भाषा दृष्टि सम्बन्धी सही कथन चुनू। (37)

- (A) बालक भाषा नहि सीखैत
- (B) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि
- (C) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (D) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि

१३८. वैज्ञानिक सावधानी सम्बन्धी सही कथन चुनू। (38)

- (A) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि
- (B) भाषा अचानक पूर्ण बनल
- (C) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (D) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि

१३९. अनुकरणक सीमा सम्बन्धी सही कथन चुनू। (39)

- (A) अनुकरण मात्र लिपि अछि
- (B) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत
- (C) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (D) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि

१४०. सहभागिता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (40)

- (A) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि
- (B) भाषा समाज-विरोधी वस्तु
- (C) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (D) भाषा केवल व्यक्तिगत आह

१४१. बहुकारणीय दृष्टि सम्बन्धी सही कथन चुनू। (41)

- (A) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल
- (B) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य
- (C) भाषा समाज बिना विकसित भेल
- (D) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ

१४२. संप्रेषण-आवश्यकता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (42)

- (A) केवल चिह्नक रंग
- (B) भाषा बिना समाज
- (C) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल
- (D) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध

१४३. जीववैज्ञानिक आधार सम्बन्धी सही कथन चुनू। (43)

- (A) ध्वनि बिना बोलचाल
- (B) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि
- (C) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (D) भाषा केवल पत्थरमे रहैत

१४४. परम्परा-निर्माण सम्बन्धी सही कथन चुनू। (44)

- (A) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल
- (B) परम्परा भाषाकें रोकि दैत अछि
- (C) कोनो मान्यता बनैत नहि
- (D) सभ शब्द निजी रहैत

१४५. प्रतीकात्मकता सम्बन्धी सही कथन चुनू! (45)

- (A) सामने वस्तु बिना बात असम्भव
- (B) केवल रंग बदलनाइ
- (C) अर्थहीन स्वर
- (D) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता

१४६. नीचाँकमे दैवी सिद्धान्तक सीमा/स्वरूप कोन अछि (46)?

- (A) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम
- (B) लिपि-मात्रक इतिहास
- (C) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा
- (D) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत

१४७. नीचाँकमे ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्तक सीमा/स्वरूप कोन अछि (47)?

- (A) मौनहि भाषा बनल
- (B) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार
- (C) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल
- (D) शब्दक जन्म गणितसँ भेल

१४८. नीचाँकमे भावोच्छ्वास सिद्धान्तक सीमा/स्वरूप कोन अछि (48)?

- (A) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार
- (B) कागज पर छापासँ भाषा जन्मल
- (C) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल
- (D) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल

१४९. नीचाँकमे श्रम-सामूहिक सिद्धान्तक सीमा/स्वरूप कोन अछि (49)?

- (A) भाषा केवल स्वप्नमे बनल
- (B) भाषा केवल चुप्पी अछि
- (C) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि
- (D) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल

१५०. नीचाँकमे समाज-सम्पर्क दृष्टिक सीमा/स्वरूप कोन अछि (50)?

- (A) अर्थ बिना ध्वनि
- (B) केवल लिपिक चित्र
- (C) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल
- (D) भाषा केवल एकाकी साधना

१५१. नीचाँकमे इशारा-सिद्धान्तक सीमा/स्वरूप कोन अछि (51)?

- (A) छन्द मात्र
- (B) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल
- (C) केवल पुस्तकक जन्म
- (D) विदेशी शासनक आदेश

१५२. नीचाँकमे बाल-भाषा दृष्टिक सीमा/स्वरूप कोन अछि (52)?

- (A) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि
- (B) बालक भाषा नहि सीखैत
- (C) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि
- (D) बालभाषा लिपि मात्र अछि

१५३. नीचाँकमे वैज्ञानिक सावधानीक सीमा/स्वरूप कोन अछि (53)?

- (A) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि
- (B) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि
- (C) भाषा अचानक पूर्ण बनल
- (D) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि

१५४. नीचाँकमे अनुकरणक सीमा/स्वरूप कोन अछि (54)?

- (A) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि
- (B) अनुकरण मात्र लिपि अछि
- (C) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत
- (D) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत

१५५. नीचाँकमे सहभागिताक सीमा/स्वरूप कोन अछि (55)?

- (A) भाषा केवल व्यक्तिगत आह
- (B) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि
- (C) भाषा समाज-विरोधी वस्तु
- (D) भाषा केवल पत्थरक आकार

१५६. नीचाँकमे बहुकारणीय दृष्टिक सीमा/स्वरूप कोन अछि (56)?

- (A) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ
- (B) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल
- (C) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य
- (D) भाषा समाज बिना विकसित भेल

१५७. नीचाँकमे संप्रेषण-आवश्यकताक सीमा/स्वरूप कोन अछि (57)?

- (A) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध
- (B) केवल चिह्नक रंग
- (C) भाषा बिना समाज
- (D) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल

१५८. नीचाँकमे जीववैज्ञानिक आधारक सीमा/स्वरूप कोन अछि (58)?

- (A) भाषा केवल पत्थरमे रहैत
- (B) ध्वनि बिना बोलचाल
- (C) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि
- (D) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि

१५९. नीचाँकमे परम्परा-निर्माणक सीमा/स्वरूप कोन अछि (59)?

- (A) सभी शब्द निजी रहैत
- (B) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल
- (C) परम्परा भाषाकेँ रोकि दैत अछि
- (D) कोनो मान्यता बनैत नहि

१६०. नीचाँकमे प्रतीकात्मकताक सीमा/स्वरूप कोन अछि (60)?

- (A) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता
- (B) सामने वस्तु बिना बात असम्भव
- (C) केवल रंग बदलनाइ
- (D) अर्थहीन स्वर

१६१. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे दैवी सिद्धान्त ककरा जोडैत अछि (61)?

- (A) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत
- (B) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम
- (C) लिपि-मात्रक इतिहास
- (D) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा

१६२. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्त ककरा जोडैत अछि (62)?

- (A) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (B) मौनहि भाषा बनल
- (C) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार
- (D) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल

१६३. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे भावोच्छ्वास सिद्धान्त ककरा जोडैत अछि (63)?

- (A) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (B) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार
- (C) कागज पर छापासँ भाषा जन्मल
- (D) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल

१६४. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे श्रम-सामूहिक सिद्धान्त ककरा जोडैत अछि (64)?

- (A) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (B) भाषा केवल स्वप्नमे बनल
- (C) भाषा केवल चुप्पी अछि
- (D) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि

१६५. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे समाज-सम्पर्क दृष्टि ककरा जोडैत अछि (65)?

- (A) भाषा केवल एकाकी साधना
- (B) अर्थ बिना ध्वनि
- (C) केवल लिपिक चित्र
- (D) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल

१६६. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे इशारा-सिद्धान्त ककरा जोडैत अछि (66)?

- (A) विदेशी शासनक आदेश
- (B) छन्द मात्र
- (C) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल
- (D) केवल पुस्तकक जन्म

१६७. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे बाल-भाषा दृष्टि ककरा जोडैत अछि (67)?

- (A) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (B) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि
- (C) बालक भाषा नहि सीखैत
- (D) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि

१६८. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे वैज्ञानिक सावधानी ककरा जोडैत अछि (68)?

- (A) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (B) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि
- (C) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि
- (D) भाषा अचानक पूर्ण बनल

१६९. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे अनुकरणक सीमा ककरा जोडैत अछि (69)?

- (A) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (B) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि
- (C) अनुकरण मात्र लिपि अछि
- (D) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत

१७०. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे सहभागिता ककरा जोडैत अछि (70)?

- (A) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (B) भाषा केवल व्यक्तिगत आह
- (C) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि
- (D) भाषा समाज-विरोधी वस्तु

१७१. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे बहुकारणीय दृष्टि ककरा जोडैत अछि (71)?

- (A) भाषा समाज बिना विकसित भेल
- (B) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ
- (C) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल
- (D) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य

१७२. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे संप्रेषण-आवश्यकता ककरा जोडैत अछि (72)?

- (A) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल
- (B) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध
- (C) केवल चिह्नक रंग
- (D) भाषा बिना समाज

१७३. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे जीववैज्ञानिक आधार ककरा जोडैत अछि (73)?

- (A) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (B) भाषा केवल पत्थरमे रहैत
- (C) ध्वनि बिना बोलचाल
- (D) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि

१७४. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे परम्परा-निर्माण ककरा जोडैत अछि (74)?

- (A) कोनो मान्यता बनैत नहि
- (B) सभी शब्द निजी रहैत
- (C) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल
- (D) परम्परा भाषाकें रोकि दैत अछि

१७५. भाषाक उद्भव बुझबाक प्रसंगमे प्रतीकात्मकता ककरा जोडैत अछि (75)?

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता
- (C) सामने वस्तु बिना बात असम्भव
- (D) केवल रंग बदलनाइ

१७६. दैवी सिद्धान्त पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (76)?

- (A) भाषाकें ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा
- (B) भाषाकें बाजारसँ जोड़यवला मत
- (C) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम
- (D) लिपि-मात्रक इतिहास

१७७. ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्त पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (77)?

- (A) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल
- (B) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (C) मौनहि भाषा बनल
- (D) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार

१७८. भावोच्छ्वास सिद्धान्त पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (78)?

- (A) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल
- (B) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (C) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार
- (D) कागज पर छापासँ भाषा जन्मल

१७९. श्रम-सामूहिक सिद्धान्त पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (79)?

- (A) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि
- (B) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (C) भाषा केवल स्वप्नमे बनल
- (D) भाषा केवल चुप्पी अछि

१८०. समाज-सम्पर्क दृष्टि पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (80)?

- (A) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल
- (B) भाषा केवल एकाकी साधना
- (C) अर्थ बिना ध्वनि
- (D) केवल लिपिक चित्र

१८१. इशारा-सिद्धान्त पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (81)?

- (A) केवल पुस्तकक जन्म
- (B) विदेशी शासनक आदेश
- (C) छन्द मात्र
- (D) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल

१८२. बाल-भाषा दृष्टि पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (82)?

- (A) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि
- (B) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (C) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि
- (D) बालक भाषा नहि सीखैत

१८३. वैज्ञानिक सावधानी पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (83)?

- (A) भाषा अचानक पूर्ण बनल
- (B) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (C) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि
- (D) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि

१८४. अनुकरणक सीमा पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (84)?

- (A) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत
- (B) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (C) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि
- (D) अनुकरण मात्र लिपि अछि

१८५. सहभागिता पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (85)?

- (A) भाषा समाज-विरोधी वस्तु
- (B) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (C) भाषा केवल व्यक्तिगत आह
- (D) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि

१८६. बहुकारणीय दृष्टि पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (86)?

- (A) लिपि पहिने आ भाषा बादमे अनिवार्य
- (B) भाषा समाज बिना विकसित भेल
- (C) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ
- (D) एक ध्वनिसँ सम्पूर्ण भाषा बनल

१८७. संप्रेषण-आवश्यकता पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (87)?

- (A) भाषा बिना समाज
- (B) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल
- (C) जरूरत भाषासँ असम्बद्ध
- (D) केवल चिह्नक रंग

१८८. जीववैज्ञानिक आधार पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (88)?

- (A) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि
- (B) मानव शरीरसँ भाषाक कोनो सम्बन्ध नहि
- (C) भाषा केवल पत्थरमे रहैत
- (D) ध्वनि बिना बोलचाल

१८९. परम्परा-निर्माण पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (89)?

- (A) परम्परा भाषाकेँ रोकि दैत अछि
- (B) कोनो मान्यता बनैत नहि
- (C) सभी शब्द निजी रहैत
- (D) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल

१९०. प्रतीकात्मकता पर आधारित प्रश्नक सही उत्तर कोन अछि (90)?

- (A) केवल रंग बदलनाइ
- (B) अर्थहीन स्वर
- (C) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता
- (D) सामने वस्तु बिना बात असम्भव

१९१. दैवी सिद्धान्तक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (91)?

- (A) लिपि-मात्रक इतिहास
- (B) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा
- (C) भाषाकेँ बाजारसँ जोड़यवला मत
- (D) केवल ध्वनि-परिवर्तनक नियम

१९२. ध्वनि-अनुकरण सिद्धान्तक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (92)?

- (A) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार
- (B) भाषा केवल राजाज्ञासँ बनल
- (C) शब्दक जन्म गणितसँ भेल
- (D) मौनहि भाषा बनल

१९३. भावोच्छ्वास सिद्धान्तक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (93)?

- (A) कागज पर छापासँ भाषा जन्मल
- (B) युद्धक हथियारसँ भाषा बनल
- (C) केवल वर्णमाला सँ भाषा शुरू भेल
- (D) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार

१९४. श्रम-सामूहिक सिद्धान्तक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (94)?

- (A) भाषा केवल चुप्पी अछि
- (B) भाषाक कोनो सामाजिक आधार नहि
- (C) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल
- (D) भाषा केवल स्वप्नमे बनल

१९५. समाज-सम्पर्क दृष्टिक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (95)?

- (A) केवल लिपिक चित्र
- (B) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल
- (C) भाषा केवल एकाकी साधना
- (D) अर्थ बिना ध्वनि

१९६. इशारा-सिद्धान्तक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (96)?

- (A) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल
- (B) केवल पुस्तकक जन्म
- (C) विदेशी शासनक आदेश
- (D) छन्द मात्र

१९७. बाल-भाषा दृष्टिक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (97)?

- (A) बालक भाषा नहि सीखैत
- (B) बालभाषा इतिहासक पूर्ण प्रमाण अछि
- (C) बालभाषा लिपि मात्र अछि
- (D) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि

१९८. वैज्ञानिक सावधानीक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (98)?

- (A) भाषाक उद्भवक तिथि पूर्ण ज्ञात अछि
- (B) भाषा अचानक पूर्ण बनल
- (C) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि
- (D) एक सिद्धान्त सभ बात सिद्ध करैत अछि

१९९. अनुकरणक सीमाक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (99)?

- (A) अनुकरण मात्र लिपि अछि
- (B) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत
- (C) अनुकरण सभ व्याकरण बुझा दैत
- (D) अनुकरणमे अर्थक जरूरत नहि

२००. सहभागिताक भाषावैज्ञानिक मूल्यांकनमे कोन बात उचित अछि (100)?

- (A) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि
- (B) भाषा समाज-विरोधी वस्तु
- (C) भाषा केवल पत्थरक आकार
- (D) भाषा केवल व्यक्तिगत आह

२०१. ध्वनि-परिवर्तनक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) चित्रक रंग बदलनाइ
- (B) केवल अर्थक अन्त
- (C) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ
- (D) राजनीतिक सीमाक नाप

२०२. रूप-परिवर्तनक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) नाटकक पात्र मात्र
- (B) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ
- (C) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ
- (D) माटिक रंग

२०३. वाक्य-परिवर्तनक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (B) भोजनक स्वाद
- (C) केवल धातु-पात्र
- (D) मौन संकेत

२०४. अर्थ-विस्तारक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (B) शब्दक ध्वनि मात्र
- (C) लेखनक रंग
- (D) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब

२०५. अर्थ-संकोचक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) उच्चारणक विराम
- (B) लिपि बदलनाइ मात्र
- (C) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब
- (D) अर्थ अनन्त फैलनाइ

२०६. अर्थ-परिवर्तनक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) वस्त्रक आकार
- (B) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव
- (C) ध्वनिक लम्बाई मात्र
- (D) सामाजिक मौन

२०७. सम्पर्क-प्रभावक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (B) भाषाक एकाकी रहनाइ
- (C) नियमक मृत्यु
- (D) सम्पर्कक अभाव

२०८. पीढ़ीगत बदलावक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) समय पूर्ण स्थिर
- (B) बोलचालक निषेध
- (C) लिपिक विनाश मात्र
- (D) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप

२०९. मानकीकरणक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) केवल मौखिक गलती
- (B) भाषा नष्ट करब
- (C) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति
- (D) सभी रूपक निषेध

२१०. तकनीकी प्रभावक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) व्याकरणक अभाव
- (B) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ
- (C) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र
- (D) प्रकृतिक ऋतु

२११. भाषिक उधारक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण
- (B) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ
- (C) केवल ध्वनि काटनाइ
- (D) अनर्थक मौन

२१२. लोकप्रयोगक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) नियम बिना अर्थ
- (B) संग्रहालयक चित्र
- (C) कानून मात्र
- (D) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि

२१३. समानता-प्रवृत्तिक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) लिपि फाड़ब
- (B) स्वर रोकब
- (C) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति
- (D) अर्थ मिटाबयक उपाय

२१४. सरलीकरणक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) चिह्नक रंग
- (B) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा
- (C) जटिलता बढेबाक नियम
- (D) अर्थक विनाश

२१५. प्रतिष्ठा-प्रभावक भाषावैज्ञानिक अर्थ की अछि?

- (A) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण
- (B) समाजसँ कटाव
- (C) शब्दक मृत्यु
- (D) ध्वनिहीनता

२१६. भाषाक परिवर्तनशीलतामे ध्वनि-परिवर्तन कोन रूप देखाबैत अछि (16)?

- (A) राजनीतिक सीमाक नाप
- (B) चित्रक रंग बदलनाइ
- (C) केवल अर्थक अन्त
- (D) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ

२१७. भाषाक परिवर्तनशीलतामे रूप-परिवर्तन कोन रूप देखाबैत अछि (17)?

- (A) माटिक रंग
- (B) नाटकक पात्र मात्र
- (C) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ

२१८. भाषाक परिवर्तनशीलतामे वाक्य-परिवर्तन कोन रूप देखाबैत अछि (18)?

- (A) मौन संकेत
- (B) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (C) भोजनक स्वाद
- (D) केवल धातु-पात्र

२१९. भाषाक परिवर्तनशीलतामे अर्थ-विस्तार कोन रूप देखाबैत अछि (19)?

- (A) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब
- (B) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (C) शब्दक ध्वनि मात्र
- (D) लेखनक रंग

२२०. भाषाक परिवर्तनशीलतामे अर्थ-संकोच कोन रूप देखाबैत अछि (20)?

- (A) अर्थ अनन्त फैलनाइ
- (B) उच्चारणक विराम
- (C) लिपि बदलनाइ मात्र
- (D) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब

२२१. भाषाक परिवर्तनशीलतामे अर्थ-परिवर्तन कोन रूप देखाबैत अछि (21)?

- (A) सामाजिक मौन
- (B) वस्त्रक आकार
- (C) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव
- (D) ध्वनिक लम्बाई मात्र

२२२. भाषाक परिवर्तनशीलतामे सम्पर्क-प्रभाव कोन रूप देखाबैत अछि (22)?

- (A) सम्पर्कक अभाव
- (B) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (C) भाषाक एकाकी रहनाइ
- (D) नियमक मृत्यु

२२३. भाषाक परिवर्तनशीलतामे पीढ़ीगत बदलाव कोन रूप देखाबैत अछि (23)?

- (A) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप
- (B) समय पूर्ण स्थिर
- (C) बोलचालक निषेध
- (D) लिपिक विनाश मात्र

२२४. भाषाक परिवर्तनशीलतामे मानकीकरण कोन रूप देखाबैत अछि (24)?

- (A) सभी रूपक निषेध
- (B) केवल मौखिक गलती
- (C) भाषा नष्ट करब
- (D) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति

२२५. भाषाक परिवर्तनशीलतामे तकनीकी प्रभाव कोन रूप देखाबैत अछि (25)?

- (A) प्रकृतिक ऋतु
- (B) व्याकरणक अभाव
- (C) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ
- (D) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र

२२६. भाषाक परिवर्तनशीलतामे भाषिक उधार कोन रूप देखाबैत अछि (26)?

- (A) अनर्थक मौन
- (B) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण
- (C) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ
- (D) केवल ध्वनि काटनाइ

२२७. भाषाक परिवर्तनशीलतामे लोकप्रयोग कोन रूप देखाबैत अछि (27)?

- (A) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि
- (B) नियम बिना अर्थ
- (C) संग्रहालयक चित्र
- (D) कानून मात्र

२२८. भाषाक परिवर्तनशीलतामे समानता-प्रवृत्ति कोन रूप देखाबैत अछि (28)?

- (A) अर्थ मिटाबयक उपाय
- (B) लिपि फाइब
- (C) स्वर रोकब
- (D) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति

२२९. भाषाक परिवर्तनशीलतामे सरलीकरण कोन रूप देखाबैत अछि (29)?

- (A) अर्थक विनाश
- (B) चिह्नक रंग
- (C) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा
- (D) जटिलता बढ़ेबाक नियम

२३०. भाषाक परिवर्तनशीलतामे प्रतिष्ठा-प्रभाव कोन रूप देखाबैत अछि (30)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण
- (C) समाजसँ कटाव
- (D) शब्दक मृत्यु

२३१. ध्वनि-परिवर्तनक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (31)?

- (A) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ
- (B) राजनीतिक सीमाक नाप
- (C) चित्रक रंग बदलनाइ
- (D) केवल अर्थक अन्त

२३२. रूप-परिवर्तनक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (32)?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ
- (B) माटिक रंग
- (C) नाटकक पात्र मात्र
- (D) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ

२३३. वाक्य-परिवर्तनक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (33)?

- (A) केवल धातु-पात्र
- (B) मौन संकेत
- (C) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (D) भोजनक स्वाद

२३४. अर्थ-विस्तारक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (34)?

- (A) लेखनक रंग
- (B) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब
- (C) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (D) शब्दक ध्वनि मात्र

२३५. अर्थ-संकोचक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (35)?

- (A) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब
- (B) अर्थ अनन्त फैलनाइ
- (C) उच्चारणक विराम
- (D) लिपि बदलनाइ मात्र

२३६. अर्थ-परिवर्तनक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (36)?

- (A) ध्वनिक लम्बाई मात्र
- (B) सामाजिक मौन
- (C) वस्त्रक आकार
- (D) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव

२३७. सम्पर्क-प्रभावक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (37)?

- (A) नियमक मृत्यु
- (B) सम्पर्कक अभाव
- (C) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (D) भाषाक एकाकी रहनाइ

२३८. पीढ़ीगत बदलावक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (38)?

- (A) लिपिक विनाश मात्र
- (B) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप
- (C) समय पूर्ण स्थिर
- (D) बोलचालक निषेध

२३९. मानकीकरणक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (39)?

- (A) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति
- (B) सभी रूपक निषेध
- (C) केवल मौखिक गलती
- (D) भाषा नष्ट करब

२४०. तकनीकी प्रभावक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (40)?

- (A) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र
- (B) प्रकृतिक ऋतु
- (C) व्याकरणक अभाव
- (D) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ

२४१. भाषिक उधारक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (41)?

- (A) केवल ध्वनि काटनाइ
- (B) अनर्थक मौन
- (C) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण
- (D) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ

२४२. लोकप्रयोगक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (42)?

- (A) कानून मात्र
- (B) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि
- (C) नियम बिना अर्थ
- (D) संग्रहालयक चित्र

२४३. समानता-प्रवृत्तिक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (43)?

- (A) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति
- (B) अर्थ मिटाबयक उपाय
- (C) लिपि फाइब
- (D) स्वर रोकब

२४४. सरलीकरणक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (44)?

- (A) जटिलता बढ़ेबाक नियम
- (B) अर्थक विनाश
- (C) चिह्नक रंग
- (D) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा

२४५. प्रतिष्ठा-प्रभावक सही उदाहरण-संबंधी विचार कोन अछि (45)?

- (A) शब्दक मृत्यु
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण
- (D) समाजसँ कटाव

२४६. नीचाँकमे ध्वनि-परिवर्तनक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (46)

- (A) केवल अर्थक अन्त
- (B) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ
- (C) राजनीतिक सीमाक नाप
- (D) चित्रक रंग बदलनाइ

२४७. नीचाँकमे रूप-परिवर्तनक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (47)

- (A) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ
- (B) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ
- (C) माटिक रंग
- (D) नाटकक पात्र मात्र

२४८. नीचाँकमे वाक्य-परिवर्तनक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (48)

- (A) भोजनक स्वाद
- (B) केवल धातु-पात्र
- (C) मौन संकेत
- (D) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव

२४९. नीचाँकमे अर्थ-विस्तारक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (49)

- (A) शब्दक ध्वनि मात्र
- (B) लेखनक रंग
- (C) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब
- (D) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब

२५०. नीचाँकमे अर्थ-संकोचक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (50)

- (A) लिपि बदलनाइ मात्र
- (B) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब
- (C) अर्थ अनन्त फैलनाइ
- (D) उच्चारणक विराम

२५१. नीचाँकमे अर्थ-परिवर्तनक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (51)

- (A) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव
- (B) ध्वनिक लम्बाई मात्र
- (C) सामाजिक मौन
- (D) वस्त्रक आकार

२५२. नीचाँकमे सम्पर्क-प्रभावक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (52)

- (A) भाषाक एकाकी रहनाइ
- (B) नियमक मृत्यु
- (C) सम्पर्कक अभाव
- (D) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव

२५३. नीचाँकमे पीढ़ीगत बदलावक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (53)

- (A) बोलचालक निषेध
- (B) लिपिक विनाश मात्र
- (C) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप
- (D) समय पूर्ण स्थिर

२५४. नीचाँकमे मानकीकरणक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (54)

- (A) भाषा नष्ट करब
- (B) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति
- (C) सभी रूपक निषेध
- (D) केवल मौखिक गलती

२५५. नीचाँकमे तकनीकी प्रभावक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (55)

- (A) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ
- (B) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र
- (C) प्रकृतिक ऋतु
- (D) व्याकरणक अभाव

२५६. नीचाँकमे भाषिक उधारक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (56)

- (A) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ
- (B) केवल ध्वनि काटनाइ
- (C) अनर्थक मौन
- (D) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण

२५७. नीचाँकमे लोकप्रयोगक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (57)

- (A) संग्रहालयक चित्र
- (B) कानून मात्र
- (C) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि
- (D) नियम बिना अर्थ

२५८. नीचाँकमे समानता-प्रवृत्तिक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (58)

- (A) स्वर रोकब
- (B) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति
- (C) अर्थ मिटाबयक उपाय
- (D) लिपि फाड़ब

२५९. नीचाँकमे सरलीकरणक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (59)

- (A) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा
- (B) जटिलता बढेबाक नियम
- (C) अर्थक विनाश
- (D) चिह्नक रंग

२६०. नीचाँकमे प्रतिष्ठा-प्रभावक उपयुक्त व्याख्या चुनू। (60)

- (A) समाजसँ कटाव
- (B) शब्दक मृत्यु
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण

२६१. समयक संग भाषामे ध्वनि-परिवर्तन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (61)?

- (A) चित्रक रंग बदलनाइ
- (B) केवल अर्थक अन्त
- (C) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ
- (D) राजनीतिक सीमाक नाप

२६२. समयक संग भाषामे रूप-परिवर्तन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (62)?

- (A) नाटकक पात्र मात्र
- (B) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ
- (C) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ
- (D) माटिक रंग

२६३. समयक संग भाषामे वाक्य-परिवर्तन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (63)?

- (A) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (B) भोजनक स्वाद
- (C) केवल धातु-पात्र
- (D) मौन संकेत

२६४. समयक संग भाषामे अर्थ-विस्तार किएक महत्त्वपूर्ण अछि (64)?

- (A) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (B) शब्दक ध्वनि मात्र
- (C) लेखनक रंग
- (D) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब

२६५. समयक संग भाषामे अर्थ-संकोच किएक महत्त्वपूर्ण अछि (65)?

- (A) उच्चारणक विराम
- (B) लिपि बदलनाइ मात्र
- (C) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब
- (D) अर्थ अनन्त फैलनाइ

२६६. समयक संग भाषामे अर्थ-परिवर्तन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (66)?

- (A) वस्त्रक आकार
- (B) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव
- (C) ध्वनिक लम्बाई मात्र
- (D) सामाजिक मौन

२६७. समयक संग भाषामे सम्पर्क-प्रभाव किएक महत्त्वपूर्ण अछि (67)?

- (A) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (B) भाषाक एकाकी रहनाइ
- (C) नियमक मृत्यु
- (D) सम्पर्कक अभाव

२६८. समयक संग भाषामे पीढ़ीगत बदलाव किएक महत्त्वपूर्ण अछि (68)?

- (A) समय पूर्ण स्थिर
- (B) बोलचालक निषेध
- (C) लिपिक विनाश मात्र
- (D) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप

२६९. समयक संग भाषामे मानकीकरण किएक महत्त्वपूर्ण अछि (69)?

- (A) केवल मौखिक गलती
- (B) भाषा नष्ट करब
- (C) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति
- (D) सभी रूपक निषेध

२७०. समयक संग भाषामे तकनीकी प्रभाव किएक महत्त्वपूर्ण अछि (70)?

- (A) व्याकरणक अभाव
- (B) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ
- (C) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र
- (D) प्रकृतिक ऋतु

२७१. समयक संग भाषामे भाषिक उधार किएक महत्त्वपूर्ण अछि (71)?

- (A) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण
- (B) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ
- (C) केवल ध्वनि काटनाइ
- (D) अनर्थक मौन

२७२. समयक संग भाषामे लोकप्रयोग किएक महत्त्वपूर्ण अछि (72)?

- (A) नियम बिना अर्थ
- (B) संग्रहालयक चित्र
- (C) कानून मात्र
- (D) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि

२७३. समयक संग भाषामे समानता-प्रवृत्ति किएक महत्त्वपूर्ण अछि (73)?

- (A) लिपि फाइब
- (B) स्वर रोकब
- (C) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति
- (D) अर्थ मिटाबयक उपाय

२७४. समयक संग भाषामे सरलीकरण किएक महत्त्वपूर्ण अछि (74)?

- (A) चिह्नक रंग
- (B) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा
- (C) जटिलता बढ़ेबाक नियम
- (D) अर्थक विनाश

२७५. समयक संग भाषामे प्रतिष्ठा-प्रभाव किएक महत्त्वपूर्ण अछि (75)?

- (A) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण
- (B) समाजसँ कटाव
- (C) शब्दक मृत्यु
- (D) ध्वनिहीनता

२७६. ध्वनि-परिवर्तनक कारण भाषा केना बदलैत अछि (76)?

- (A) राजनीतिक सीमाक नाप
- (B) चित्रक रंग बदलनाइ
- (C) केवल अर्थक अन्त
- (D) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ

२७७. रूप-परिवर्तनक कारण भाषा केना बदलैत अछि (77)?

- (A) माटिक रंग
- (B) नाटकक पात्र मात्र
- (C) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ
- (D) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ

२७८. वाक्य-परिवर्तनक कारण भाषा केना बदलैत अछि (78)?

- (A) मौन संकेत
- (B) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (C) भोजनक स्वाद
- (D) केवल धातु-पात्र

२७९. अर्थ-विस्तारक कारण भाषा केना बदलैत अछि (79)?

- (A) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब
- (B) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (C) शब्दक ध्वनि मात्र
- (D) लेखनक रंग

२८०. अर्थ-संकोचक कारण भाषा केना बदलैत अछि (80)?

- (A) अर्थ अनन्त फैलनाइ
- (B) उच्चारणक विराम
- (C) लिपि बदलनाइ मात्र
- (D) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब

२८१. अर्थ-परिवर्तनक कारण भाषा केना बदलैत अछि (81)?

- (A) सामाजिक मौन
- (B) वस्त्रक आकार
- (C) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव
- (D) ध्वनिक लम्बाई मात्र

२८२. सम्पर्क-प्रभावक कारण भाषा केना बदलैत अछि (82)?

- (A) सम्पर्कक अभाव
- (B) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (C) भाषाक एकाकी रहनाइ
- (D) नियमक मृत्यु

२८३. पीढ़ीगत बदलावक कारण भाषा केना बदलैत अछि (83)?

- (A) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप
- (B) समय पूर्ण स्थिर
- (C) बोलचालक निषेध
- (D) लिपिक विनाश मात्र

२८४. मानकीकरणक कारण भाषा केना बदलैत अछि (84)?

- (A) सभी रूपक निषेध
- (B) केवल मौखिक गलती
- (C) भाषा नष्ट करब
- (D) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति

२८५. तकनीकी प्रभावक कारण भाषा केना बदलैत अछि (85)?

- (A) प्रकृतिक ऋतु
- (B) व्याकरणक अभाव
- (C) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ
- (D) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र

२८६. भाषिक उधारक कारण भाषा केना बदलैत अछि (86)?

- (A) अनर्थक मौन
- (B) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण
- (C) अपन शब्दक जन्म रोकनाइ
- (D) केवल ध्वनि काटनाइ

२८७. लोकप्रयोगक कारण भाषा केना बदलैत अछि (87)?

- (A) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि
- (B) नियम बिना अर्थ
- (C) संग्रहालयक चित्र
- (D) कानून मात्र

२८८. समानता-प्रवृत्तिक कारण भाषा केना बदलैत अछि (88)?

- (A) अर्थ मिटाबयक उपाय
- (B) लिपि फाड़ब
- (C) स्वर रोकब
- (D) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति

२८९. सरलीकरणक कारण भाषा केना बदलैत अछि (89)?

- (A) अर्थक विनाश
- (B) चिह्नक रंग
- (C) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा
- (D) जटिलता बढ़ेबाक नियम

२९०. प्रतिष्ठा-प्रभावक कारण भाषा केना बदलैत अछि (90)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण
- (C) समाजसँ कटाव
- (D) शब्दक मृत्यु

२९१. ध्वनि-परिवर्तन पर सही कथन कोन अछि (91)?

- (A) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ
- (B) राजनीतिक सीमाक नाप
- (C) चित्रक रंग बदलनाइ
- (D) केवल अर्थक अन्त

२९२. रूप-परिवर्तन पर सही कथन कोन अछि (92)?

- (A) केवल पृष्ठ-संख्या बदलनाइ
- (B) माटिक रंग
- (C) नाटकक पात्र मात्र
- (D) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ

२९३. वाक्य-परिवर्तन पर सही कथन कोन अछि (93)?

- (A) केवल धातु-पात्र
- (B) मौन संकेत
- (C) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव
- (D) भोजनक स्वाद

२९४. अर्थ-विस्तार पर सही कथन कोन अछि (94)?

- (A) लेखनक रंग
- (B) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब
- (C) अर्थ पूर्ण समाप्त होएब
- (D) शब्दक ध्वनि मात्र

२९५. अर्थ-संकोच पर सही कथन कोन अछि (95)?

- (A) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब
- (B) अर्थ अनन्त फैलनाइ
- (C) उच्चारणक विराम
- (D) लिपि बदलनाइ मात्र

२९६. अर्थ-परिवर्तन पर सही कथन कोन अछि (96)?

- (A) ध्वनिक लम्बाई मात्र
- (B) सामाजिक मौन
- (C) वस्त्रक आकार
- (D) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव

२९७. सम्पर्क-प्रभाव पर सही कथन कोन अछि (97)?

- (A) नियमक मृत्यु
- (B) सम्पर्कक अभाव
- (C) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव
- (D) भाषाक एकाकी रहनाइ

२९८. पीढ़ीगत बदलाव पर सही कथन कोन अछि (98)?

- (A) लिपिक विनाश मात्र
- (B) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप
- (C) समय पूर्ण स्थिर
- (D) बोलचालक निषेध

२९९. मानकीकरण पर सही कथन कोन अछि (99)?

- (A) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति
- (B) सभी रूपक निषेध
- (C) केवल मौखिक गलती
- (D) भाषा नष्ट करब

३००. तकनीकी प्रभाव पर सही कथन कोन अछि (100)?

- (A) पुरान पाण्डुलिपिक बन्द होनाइ मात्र
- (B) प्रकृतिक ऋतु
- (C) व्याकरणक अभाव
- (D) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ

३०१. मैथिलीक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (B) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा
- (C) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा
- (D) केवल चित्रलिपि

३०२. संस्कृतक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (B) केवल आधुनिक बोली
- (C) मौन संकेत
- (D) दक्षिणी चित्रकला

३०३. प्राकृतक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) धातुक औजार
- (B) केवल विदेशी लिपि
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप

३०४. अपभ्रंशक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) लिपि-विहीन शून्य
- (B) चित्रक शीर्षक
- (C) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप
- (D) केवल आधुनिक समाचारपत्र

३०५. अवहट्टक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) कृषि-औजार
- (B) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप
- (C) केवल बाल-खेल
- (D) दक्षिणी संगीत

३०६. मिथिलाक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (B) समुद्री द्वीप
- (C) केवल पर्वतीय लिपि
- (D) विदेशी नगर मात्र

३०७. ज्योतिरीश्वरक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) आधुनिक वैज्ञानिक
- (B) काष्ठ-शिल्पी मात्र
- (C) केवल संगीतकार
- (D) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम

३०८. तिरहुताक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) नदीक नाम मात्र
- (B) कृषि-बीज
- (C) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि
- (D) केवल गाना

३०९. लोकभाषाक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) अर्थ-विहीन रेखा
- (B) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा
- (C) केवल दरबारक मौन
- (D) मूर्ति-कला

३१०. पूर्वी आर्य धरातलक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (B) दक्षिणी द्रविड़ शाखा
- (C) चित्र-विहीन चिह्न
- (D) केवल यूरोपीय बोली

३११. पाण्डुलिपि परम्पराक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) केवल मौखिक खेल
- (B) माटिक बर्तन
- (C) नवीन विज्ञापन
- (D) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन

३१२. विद्वत् परम्पराक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) धातु व्यवसाय
- (B) विदेशी सेना
- (C) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार
- (D) केवल खेलक मैदान

३१३. क्षेत्रीय धरातलक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) दूरस्थ मरुभूमि मात्र
- (B) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार
- (C) समुद्री द्वीप-समूह
- (D) पर्वतीय मौन

३१४. लोकगीतक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत
- (B) केवल राजपत्र
- (C) लिपि-रहित शून्य
- (D) विदेशी मानचित्र

३१५. प्राचीन गद्यक मैथिलीक उद्भवसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) केवल आधुनिक विज्ञापन
- (B) मौन-अभिनय
- (C) कृषि-सूची
- (D) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्वपूर्ण पक्ष

३१६. मैथिली उद्भव-चर्चामे मैथिलीक सही स्थान कोन अछि (16)?

- (A) केवल चित्रलिपि
- (B) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (C) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा
- (D) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा

३१७. मैथिली उद्भव-चर्चामे संस्कृतक सही स्थान कोन अछि (17)?

- (A) दक्षिणी चित्रकला
- (B) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (C) केवल आधुनिक बोली
- (D) मौन संकेत

३१८. मैथिली उद्भव-चर्चामे प्राकृतक सही स्थान कोन अछि (18)?

- (A) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप
- (B) धातुक औजार
- (C) केवल विदेशी लिपि
- (D) अर्थहीन ध्वनि

३१९. मैथिली उद्भव-चर्चामे अपभ्रंशक सही स्थान कोन अछि (19)?

- (A) केवल आधुनिक समाचारपत्र
- (B) लिपि-विहीन शून्य
- (C) चित्रक शीर्षक
- (D) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप

३२०. मैथिली उद्भव-चर्चामे अवहट्टक सही स्थान कोन अछि (20)?

- (A) दक्षिणी संगीत
- (B) कृषि-औजार
- (C) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप
- (D) केवल बाल-खेल

३२१. मैथिली उद्भव-चर्चामे मिथिलाक सही स्थान कोन अछि (21)?

- (A) विदेशी नगर मात्र
- (B) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (C) समुद्री द्वीप
- (D) केवल पर्वतीय लिपि

३२२. मैथिली उद्भव-चर्चामे ज्योतिरीश्वरक सही स्थान कोन अछि (22)?

- (A) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम
- (B) आधुनिक वैज्ञानिक
- (C) काष्ठ-शिल्पी मात्र
- (D) केवल संगीतकार

३२३. मैथिली उद्भव-चर्चामे तिरहुताक सही स्थान कोन अछि (23)?

- (A) केवल गाना
- (B) नदीक नाम मात्र
- (C) कृषि-बीज
- (D) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि

३२४. मैथिली उद्भव-चर्चामे लोकभाषाक सही स्थान कोन अछि (24)?

- (A) मूर्ति-कला
- (B) अर्थ-विहीन रेखा
- (C) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा
- (D) केवल दरबारक मौन

३२५. मैथिली उद्भव-चर्चामे पूर्वी आर्य धरातलक सही स्थान कोन अछि (25)?

- (A) केवल यूरोपीय बोली
- (B) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (C) दक्षिणी द्रविड़ शाखा
- (D) चित्र-विहीन चिह्न

३२६. मैथिली उद्भव-चर्चामे पाण्डुलिपि परम्पराक सही स्थान कोन अछि (26)?

- (A) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन
- (B) केवल मौखिक खेल
- (C) माटिक बर्तन
- (D) नवीन विज्ञापन

३२७. मैथिली उद्भव-चर्चामे विद्वत् परम्पराक सही स्थान कोन अछि (27)?

- (A) केवल खेलक मैदान
- (B) धातु व्यवसाय
- (C) विदेशी सेना
- (D) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार

३२८. मैथिली उद्भव-चर्चामे क्षेत्रीय धरातलक सही स्थान कोन अछि (28)?

- (A) पर्वतीय मौन
- (B) दूरस्थ मरुभूमि मात्र
- (C) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार
- (D) समुद्री द्वीप-समूह

३२९. मैथिली उद्भव-चर्चामे लोकगीतक सही स्थान कोन अछि (29)?

- (A) विदेशी मानचित्र
- (B) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत
- (C) केवल राजपत्र
- (D) लिपि-रहित शून्य

३३०. मैथिली उद्भव-चर्चामे प्राचीन गद्यक सही स्थान कोन अछि (30)?

- (A) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष
- (B) केवल आधुनिक विज्ञापन
- (C) मौन-अभिनय
- (D) कृषि-सूची

३३१. मैथिली सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (31)

- (A) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा
- (B) केवल चित्रलिपि
- (C) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (D) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा

३३२. संस्कृत सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (32)

- (A) मौन संकेत
- (B) दक्षिणी चित्रकला
- (C) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (D) केवल आधुनिक बोली

३३३. प्राकृत सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (33)

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप
- (C) धातुक औजार
- (D) केवल विदेशी लिपि

३३४. अपभ्रंश सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (34)

- (A) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप
- (B) केवल आधुनिक समाचारपत्र
- (C) लिपि-विहीन शून्य
- (D) चित्रक शीर्षक

३३५. अवहट्ठ सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (35)

- (A) केवल बाल-खेल
- (B) दक्षिणी संगीत
- (C) कृषि-औजार
- (D) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप

३३६. मिथिला सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (36)

- (A) केवल पर्वतीय लिपि
- (B) विदेशी नगर मात्र
- (C) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (D) समुद्री द्वीप

३३७. ज्योतिरीश्वर सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (37)

- (A) केवल संगीतकार
- (B) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम
- (C) आधुनिक वैज्ञानिक
- (D) काष्ठ-शिल्पी मात्र

३३८. तिरहुता सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (38)

- (A) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि
- (B) केवल गाना
- (C) नदीक नाम मात्र
- (D) कृषि-बीज

३३९. लोकभाषा सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (39)

- (A) केवल दरबारक मौन
- (B) मूर्ति-कला
- (C) अर्थ-विहीन रेखा
- (D) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा

३४०. पूर्वी आर्य धरातल सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (40)

- (A) चित्र-विहीन चिह्न
- (B) केवल यूरोपीय बोली
- (C) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (D) दक्षिणी द्रविड़ शाखा

३४१. पाण्डुलिपि परम्परा सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (41)

- (A) नवीन विज्ञापन
- (B) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन
- (C) केवल मौखिक खेल
- (D) माटिक बर्तन

३४२. विद्वत् परम्परा सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (42)

- (A) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार
- (B) केवल खेलक मैदान
- (C) धातु व्यवसाय
- (D) विदेशी सेना

३४३. क्षेत्रीय धरातल सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (43)

- (A) समुद्री द्वीप-समूह
- (B) पर्वतीय मौन
- (C) दूरस्थ मरुभूमि मात्र
- (D) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार

३४४. लोकगीत सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (44)

- (A) लिपि-रहित शून्य
- (B) विदेशी मानचित्र
- (C) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत
- (D) केवल राजपत्र

३४५. प्राचीन गद्य सम्बन्धी उपयुक्त कथन चुनू। (45)

- (A) कृषि-सूची
- (B) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष
- (C) केवल आधुनिक विज्ञापन
- (D) मौन-अभिनय

३४६. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल मैथिली किएक महत्त्वपूर्ण अछि (46)?

- (A) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा
- (B) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा
- (C) केवल चित्रलिपि
- (D) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र

३४७. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल संस्कृत किएक महत्त्वपूर्ण अछि (47)?

- (A) केवल आधुनिक बोली
- (B) मौन संकेत
- (C) दक्षिणी चित्रकला
- (D) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल

३४८. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल प्राकृत किएक महत्त्वपूर्ण अछि (48)?

- (A) केवल विदेशी लिपि
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप
- (D) धातुक औजार

३४९. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल अपभ्रंश किएक महत्त्वपूर्ण अछि (49)?

- (A) चित्रक शीर्षक
- (B) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप
- (C) केवल आधुनिक समाचारपत्र
- (D) लिपि-विहीन शून्य

३५०. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल अवहट्ट किएक महत्त्वपूर्ण अछि (50)?

- (A) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप
- (B) केवल बाल-खेल
- (C) दक्षिणी संगीत
- (D) कृषि-औजार

३५१. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल मिथिला किएक महत्त्वपूर्ण अछि (51)?

- (A) समुद्री द्वीप
- (B) केवल पर्वतीय लिपि
- (C) विदेशी नगर मात्र
- (D) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार

३५२. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल ज्योतिरीश्वर किएक महत्त्वपूर्ण अछि (52)?

- (A) काष्ठ-शिल्पी मात्र
- (B) केवल संगीतकार
- (C) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम
- (D) आधुनिक वैज्ञानिक

३५३. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल तिरहुता किएक महत्त्वपूर्ण अछि (53)?

- (A) कृषि-बीज
- (B) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि
- (C) केवल गाना
- (D) नदीक नाम मात्र

३५४. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल लोकभाषा किएक महत्त्वपूर्ण अछि (54)?

- (A) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा
- (B) केवल दरबारक मौन
- (C) मूर्ति-कला
- (D) अर्थ-विहीन रेखा

३५५. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल पूर्वी आर्य धरातल किएक महत्त्वपूर्ण अछि (55)?

- (A) दक्षिणी द्रविड़ शाखा
- (B) चित्र-विहीन चिह्न
- (C) केवल यूरोपीय बोली
- (D) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र

३५६. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल पाण्डुलिपि परम्परा किएक महत्त्वपूर्ण अछि (56)?

- (A) माटिक बर्तन
- (B) नवीन विज्ञापन
- (C) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन
- (D) केवल मौखिक खेल

३५७. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल विद्वत् परम्परा किएक महत्त्वपूर्ण अछि (57)?

- (A) विदेशी सेना
- (B) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार
- (C) केवल खेलक मैदान
- (D) धातु व्यवसाय

३५८. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल क्षेत्रीय धरातल किएक महत्त्वपूर्ण अछि (58)?

- (A) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार
- (B) समुद्री द्वीप-समूह
- (C) पर्वतीय मौन
- (D) दूरस्थ मरुभूमि मात्र

३५९. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल लोकगीत किएक महत्त्वपूर्ण अछि (59)?

- (A) केवल राजपत्र
- (B) लिपि-रहित शून्य
- (C) विदेशी मानचित्र
- (D) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत

३६०. मैथिली भाषा-विकास बुझबाक लेल प्राचीन गद्य किएक महत्त्वपूर्ण अछि (60)?

- (A) मौन-अभिनय
- (B) कृषि-सूची
- (C) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष
- (D) केवल आधुनिक विज्ञापन

३६१. मैथिलीक भाषिक संकेत की अछि (61)?

- (A) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (B) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा
- (C) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा
- (D) केवल चित्रलिपि

३६२. संस्कृतक भाषिक संकेत की अछि (62)?

- (A) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (B) केवल आधुनिक बोली
- (C) मौन संकेत
- (D) दक्षिणी चित्रकला

३६३. प्राकृतक भाषिक संकेत की अछि (63)?

- (A) धातुक औजार
- (B) केवल विदेशी लिपि
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप

३६४. अपभ्रंशक भाषिक संकेत की अछि (64)?

- (A) लिपि-विहीन शून्य
- (B) चित्रक शीर्षक
- (C) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप
- (D) केवल आधुनिक समाचारपत्र

३६५. अवहट्टक भाषिक संकेत की अछि (65)?

- (A) कृषि-औजार
- (B) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप
- (C) केवल बाल-खेल
- (D) दक्षिणी संगीत

३६६. मिथिलाक भाषिक संकेत की अछि (66)?

- (A) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (B) समुद्री द्वीप
- (C) केवल पर्वतीय लिपि
- (D) विदेशी नगर मात्र

३६७. ज्योतिरीश्वरक भाषिक संकेत की अछि (67)?

- (A) आधुनिक वैज्ञानिक
- (B) काष्ठ-शिल्पी मात्र
- (C) केवल संगीतकार
- (D) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्वपूर्ण नाम

३६८. तिरहुताक भाषिक संकेत की अछि (68)?

- (A) नदीक नाम मात्र
- (B) कृषि-बीज
- (C) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि
- (D) केवल गाना

३६९. लोकभाषाक भाषिक संकेत की अछि (69)?

- (A) अर्थ-विहीन रेखा
- (B) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा
- (C) केवल दरबारक मौन
- (D) मूर्ति-कला

३७०. पूर्वी आर्य धरातलक भाषिक संकेत की अछि (70)?

- (A) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (B) दक्षिणी द्रविड़ शाखा
- (C) चित्र-विहीन चिह्न
- (D) केवल यूरोपीय बोली

३७१. पाण्डुलिपि परम्पराक भाषिक संकेत की अछि (71)?

- (A) केवल मौखिक खेल
- (B) माटिक बर्तन
- (C) नवीन विज्ञापन
- (D) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन

३७२. विद्वत् परम्पराक भाषिक संकेत की अछि (72)?

- (A) धातु व्यवसाय
- (B) विदेशी सेना
- (C) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार
- (D) केवल खेलक मैदान

३७३. क्षेत्रीय धरातलक भाषिक संकेत की अछि (73)?

- (A) दूरस्थ मरुभूमि मात्र
- (B) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार
- (C) समुद्री द्वीप-समूह
- (D) पर्वतीय मौन

३७४. लोकगीतक भाषिक संकेत की अछि (74)?

- (A) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत
- (B) केवल राजपत्र
- (C) लिपि-रहित शून्य
- (D) विदेशी मानचित्र

३७५. प्राचीन गद्यक भाषिक संकेत की अछि (75)?

- (A) केवल आधुनिक विज्ञापन
- (B) मौन-अभिनय
- (C) कृषि-सूची
- (D) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष

३७६. नीचाँकमे मैथिली पर सही बात कोन अछि (76)?

- (A) केवल चित्रलिपि
- (B) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (C) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा
- (D) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा

३७७. नीचाँकमे संस्कृत पर सही बात कोन अछि (77)?

- (A) दक्षिणी चित्रकला
- (B) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (C) केवल आधुनिक बोली
- (D) मौन संकेत

३७८. नीचाँकमे प्राकृत पर सही बात कोन अछि (78)?

- (A) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप
- (B) धातुक औजार
- (C) केवल विदेशी लिपि
- (D) अर्थहीन ध्वनि

३७९. नीचाँकमे अपभ्रंश पर सही बात कोन अछि (79)?

- (A) केवल आधुनिक समाचारपत्र
- (B) लिपि-विहीन शून्य
- (C) चित्रक शीर्षक
- (D) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप

३८०. नीचाँकमे अवहट्ट पर सही बात कोन अछि (80)?

- (A) दक्षिणी संगीत
- (B) कृषि-औजार
- (C) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप
- (D) केवल बाल-खेल

३८१. नीचाँकमे मिथिला पर सही बात कोन अछि (81)?

- (A) विदेशी नगर मात्र
- (B) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (C) समुद्री द्वीप
- (D) केवल पर्वतीय लिपि

३८२. नीचाँकमे ज्योतिरीश्वर पर सही बात कोन अछि (82)?

- (A) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम
- (B) आधुनिक वैज्ञानिक
- (C) काष्ठ-शिल्पी मात्र
- (D) केवल संगीतकार

३८३. नीचाँकमे तिरहुता पर सही बात कोन अछि (83)?

- (A) केवल गाना
- (B) नदीक नाम मात्र
- (C) कृषि-बीज
- (D) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि

३८४. नीचाँकमे लोकभाषा पर सही बात कोन अछि (84)?

- (A) मूर्ति-कला
- (B) अर्थ-विहीन रेखा
- (C) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा
- (D) केवल दरबारक मौन

३८५. नीचाँकमे पूर्वी आर्य धरातल पर सही बात कोन अछि (85)?

- (A) केवल यूरोपीय बोली
- (B) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (C) दक्षिणी द्रविड़ शाखा
- (D) चित्र-विहीन चिह्न

३८६. नीचाँकमे पाण्डुलिपि परम्परा पर सही बात कोन अछि (86)?

- (A) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन
- (B) केवल मौखिक खेल
- (C) माटिक बर्तन
- (D) नवीन विज्ञापन

३८७. नीचाँकमे विद्वत् परम्परा पर सही बात कोन अछि (87)?

- (A) केवल खेलक मैदान
- (B) धातु व्यवसाय
- (C) विदेशी सेना
- (D) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार

३८८. नीचाँकमे क्षेत्रीय धरातल पर सही बात कोन अछि (88)?

- (A) पर्वतीय मौन
- (B) दूरस्थ मरुभूमि मात्र
- (C) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार
- (D) समुद्री द्वीप-समूह

३८९. नीचाँकमे लोकगीत पर सही बात कोन अछि (89)?

- (A) विदेशी मानचित्र
- (B) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत
- (C) केवल राजपत्र
- (D) लिपि-रहित शून्य

३९०. नीचाँकमे प्राचीन गद्य पर सही बात कोन अछि (90)?

- (A) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष
- (B) केवल आधुनिक विज्ञापन
- (C) मौन-अभिनय
- (D) कृषि-सूची

३९१. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे मैथिली कोन कड़ी दैत अछि (91)?

- (A) द्रविड़ परिवारक दक्षिणी भाषा
- (B) केवल चित्रलिपि
- (C) यूरोपक प्राचीन बोली मात्र
- (D) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा

३९२. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे संस्कृत कोन कड़ी दैत अछि (92)?

- (A) मौन संकेत
- (B) दक्षिणी चित्रकला
- (C) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल
- (D) केवल आधुनिक बोली

३९३. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे प्राकृत कोन कड़ी दैत अछि (93)?

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप
- (C) धातुक औजार
- (D) केवल विदेशी लिपि

३९४. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे अपभ्रंश कोन कड़ी दैत अछि (94)?

- (A) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप
- (B) केवल आधुनिक समाचारपत्र
- (C) लिपि-विहीन शून्य
- (D) चित्रक शीर्षक

३९५. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे अवहट्ट कोन कड़ी दैत अछि (95)?

- (A) केवल बाल-खेल
- (B) दक्षिणी संगीत
- (C) कृषि-औजार
- (D) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप

३९६. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे मिथिला कोन कड़ी दैत अछि (96)?

- (A) केवल पर्वतीय लिपि
- (B) विदेशी नगर मात्र
- (C) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार
- (D) समुद्री द्वीप

३९७. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे ज्योतिरीश्वर कोन कड़ी दैत अछि (97)?

- (A) केवल संगीतकार
- (B) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम
- (C) आधुनिक वैज्ञानिक
- (D) काष्ठ-शिल्पी मात्र

३९८. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे तिरहुता कोन कड़ी दैत अछि (98)?

- (A) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि
- (B) केवल गाना
- (C) नदीक नाम मात्र
- (D) कृषि-बीज

३९९. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे लोकभाषा कोन कड़ी दैत अछि (99)?

- (A) केवल दरबारक मौन
- (B) मूर्ति-कला
- (C) अर्थ-विहीन रेखा
- (D) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा

४००. मैथिलीक आरम्भिक धरातलमे पूर्वी आर्य धरातल कोन कड़ी दैत अछि (100)?

- (A) चित्र-विहीन चिह्न
- (B) केवल यूरोपीय बोली
- (C) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र
- (D) दक्षिणी द्रविड़ शाखा

४०१. प्रारम्भिक कालक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (B) डिजिटल युग मात्र
- (C) पूर्ण मौनकाल
- (D) केवल विदेशी शासन

४०२. मध्यकालक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) केवल छपाईक युग
- (B) संगणकक आरम्भ
- (C) ध्वनिहीन काल
- (D) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय

४०३. आधुनिक कालक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) प्राकृतक आरम्भ
- (B) लिपि-अभाव
- (C) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल
- (D) केवल वैदिक यज्ञकाल

४०४. विद्यापतिक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) कृषि वैज्ञानिक
- (B) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत
- (C) केवल आधुनिक पत्रकार
- (D) संगीतवादक मात्र

४०५. कीर्तनिया नाटकक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (B) आधुनिक समाचार
- (C) कानूनक पुस्तक
- (D) व्याकरणक सूची मात्र

४०६. नेपालक मैथिली नाटकक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) समुद्री यात्रा
- (B) दक्षिणी लिपि-नियम
- (C) केवल गद्य समाचार
- (D) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा

४०७. छपाईक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) अर्थक मिटान
- (B) ध्वनिरहितता
- (C) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन
- (D) केवल मौन-साधना

४०८. पत्र-पत्रिकाक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) मूर्ति-मात्र
- (B) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच
- (C) केवल खेतक औजार
- (D) अर्थहीन गीत

४०९. संवैधानिक मान्यताक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि
- (B) मध्यकालीन गीत
- (C) पशुध्वनि
- (D) शिल्पक आकार

४१०. मानकीकरणक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) भाषा-विनाश
- (B) केवल निजी चिट्ठी
- (C) अर्थहीनता
- (D) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता

४११. रेडियो आ मंचक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) धातु-विज्ञान
- (B) मौन-संग्रह
- (C) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम
- (D) लिपि-विरोध

४१२. डिजिटल युगक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) अर्थ-विहीन काल
- (B) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार
- (C) प्राचीन मौनकाल
- (D) कृषि-युग मात्र

४१३. शिक्षा-प्रसारक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास
- (B) भाषा नष्ट करबाक उपाय
- (C) केवल निजी उच्चारण
- (D) मौन-व्यवस्था

४१४. अनुवादक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) भाषा बन्द करब
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) केवल मौन
- (D) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा

४१५. आलोचनाक मैथिली विकासमे भूमिका की अछि?

- (A) कृषि-लेखा
- (B) लिपि-रंग
- (C) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा
- (D) केवल प्रशंसा

४१६. मैथिलीक कालक्रममे प्रारम्भिक काल केँ केना बुझल जाए (16)?

- (A) केवल विदेशी शासन
- (B) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (C) डिजिटल युग मात्र
- (D) पूर्ण मौनकाल

४१७. मैथिलीक कालक्रममे मध्यकाल केँ केना बुझल जाए (17)?

- (A) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय
- (B) केवल छपाईक युग
- (C) संगणकक आरम्भ
- (D) ध्वनिहीन काल

४१८. मैथिलीक कालक्रममे आधुनिक काल केँ केना बुझल जाए (18)?

- (A) केवल वैदिक यज्ञकाल
- (B) प्राकृतक आरम्भ
- (C) लिपि-अभाव
- (D) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल

४१९. मैथिलीक कालक्रममे विद्यापति केँ केना बुझल जाए (19)?

- (A) संगीतवादक मात्र
- (B) कृषि वैज्ञानिक
- (C) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत
- (D) केवल आधुनिक पत्रकार

४२०. मैथिलीक कालक्रममे कीर्तनिया नाटक केँ केना बुझल जाए (20)?

- (A) व्याकरणक सूची मात्र
- (B) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (C) आधुनिक समाचार
- (D) कानूनक पुस्तक

४२१. मैथिलीक कालक्रममे नेपालक मैथिली नाटक केँ केना बुझल जाए (21)?

- (A) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा
- (B) समुद्री यात्रा
- (C) दक्षिणी लिपि-नियम
- (D) केवल गद्य समाचार

४२२. मैथिलीक कालक्रममे छपाई केँ केना बुझल जाए (22)?

- (A) केवल मौन-साधना
- (B) अर्थक मिटान
- (C) ध्वनिरहितता
- (D) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन

४२३. मैथिलीक कालक्रममे पत्र-पत्रिका केँ केना बुझल जाए (23)?

- (A) अर्थहीन गीत
- (B) मूर्ति-मात्र
- (C) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच
- (D) केवल खेतक औजार

४२४. मैथिलीक कालक्रममे संवैधानिक मान्यता केँ केना बुझल जाए (24)?

- (A) शिल्पक आकार
- (B) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्वपूर्ण उपलब्धि
- (C) मध्यकालीन गीत
- (D) पशुध्वनि

४२५. मैथिलीक कालक्रममे मानकीकरण केँ केना बुझल जाए (25)?

- (A) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता
- (B) भाषा-विनाश
- (C) केवल निजी चिट्ठी
- (D) अर्थहीनता

४२६. मैथिलीक कालक्रममे रेडियो आ मंच केँ केना बुझल जाए (26)?

- (A) लिपि-विरोध
- (B) धातु-विज्ञान
- (C) मौन-संग्रह
- (D) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम

४२७. मैथिलीक कालक्रममे डिजिटल युग केँ केना बुझल जाए (27)?

- (A) कृषि-युग मात्र
- (B) अर्थ-विहीन काल
- (C) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार
- (D) प्राचीन मौनकाल

४२८. मैथिलीक कालक्रममे शिक्षा-प्रसार केँ केना बुझल जाए (28)?

- (A) मौन-व्यवस्था
- (B) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास
- (C) भाषा नष्ट करबाक उपाय
- (D) केवल निजी उच्चारण

४२९. मैथिलीक कालक्रममे अनुवाद केँ केना बुझल जाए (29)?

- (A) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा
- (B) भाषा बन्द करब
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) केवल मौन

४३०. मैथिलीक कालक्रममे आलोचना केँ केना बुझल जाए (30)?

- (A) केवल प्रशंसा
- (B) कृषि-लेखा
- (C) लिपि-रंग
- (D) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा

४३१. प्रारम्भिक काल सम्बन्धी सही कथन चुनू। (31)

- (A) पूर्ण मौनकाल
- (B) केवल विदेशी शासन
- (C) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (D) डिजिटल युग मात्र

४३२. मध्यकाल सम्बन्धी सही कथन चुनू। (32)

- (A) ध्वनिहीन काल
- (B) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय
- (C) केवल छपाईक युग
- (D) संगणकक आरम्भ

४३३. आधुनिक काल सम्बन्धी सही कथन चुनू। (33)

- (A) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल
- (B) केवल वैदिक यज्ञकाल
- (C) प्राकृतक आरम्भ
- (D) लिपि-अभाव

४३४. विद्यापति सम्बन्धी सही कथन चुनू। (34)

- (A) केवल आधुनिक पत्रकार
- (B) संगीतवादक मात्र
- (C) कृषि वैज्ञानिक
- (D) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत

४३५. कीर्तनिया नाटक सम्बन्धी सही कथन चुनू। (35)

- (A) कानूनक पुस्तक
- (B) व्याकरणक सूची मात्र
- (C) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (D) आधुनिक समाचार

४३६. नेपालक मैथिली नाटक सम्बन्धी सही कथन चुनू। (36)

- (A) केवल गद्य समाचार
- (B) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा
- (C) समुद्री यात्रा
- (D) दक्षिणी लिपि-नियम

४३७. छपाई सम्बन्धी सही कथन चुनू। (37)

- (A) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन
- (B) केवल मौन-साधना
- (C) अर्थक मिटान
- (D) ध्वनिरहितता

४३८. पत्र-पत्रिका सम्बन्धी सही कथन चुनू। (38)

- (A) केवल खेतक औजार
- (B) अर्थहीन गीत
- (C) मूर्ति-मात्र
- (D) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच

४३९. संवैधानिक मान्यता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (39)

- (A) पशुध्वनि
- (B) शिल्पक आकार
- (C) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि
- (D) मध्यकालीन गीत

४४०. मानकीकरण सम्बन्धी सही कथन चुनू। (40)

- (A) अर्थहीनता
- (B) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता
- (C) भाषा-विनाश
- (D) केवल निजी चिट्ठी

४४१. रेडियो आ मंच सम्बन्धी सही कथन चुनू। (41)

- (A) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम
- (B) लिपि-विरोध
- (C) धातु-विज्ञान
- (D) मौन-संग्रह

४४२. डिजिटल युग सम्बन्धी सही कथन चुनू। (42)

- (A) प्राचीन मौनकाल
- (B) कृषि-युग मात्र
- (C) अर्थ-विहीन काल
- (D) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार

४४३. शिक्षा-प्रसार सम्बन्धी सही कथन चुनू। (43)

- (A) केवल निजी उच्चारण
- (B) मौन-व्यवस्था
- (C) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास
- (D) भाषा नष्ट करबाक उपाय

४४४. अनुवाद सम्बन्धी सही कथन चुनू। (44)

- (A) केवल मौन
- (B) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा
- (C) भाषा बन्द करब
- (D) ध्वनिहीनता

४४५. आलोचना सम्बन्धी सही कथन चुनू। (45)

- (A) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा
- (B) केवल प्रशंसा
- (C) कृषि-लेखा
- (D) लिपि-रंग

४४६. भाषा-विकासक दृष्टिसँ प्रारम्भिक काल किएक महत्त्वपूर्ण अछि (46)?

- (A) डिजिटल युग मात्र
- (B) पूर्ण मौनकाल
- (C) केवल विदेशी शासन
- (D) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय

४४७. भाषा-विकासक दृष्टिसँ मध्यकाल किएक महत्त्वपूर्ण अछि (47)?

- (A) संगणकक आरम्भ
- (B) ध्वनिहीन काल
- (C) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय
- (D) केवल छपाईक युग

४४८. भाषा-विकासक दृष्टिसँ आधुनिक काल किएक महत्त्वपूर्ण अछि (48)?

- (A) लिपि-अभाव
- (B) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल
- (C) केवल वैदिक यज्ञकाल
- (D) प्राकृतक आरम्भ

४४९. भाषा-विकासक दृष्टिसँ विद्यापति किएक महत्त्वपूर्ण अछि (49)?

- (A) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत
- (B) केवल आधुनिक पत्रकार
- (C) संगीतवादक मात्र
- (D) कृषि वैज्ञानिक

४५०. भाषा-विकासक दृष्टिसँ कीर्तनिया नाटक किएक महत्त्वपूर्ण अछि (50)?

- (A) आधुनिक समाचार
- (B) कानूनक पुस्तक
- (C) व्याकरणक सूची मात्र
- (D) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप

४५१. भाषा-विकासक दृष्टिसँ नेपालक मैथिली नाटक किएक महत्त्वपूर्ण अछि (51)?

- (A) दक्षिणी लिपि-नियम
- (B) केवल गद्य समाचार
- (C) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा
- (D) समुद्री यात्रा

४५२. भाषा-विकासक दृष्टिसँ छपाई किएक महत्त्वपूर्ण अछि (52)?

- (A) ध्वनिरहितता
- (B) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन
- (C) केवल मौन-साधना
- (D) अर्थक मिटान

४५३. भाषा-विकासक दृष्टिसँ पत्र-पत्रिका किएक महत्त्वपूर्ण अछि (53)?

- (A) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच
- (B) केवल खेतक औजार
- (C) अर्थहीन गीत
- (D) मूर्ति-मात्र

४५४. भाषा-विकासक दृष्टिसँ संवैधानिक मान्यता किएक महत्त्वपूर्ण अछि (54)?

- (A) मध्यकालीन गीत
- (B) पशुध्वनि
- (C) शिल्पक आकार
- (D) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि

४५५. भाषा-विकासक दृष्टिसँ मानकीकरण किएक महत्त्वपूर्ण अछि (55)?

- (A) केवल निजी चिट्ठी
- (B) अर्थहीनता
- (C) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता
- (D) भाषा-विनाश

४५६. भाषा-विकासक दृष्टिसँ रेडियो आ मंच किएक महत्त्वपूर्ण अछि (56)?

- (A) मौन-संग्रह
- (B) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम
- (C) लिपि-विरोध
- (D) धातु-विज्ञान

४५७. भाषा-विकासक दृष्टिसँ डिजिटल युग किएक महत्त्वपूर्ण अछि (57)?

- (A) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार
- (B) प्राचीन मौनकाल
- (C) कृषि-युग मात्र
- (D) अर्थ-विहीन काल

४५८. भाषा-विकासक दृष्टिसँ शिक्षा-प्रसार किएक महत्त्वपूर्ण अछि (58)?

- (A) भाषा नष्ट करबाक उपाय
- (B) केवल निजी उच्चारण
- (C) मौन-व्यवस्था
- (D) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास

४५९. भाषा-विकासक दृष्टिसँ अनुवाद किएक महत्त्वपूर्ण अछि (59)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) केवल मौन
- (C) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा
- (D) भाषा बन्द करब

४६०. भाषा-विकासक दृष्टिसँ आलोचना किएक महत्त्वपूर्ण अछि (60)?

- (A) लिपि-रंग
- (B) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा
- (C) केवल प्रशंसा
- (D) कृषि-लेखा

४६१. प्रारम्भिक काल मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (61)?

- (A) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (B) डिजिटल युग मात्र
- (C) पूर्ण मौनकाल
- (D) केवल विदेशी शासन

४६२. मध्यकाल मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (62)?

- (A) केवल छपाईक युग
- (B) संगणकक आरम्भ
- (C) ध्वनिहीन काल
- (D) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय

४६३. आधुनिक काल मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (63)?

- (A) प्राकृतक आरम्भ
- (B) लिपि-अभाव
- (C) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल
- (D) केवल वैदिक यज्ञकाल

४६४. विद्यापति मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (64)?

- (A) कृषि वैज्ञानिक
- (B) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत
- (C) केवल आधुनिक पत्रकार
- (D) संगीतवादक मात्र

४६५. कीर्तनिया नाटक मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (65)?

- (A) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (B) आधुनिक समाचार
- (C) कानूनक पुस्तक
- (D) व्याकरणक सूची मात्र

४६६. नेपालक मैथिली नाटक मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (66)?

- (A) समुद्री यात्रा
- (B) दक्षिणी लिपि-नियम
- (C) केवल गद्य समाचार
- (D) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा

४६७. छपाई मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (67)?

- (A) अर्थक मिटान
- (B) ध्वनिरहितता
- (C) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन
- (D) केवल मौन-साधना

४६८. पत्र-पत्रिका मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (68)?

- (A) मूर्ति-मात्र
- (B) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच
- (C) केवल खेतक औजार
- (D) अर्थहीन गीत

४६९. संवैधानिक मान्यता मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (69)?

- (A) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्वपूर्ण उपलब्धि
- (B) मध्यकालीन गीत
- (C) पशुध्वनि
- (D) शिल्पक आकार

४७०. मानकीकरण मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (70)?

- (A) भाषा-विनाश
- (B) केवल निजी चिट्ठी
- (C) अर्थहीनता
- (D) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता

४७१. रेडियो आ मंच मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (71)?

- (A) धातु-विज्ञान
- (B) मौन-संग्रह
- (C) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम
- (D) लिपि-विरोध

४७२. डिजिटल युग मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (72)?

- (A) अर्थ-विहीन काल
- (B) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार
- (C) प्राचीन मौनकाल
- (D) कृषि-युग मात्र

४७३. शिक्षा-प्रसार मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (73)?

- (A) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास
- (B) भाषा नष्ट करबाक उपाय
- (C) केवल निजी उच्चारण
- (D) मौन-व्यवस्था

४७४. अनुवाद मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (74)?

- (A) भाषा बन्द करब
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) केवल मौन
- (D) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा

४७५. आलोचना मैथिली साहित्य-भाषा विकासक कोन पक्ष देखबैत अछि (75)?

- (A) कृषि-लेखा
- (B) लिपि-रंग
- (C) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा
- (D) केवल प्रशंसा

४७६. नीचाँकमे प्रारम्भिक कालक सही व्याख्या कोन अछि (76)?

- (A) केवल विदेशी शासन
- (B) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (C) डिजिटल युग मात्र
- (D) पूर्ण मौनकाल

४७७. नीचाँकमे मध्यकालक सही व्याख्या कोन अछि (77)?

- (A) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय
- (B) केवल छपाईक युग
- (C) संगणकक आरम्भ
- (D) ध्वनिहीन काल

४७८. नीचाँकमे आधुनिक कालक सही व्याख्या कोन अछि (78)?

- (A) केवल वैदिक यज्ञकाल
- (B) प्राकृतक आरम्भ
- (C) लिपि-अभाव
- (D) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल

४७९. नीचाँकमे विद्यापतिक सही व्याख्या कोन अछि (79)?

- (A) संगीतवादक मात्र
- (B) कृषि वैज्ञानिक
- (C) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत
- (D) केवल आधुनिक पत्रकार

४८०. नीचाँकमे कीर्तनिया नाटकक सही व्याख्या कोन अछि (80)?

- (A) व्याकरणक सूची मात्र
- (B) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (C) आधुनिक समाचार
- (D) कानूनक पुस्तक

४८१. नीचाँकमे नेपालक मैथिली नाटकक सही व्याख्या कोन अछि (81)?

- (A) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा
- (B) समुद्री यात्रा
- (C) दक्षिणी लिपि-नियम
- (D) केवल गद्य समाचार

४८२. नीचाँकमे छपाईक सही व्याख्या कोन अछि (82)?

- (A) केवल मौन-साधना
- (B) अर्थक मिटान
- (C) ध्वनिरहितता
- (D) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन

४८३. नीचाँकमे पत्र-पत्रिकाक सही व्याख्या कोन अछि (83)?

- (A) अर्थहीन गीत
- (B) मूर्ति-मात्र
- (C) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच
- (D) केवल खेतक औजार

४८४. नीचाँकमे संवैधानिक मान्यताक सही व्याख्या कोन अछि (84)?

- (A) शिल्पक आकार
- (B) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि
- (C) मध्यकालीन गीत
- (D) पशुध्वनि

४८५. नीचाँकमे मानकीकरणक सही व्याख्या कोन अछि (85)?

- (A) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता
- (B) भाषा-विनाश
- (C) केवल निजी चिट्ठी
- (D) अर्थहीनता

४८६. नीचाँकमे रेडियो आ मंचक सही व्याख्या कोन अछि (86)?

- (A) लिपि-विरोध
- (B) धातु-विज्ञान
- (C) मौन-संग्रह
- (D) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम

४८७. नीचाँकमे डिजिटल युगक सही व्याख्या कोन अछि (87)?

- (A) कृषि-युग मात्र
- (B) अर्थ-विहीन काल
- (C) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार
- (D) प्राचीन मौनकाल

४८८. नीचाँकमे शिक्षा-प्रसारक सही व्याख्या कोन अछि (88)?

- (A) मौन-व्यवस्था
- (B) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास
- (C) भाषा नष्ट करबाक उपाय
- (D) केवल निजी उच्चारण

४८९. नीचाँकमे अनुवादक सही व्याख्या कोन अछि (89)?

- (A) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा
- (B) भाषा बन्द करब
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) केवल मौन

४९०. नीचाँकमे आलोचनाक सही व्याख्या कोन अछि (90)?

- (A) केवल प्रशंसा
- (B) कृषि-लेखा
- (C) लिपि-रंग
- (D) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा

४९१. प्रारम्भिक काल आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (91)?

- (A) पूर्ण मौनकाल
- (B) केवल विदेशी शासन
- (C) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय
- (D) डिजिटल युग मात्र

४९२. मध्यकाल आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (92)?

- (A) ध्वनिहीन काल
- (B) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय
- (C) केवल छपाईक युग
- (D) संगणकक आरम्भ

४९३. आधुनिक काल आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (93)?

- (A) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल
- (B) केवल वैदिक यज्ञकाल
- (C) प्राकृतक आरम्भ
- (D) लिपि-अभाव

४९४. विद्यापति आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (94)?

- (A) केवल आधुनिक पत्रकार
- (B) संगीतवादक मात्र
- (C) कृषि वैज्ञानिक
- (D) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत

४९५. कीर्तनिया नाटक आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (95)?

- (A) कानूनक पुस्तक
- (B) व्याकरणक सूची मात्र
- (C) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप
- (D) आधुनिक समाचार

४९६. नेपालक मैथिली नाटक आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (96)?

- (A) केवल गद्य समाचार
- (B) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा
- (C) समुद्री यात्रा
- (D) दक्षिणी लिपि-नियम

४९७. छपाई आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (97)?

- (A) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन
- (B) केवल मौन-साधना
- (C) अर्थक मिटान
- (D) ध्वनिरहितता

४९८. पत्र-पत्रिका आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (98)?

- (A) केवल खेतक औजार
- (B) अर्थहीन गीत
- (C) मूर्ति-मात्र
- (D) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच

४९९. संवैधानिक मान्यता आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (99)?

- (A) पशुध्वनि
- (B) शिल्पक आकार
- (C) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि
- (D) मध्यकालीन गीत

५००. मानकीकरण आ मैथिली विकासक सम्बन्ध कोन अछि (100)?

- (A) अर्थहीनता
- (B) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता
- (C) भाषा-विनाश
- (D) केवल निजी चिट्ठी

५०१. भारोपीय भाषा परिवारक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (B) द्रविड़क उपशाखा मात्र
- (C) चीनी-तिब्बतीक उपनाम
- (D) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि

५०२. हिन्द-ईरानी शाखाक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) चित्रकला-परिवार
- (C) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि
- (D) केवल द्रविड़ लिपि

५०३. हिन्द-आर्य समूहक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) केवल संकेतभाषा
- (B) भारतीय आर्य भाषासभक समूह
- (C) सिनो-तिब्बती समूह
- (D) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र

५०४. पूर्वी हिन्द-आर्यक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (B) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र
- (C) अमरीकी आदिवासी समूह
- (D) मौन-चिह्न

५०५. बिहारी समूहक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (B) सेमेटिक उपशाखा
- (C) लिपि-मात्र
- (D) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह

५०६. मैथिलीक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) यूरोपीय भाषा
- (B) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (C) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा
- (D) तिब्बती-बर्मी बोली

५०७. मगहीक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) मौन संकेत
- (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (C) स्कैंडिनेवियाई भाषा
- (D) द्रविड़ लिपि

५०८. भोजपुरीक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (B) अफ्रीकी क्लिक भाषा
- (C) जापानी लिपि
- (D) केवल संगीत राग

५०९. बांग्लाक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (B) चित्रकला मात्र
- (C) मौन मन्त्र
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा

५१०. असमियाक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) माया लिपि
- (B) मूर्तिकला
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) सेमेटिक उपभाषा

५११. ओड़ियाक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) पशुध्वनि
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (C) द्रविड़ परिवारक मूल
- (D) कृषि औजार

५१२. वंश-वृक्ष दृष्टिक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति
- (B) रंगक सजावट
- (C) केवल मानचित्र बिना इतिहास
- (D) अर्थहीन तालिका

५१३. संपर्क-क्षेत्रक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) पूर्ण अलगाव
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) एकाकी शिला
- (D) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र

५१४. तुलनात्मक पद्धतिक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) चित्रक आकार
- (B) मौन साधना
- (C) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय
- (D) केवल अनुमान

५१५. सजातीय शब्दक मैथिलीसँ सम्बन्ध की अछि?

- (A) चित्र-चिह्न
- (B) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द
- (C) उधार लेल सजावट
- (D) अर्थहीन ध्वनि

५१६. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे भारोपीय भाषा परिवार पर सही कथन चुनू। (16)

- (A) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि
- (B) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (C) द्रविड़क उपशाखा मात्र
- (D) चीनी-तिब्बतीक उपनाम

५१७. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे हिन्द-ईरानी शाखा पर सही कथन चुनू। (17)

- (A) केवल द्रविड़ लिपि
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) चित्रकला-परिवार
- (D) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि

५१८. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे हिन्द-आर्य समूह पर सही कथन चुनू। (18)

- (A) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र
- (B) केवल संकेतभाषा
- (C) भारतीय आर्य भाषासभक समूह
- (D) सिनो-तिब्बती समूह

५१९. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे पूर्वी हिन्द-आर्य पर सही कथन चुनू। (19)

- (A) मौन-चिह्न
- (B) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (C) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र
- (D) अमरीकी आदिवासी समूह

५२०. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे बिहारी समूह पर सही कथन चुनू। (20)

- (A) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह
- (B) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (C) सेमेटिक उपशाखा
- (D) लिपि-मात्र

५२१. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे मैथिली पर सही कथन चुनू। (21)

- (A) तिब्बती-बर्मी बोली
- (B) यूरोपीय भाषा
- (C) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (D) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा

५२२. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे मगही पर सही कथन चुनू। (22)

- (A) द्रविड़ लिपि
- (B) मौन संकेत
- (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (D) स्कैंडिनेवियाई भाषा

५२३. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे भोजपुरी पर सही कथन चुनू। (23)

- (A) केवल संगीत राग
- (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (C) अफ्रीकी क्लिक भाषा
- (D) जापानी लिपि

५२४. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे बांग्ला पर सही कथन चुनू। (24)

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा
- (B) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (C) चित्रकला मात्र
- (D) मौन मन्त्र

५२५. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे असमिया पर सही कथन चुनू। (25)

- (A) सेमेटिक उपभाषा
- (B) माया लिपि
- (C) मूर्तिकला
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा

५२६. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे ओड़िया पर सही कथन चुनू। (26)

- (A) कृषि औजार
- (B) पशुध्वनि
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) द्रविड़ परिवारक मूल

५२७. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे वंश-वृक्ष दृष्टि पर सही कथन चुनू। (27)

- (A) अर्थहीन तालिका
- (B) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति
- (C) रंगक सजावट
- (D) केवल मानचित्र बिना इतिहास

५२८. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे संपर्क-क्षेत्र पर सही कथन चुनू। (28)

- (A) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र
- (B) पूर्ण अलगाव
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) एकाकी शिला

५२९. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे तुलनात्मक पद्धति पर सही कथन चुनू। (29)

- (A) केवल अनुमान
- (B) चित्रक आकार
- (C) मौन साधना
- (D) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय

५३०. भारोपीय परिवारक सन्दर्भमे सजातीय शब्द पर सही कथन चुनू। (30)

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) चित्र-चिह्न
- (C) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द
- (D) उधार लेल सजावट

५३१. भारोपीय भाषा परिवारक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (31)?

- (A) चीनी-तिब्बतीक उपनाम
- (B) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि
- (C) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (D) द्रविड़क उपशाखा मात्र

५३२. हिन्द-ईरानी शाखाक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (32)?

- (A) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि
- (B) केवल द्रविड़ लिपि
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) चित्रकला-परिवार

५३३. हिन्द-आर्य समूहक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (33)?

- (A) सिनो-तिब्बती समूह
- (B) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र
- (C) केवल संकेतभाषा
- (D) भारतीय आर्य भाषासभक समूह

५३४. पूर्वी हिन्द-आर्यक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (34)?

- (A) अमरीकी आदिवासी समूह
- (B) मौन-चिह्न
- (C) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (D) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र

५३५. बिहारी समूहक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (35)?

- (A) लिपि-मात्र
- (B) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह
- (C) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (D) सेमेटिक उपशाखा

५३६. मैथिलीक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (36)?

- (A) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा
- (B) तिब्बती-बर्मी बोली
- (C) यूरोपीय भाषा
- (D) दक्षिणी द्रविड़ भाषा

५३७. मगहीक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (37)?

- (A) स्कैंडिनेवियाई भाषा
- (B) द्रविड़ लिपि
- (C) मौन संकेत
- (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा

५३८. भोजपुरीक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (38)?

- (A) जापानी लिपि
- (B) केवल संगीत राग
- (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (D) अफ्रीकी क्लिक भाषा

५३९. बांग्लाक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (39)?

- (A) मौन मन्त्र
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा
- (C) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (D) चित्रकला मात्र

५४०. असमियाक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (40)?

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (B) सेमेटिक उपभाषा
- (C) माया लिपि
- (D) मूर्तिकला

५४१. ओड़ियाक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (41)?

- (A) द्रविड़ परिवारक मूल
- (B) कृषि औजार
- (C) पशुध्वनि
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा

५४२. वंश-वृक्ष दृष्टिक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (42)?

- (A) केवल मानचित्र बिना इतिहास
- (B) अर्थहीन तालिका
- (C) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति
- (D) रंगक सजावट

५४३. संपर्क-क्षेत्रक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (43)?

- (A) एकाकी शिला
- (B) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र
- (C) पूर्ण अलगाव
- (D) ध्वनिहीनता

५४४. तुलनात्मक पद्धतिक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (44)?

- (A) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय
- (B) केवल अनुमान
- (C) चित्रक आकार
- (D) मौन साधना

५४५. सजातीय शब्दक भाषावैज्ञानिक स्थान कोन अछि (45)?

- (A) उधार लेल सजावट
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) चित्र-चिह्न
- (D) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द

५४६. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल भारोपीय भाषा परिवार किएक जरूरी अछि (46)?

- (A) द्रविड़क उपशाखा मात्र
- (B) चीनी-तिब्बतीक उपनाम
- (C) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि
- (D) केवल मिथिलाक एक गामक बोली

५४७. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल हिन्द-ईरानी शाखा किएक जरूरी अछि (47)?

- (A) चित्रकला-परिवार
- (B) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि
- (C) केवल द्रविड़ लिपि
- (D) अर्थहीन ध्वनि

५४८. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल हिन्द-आर्य समूह किएक जरूरी अछि (48)?

- (A) भारतीय आर्य भाषासभक समूह
- (B) सिनो-तिब्बती समूह
- (C) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र
- (D) केवल संकेतभाषा

५४९. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल पूर्वी हिन्द-आर्य किएक जरूरी अछि (49)?

- (A) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र
- (B) अमरीकी आदिवासी समूह
- (C) मौन-चिह्न
- (D) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि

५५०. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल बिहारी समूह किएक जरूरी अछि (50)?

- (A) सेमेटिक उपशाखा
- (B) लिपि-मात्र
- (C) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह
- (D) दक्षिणी द्रविड़ परिवार

५५१. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल मैथिली किएक जरूरी अछि (51)?

- (A) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (B) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा
- (C) तिब्बती-बर्मी बोली
- (D) यूरोपीय भाषा

५५२. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल मगही किएक जरूरी अछि (52)?

- (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (B) स्कैंडिनेवियाई भाषा
- (C) द्रविड़ लिपि
- (D) मौन संकेत

५५३. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल भोजपुरी किएक जरूरी अछि (53)?

- (A) अफ्रीकी क्लिक भाषा
- (B) जापानी लिपि
- (C) केवल संगीत राग
- (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा

५५४. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल बांग्ला किएक जरूरी अछि (54)?

- (A) चित्रकला मात्र
- (B) मौन मन्त्र
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा
- (D) द्रविड़ दक्षिणी भाषा

५५५. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल असमिया किएक जरूरी अछि (55)?

- (A) मूर्तिकला
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (C) सेमेटिक उपभाषा
- (D) माया लिपि

५५६. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल ओड़िया किएक जरूरी अछि (56)?

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (B) द्रविड़ परिवारक मूल
- (C) कृषि औजार
- (D) पशुध्वनि

५५७. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल वंश-वृक्ष दृष्टि किएक जरूरी अछि (57)?

- (A) रंगक सजावट
- (B) केवल मानचित्र बिना इतिहास
- (C) अर्थहीन तालिका
- (D) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति

५५८. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल संपर्क-क्षेत्र किएक जरूरी अछि (58)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) एकाकी शिला
- (C) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र
- (D) पूर्ण अलगाव

५५९. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल तुलनात्मक पद्धति किएक जरूरी अछि (59)?

- (A) मौन साधना
- (B) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय
- (C) केवल अनुमान
- (D) चित्रक आकार

५६०. मैथिलीक वंश-सम्बन्ध बुझबाक लेल सजातीय शब्द किएक जरूरी अछि (60)?

- (A) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द
- (B) उधार लेल सजावट
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) चित्र-चिह्न

५६१. भारोपीय भाषा परिवार आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (61)?

- (A) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (B) द्रविड़क उपशाखा मात्र
- (C) चीनी-तिब्बतीक उपनाम
- (D) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि

५६२. हिन्द-ईरानी शाखा आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (62)?

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) चित्रकला-परिवार
- (C) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि
- (D) केवल द्रविड़ लिपि

५६३. हिन्द-आर्य समूह आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (63)?

- (A) केवल संकेतभाषा
- (B) भारतीय आर्य भाषासभक समूह
- (C) सिनो-तिब्बती समूह
- (D) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र

५६४. पूर्वी हिन्द-आर्य आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (64)?

- (A) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (B) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र
- (C) अमरीकी आदिवासी समूह
- (D) मौन-चिह्न

५६५. बिहारी समूह आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (65)?

- (A) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (B) सेमेटिक उपशाखा
- (C) लिपि-मात्र
- (D) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह

५६६. मैथिली आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (66)?

- (A) यूरोपीय भाषा
- (B) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (C) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा
- (D) तिब्बती-बर्मी बोली

५६७. मगही आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (67)?

- (A) मौन संकेत
- (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (C) स्कैंडिनेवियाई भाषा
- (D) द्रविड़ लिपि

५६८. भोजपुरी आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (68)?

- (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (B) अफ्रीकी क्लिक भाषा
- (C) जापानी लिपि
- (D) केवल संगीत राग

५६९. बांग्ला आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (69)?

- (A) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (B) चित्रकला मात्र
- (C) मौन मन्त्र
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा

५७०. असमिया आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (70)?

- (A) माया लिपि
- (B) मूर्तिकला
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) सेमेटिक उपभाषा

५७१. ओड़िया आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (71)?

- (A) पशुध्वनि
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (C) द्रविड़ परिवारक मूल
- (D) कृषि औजार

५७२. वंश-वृक्ष दृष्टि आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (72)?

- (A) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति
- (B) रंगक सजावट
- (C) केवल मानचित्र बिना इतिहास
- (D) अर्थहीन तालिका

५७३. संपर्क-क्षेत्र आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (73)?

- (A) पूर्ण अलगाव
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) एकाकी शिला
- (D) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र

५७४. तुलनात्मक पद्धति आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (74)?

- (A) चित्रक आकार
- (B) मौन साधना
- (C) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय
- (D) केवल अनुमान

५७५. सजातीय शब्द आ मैथिलीक ऐतिहासिक सम्बन्ध कोन बात बतबैत अछि (75)?

- (A) चित्र-चिह्न
- (B) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द
- (C) उधार लेल सजावट
- (D) अर्थहीन ध्वनि

५७६. नीचाँकमे भारोपीय भाषा परिवार सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (76)?

- (A) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि
- (B) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (C) द्रविड़क उपशाखा मात्र
- (D) चीनी-तिब्बतीक उपनाम

५७७. नीचाँकमे हिन्द-ईरानी शाखा सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (77)?

- (A) केवल द्रविड़ लिपि
- (B) अर्थहीन ध्वनि
- (C) चित्रकला-परिवार
- (D) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि

५७८. नीचाँकमे हिन्द-आर्य समूह सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (78)?

- (A) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र
- (B) केवल संकेतभाषा
- (C) भारतीय आर्य भाषासभक समूह
- (D) सिनो-तिब्बती समूह

५७९. नीचाँकमे पूर्वी हिन्द-आर्य सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (79)?

- (A) मौन-चिह्न
- (B) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (C) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र
- (D) अमरीकी आदिवासी समूह

५८०. नीचाँकमे बिहारी समूह सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (80)?

- (A) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह
- (B) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (C) सेमेटिक उपशाखा
- (D) लिपि-मात्र

५८१. नीचाँकमे मैथिली सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (81)?

- (A) तिब्बती-बर्मी बोली
- (B) यूरोपीय भाषा
- (C) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (D) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा

५८२. नीचाँकमे मगही सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (82)?

- (A) द्रविड़ लिपि
- (B) मौन संकेत
- (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (D) स्कैंडिनेवियाई भाषा

५८३. नीचाँकमे भोजपुरी सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (83)?

- (A) केवल संगीत राग
- (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (C) अफ्रीकी क्लिक भाषा
- (D) जापानी लिपि

५८४. नीचाँकमे बांग्ला सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (84)?

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा
- (B) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (C) चित्रकला मात्र
- (D) मौन मन्त्र

५८५. नीचाँकमे असमिया सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (85)?

- (A) सेमेटिक उपभाषा
- (B) माया लिपि
- (C) मूर्तिकला
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा

५८६. नीचाँकमे ओड़िया सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (86)?

- (A) कृषि औजार
- (B) पशुध्वनि
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) द्रविड़ परिवारक मूल

५८७. नीचाँकमे वंश-वृक्ष दृष्टि सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (87)?

- (A) अर्थहीन तालिका
- (B) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति
- (C) रंगक सजावट
- (D) केवल मानचित्र बिना इतिहास

५८८. नीचाँकमे संपर्क-क्षेत्र सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (88)?

- (A) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र
- (B) पूर्ण अलगाव
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) एकाकी शिला

५८९. नीचाँकमे तुलनात्मक पद्धति सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (89)?

- (A) केवल अनुमान
- (B) चित्रक आकार
- (C) मौन साधना
- (D) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय

५९०. नीचाँकमे सजातीय शब्द सम्बन्धी उचित विकल्प कोन अछि (90)?

- (A) अर्थहीन ध्वनि
- (B) चित्र-चिह्न
- (C) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द
- (D) उधार लेल सजावट

५९१. भारोपीय भाषा परिवार विषयक सही उत्तर चुनू। (91)

- (A) चीनी-तिब्बतीक उपनाम
- (B) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि
- (C) केवल मिथिलाक एक गामक बोली
- (D) द्रविड़क उपशाखा मात्र

५९२. हिन्द-ईरानी शाखा विषयक सही उत्तर चुनू। (92)

- (A) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि
- (B) केवल द्रविड़ लिपि
- (C) अर्थहीन ध्वनि
- (D) चित्रकला-परिवार

५९३. हिन्द-आर्य समूह विषयक सही उत्तर चुनू। (93)

- (A) सिनो-तिब्बती समूह
- (B) ऑस्ट्रिक लिपि मात्र
- (C) केवल संकेतभाषा
- (D) भारतीय आर्य भाषासभक समूह

५९४. पूर्वी हिन्द-आर्य विषयक सही उत्तर चुनू। (94)

- (A) अमरीकी आदिवासी समूह
- (B) मौन-चिह्न
- (C) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि
- (D) पश्चिमी यूरोपीय भाषा मात्र

५९५. बिहारी समूह विषयक सही उत्तर चुनू। (95)

- (A) लिपि-मात्र
- (B) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह
- (C) दक्षिणी द्रविड़ परिवार
- (D) सेमेटिक उपशाखा

५९६. मैथिली विषयक सही उत्तर चुनू। (96)

- (A) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा
- (B) तिब्बती-बर्मी बोली
- (C) यूरोपीय भाषा
- (D) दक्षिणी द्रविड़ भाषा

५९७. मगही विषयक सही उत्तर चुनू। (97)

- (A) स्कैंडिनेवियाई भाषा
- (B) द्रविड़ लिपि
- (C) मौन संकेत
- (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा

५९८. भोजपुरी विषयक सही उत्तर चुनू। (98)

- (A) जापानी लिपि
- (B) केवल संगीत राग
- (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा
- (D) अफ्रीकी क्लिक भाषा

५९९. बांग्ला विषयक सही उत्तर चुनू। (99)

- (A) मौन मन्त्र
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा
- (C) द्रविड़ दक्षिणी भाषा
- (D) चित्रकला मात्र

६००. असमिया विषयक सही उत्तर चुनू। (100)

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (B) सेमेटिक उपभाषा
- (C) माया लिपि
- (D) मूर्तिकला

६०१. भाषाक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) व्यक्तिगत संकेत
- (B) अर्थहीन रेखा
- (C) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था
- (D) केवल एक ध्वनि

६०२. बोलीक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) राजकीय कर मात्र
- (B) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप
- (C) पूर्णतः मौन
- (D) केवल लिपिक नाम

६०३. परस्पर बोधगम्यताक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (B) कागजक मोटाइ
- (C) शब्दक रंग
- (D) लिपिक आकार मात्र

६०४. मानकीकरणक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) सभी रूप नष्ट करब
- (B) केवल निजी मजाक
- (C) ध्वनि रोकब
- (D) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ

६०५. साहित्यिक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) मौन-चित्र
- (B) केवल गणना
- (C) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार
- (D) भाषा-विरोधी क्रिया

६०६. राजनीतिक पक्षक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) अर्थ समाप्ति
- (B) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि
- (C) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध
- (D) केवल ध्वनि नियम

६०७. क्षेत्रीय रूपक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (B) भाषाहीनता
- (C) एके शब्दक मृत्यु
- (D) चित्र-अक्षर

६०८. सामाजिक बोलीक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) केवल नदीक धारा
- (B) धातुक बर्तन
- (C) मृत लिपि
- (D) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप

६०९. द्विभाषिकताक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) मौन-पालन
- (B) केवल लिपि-रंग
- (C) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान
- (D) भाषाक पूर्ण निषेध

६१०. कोड-परिवर्तनक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग
- (C) अर्थक पूर्ण अभाव
- (D) कागजक रंग

६११. प्रतिष्ठित रूपक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप
- (B) सदैव वैज्ञानिक रूपेँ श्रेष्ठ
- (C) भाषा नहि
- (D) अर्थहीन स्वर

६१२. लोकबोलीक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) केवल राजकीय आदेश
- (B) कठोर मौन
- (C) चित्रमात्र
- (D) जनजीवनक सहज भाषा-रूप

६१३. भाषिक निरन्तरताक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) शब्दक मृत्यु
- (B) ध्वनि-विहीनता
- (C) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता
- (D) अचानक पूर्ण अलगाव

६१४. लेखन-परम्पराक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) मौन संकेत
- (B) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन
- (C) केवल चित्रक रंग
- (D) वस्त्रक नाम

६१५. शिक्षाक भाषा-बोली प्रसंगमे अर्थ की अछि?

- (A) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम
- (B) भाषा नष्ट करब
- (C) केवल व्यक्तिगत ध्वनि
- (D) सामाजिक मौन

६१६. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल भाषा किएक महत्वपूर्ण अछि (16)?

- (A) केवल एक ध्वनि
- (B) व्यक्तिगत संकेत
- (C) अर्थहीन रेखा
- (D) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था

६१७. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल बोली किएक महत्त्वपूर्ण अछि (17)?

- (A) केवल लिपिक नाम
- (B) राजकीय कर मात्र
- (C) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप
- (D) पूर्णतः मौन

६१८. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल परस्पर बोधगम्यता किएक महत्त्वपूर्ण अछि (18)?

- (A) लिपिक आकार मात्र
- (B) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (C) कागजक मोटाई
- (D) शब्दक रंग

६१९. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल मानकीकरण किएक महत्त्वपूर्ण अछि (19)?

- (A) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ
- (B) सभी रूप नष्ट करब
- (C) केवल निजी मजाक
- (D) ध्वनि रोकब

६२०. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल साहित्य किएक महत्त्वपूर्ण अछि (20)?

- (A) भाषा-विरोधी क्रिया
- (B) मौन-चित्र
- (C) केवल गणना
- (D) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्त्वपूर्ण आधार

६२१. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल राजनीतिक पक्ष किएक महत्त्वपूर्ण अछि (21)?

- (A) केवल ध्वनि नियम
- (B) अर्थ समाप्ति
- (C) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि
- (D) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध

६२२. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल क्षेत्रीय रूप किएक महत्त्वपूर्ण अछि (22)?

- (A) चित्र-अक्षर
- (B) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (C) भाषाहीनता
- (D) एके शब्दक मृत्यु

६२३. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल सामाजिक बोली किएक महत्त्वपूर्ण अछि (23)?

- (A) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप
- (B) केवल नदीक धारा
- (C) धातुक बर्तन
- (D) मृत लिपि

६२४. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल द्विभाषिकता किएक महत्त्वपूर्ण अछि (24)?

- (A) भाषाक पूर्ण निषेध
- (B) मौन-पालन
- (C) केवल लिपि-रंग
- (D) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान

६२५. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल कोड-परिवर्तन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (25)?

- (A) कागजक रंग
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग
- (D) अर्थक पूर्ण अभाव

६२६. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल प्रतिष्ठित रूप किएक महत्त्वपूर्ण अछि (26)?

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप
- (C) सदैव वैज्ञानिक रूपेँ श्रेष्ठ
- (D) भाषा नहि

६२७. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल लोकबोली किएक महत्त्वपूर्ण अछि (27)?

- (A) जनजीवनक सहज भाषा-रूप
- (B) केवल राजकीय आदेश
- (C) कठोर मौन
- (D) चित्रमात्र

६२८. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल भाषिक निरन्तरता किएक महत्त्वपूर्ण अछि (28)?

- (A) अचानक पूर्ण अलगाव
- (B) शब्दक मृत्यु
- (C) ध्वनि-विहीनता
- (D) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता

६२९. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल लेखन-परम्परा किएक महत्त्वपूर्ण अछि (29)?

- (A) वस्त्रक नाम
- (B) मौन संकेत
- (C) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन
- (D) केवल चित्रक रंग

६३०. भाषा आ बोलीक भेद बुझबाक लेल शिक्षा किएक महत्त्वपूर्ण अछि (30)?

- (A) सामाजिक मौन
- (B) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम
- (C) भाषा नष्ट करब
- (D) केवल व्यक्तिगत ध्वनि

६३१. भाषा सम्बन्धी सही कथन चुनू। (31)

- (A) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था
- (B) केवल एक ध्वनि
- (C) व्यक्तिगत संकेत
- (D) अर्थहीन रेखा

६३२. बोली सम्बन्धी सही कथन चुनू। (32)

- (A) पूर्णतः मौन
- (B) केवल लिपिक नाम
- (C) राजकीय कर मात्र
- (D) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप

६३३. परस्पर बोधगम्यता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (33)

- (A) शब्दक रंग
- (B) लिपिक आकार मात्र
- (C) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (D) कागजक मोटाइ

६३४. मानकीकरण सम्बन्धी सही कथन चुनू। (34)

- (A) ध्वनि रोकब
- (B) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ
- (C) सभी रूप नष्ट करब
- (D) केवल निजी मजाक

६३५. साहित्य सम्बन्धी सही कथन चुनू। (35)

- (A) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार
- (B) भाषा-विरोधी क्रिया
- (C) मौन-चित्र
- (D) केवल गणना

६३६. राजनीतिक पक्ष सम्बन्धी सही कथन चुनू। (36)

- (A) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध
- (B) केवल ध्वनि नियम
- (C) अर्थ समाप्ति
- (D) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि

६३७. क्षेत्रीय रूप सम्बन्धी सही कथन चुनू। (37)

- (A) एके शब्दक मृत्यु
- (B) चित्र-अक्षर
- (C) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (D) भाषाहीनता

६३८. सामाजिक बोली सम्बन्धी सही कथन चुनू। (38)

- (A) मृत लिपि
- (B) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप
- (C) केवल नदीक धारा
- (D) धातुक बर्तन

६३९. द्विभाषिकता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (39)

- (A) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान
- (B) भाषाक पूर्ण निषेध
- (C) मौन-पालन
- (D) केवल लिपि-रंग

६४०. कोड-परिवर्तन सम्बन्धी सही कथन चुनू। (40)

- (A) अर्थक पूर्ण अभाव
- (B) कागजक रंग
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग

६४१. प्रतिष्ठित रूप सम्बन्धी सही कथन चुनू। (41)

- (A) भाषा नहि
- (B) अर्थहीन स्वर
- (C) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप
- (D) सदैव वैज्ञानिक रूपेँ श्रेष्ठ

६४२. लोकबोली सम्बन्धी सही कथन चुनू। (42)

- (A) चित्रमात्र
- (B) जनजीवनक सहज भाषा-रूप
- (C) केवल राजकीय आदेश
- (D) कठोर मौन

६४३. भाषिक निरन्तरता सम्बन्धी सही कथन चुनू। (43)

- (A) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता
- (B) अचानक पूर्ण अलगाव
- (C) शब्दक मृत्यु
- (D) ध्वनि-विहीनता

६४४. लेखन-परम्परा सम्बन्धी सही कथन चुनू। (44)

- (A) केवल चित्रक रंग
- (B) वस्त्रक नाम
- (C) मौन संकेत
- (D) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन

६४५. शिक्षा सम्बन्धी सही कथन चुनू। (45)

- (A) केवल व्यक्तिगत ध्वनि
- (B) सामाजिक मौन
- (C) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम
- (D) भाषा नष्ट करब

६४६. मैथिली सन्दर्भमे भाषा कोन बात स्पष्ट करैत अछि (46)?

- (A) अर्थहीन रेखा
- (B) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था
- (C) केवल एक ध्वनि
- (D) व्यक्तिगत संकेत

६४७. मैथिली सन्दर्भमे बोली कोन बात स्पष्ट करैत अछि (47)?

- (A) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप
- (B) पूर्णतः मौन
- (C) केवल लिपिक नाम
- (D) राजकीय कर मात्र

६४८. मैथिली सन्दर्भमे परस्पर बोधगम्यता कोन बात स्पष्ट करैत अछि (48)?

- (A) कागजक मोटाइ
- (B) शब्दक रंग
- (C) लिपिक आकार मात्र
- (D) दुई रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि

६४९. मैथिली सन्दर्भमे मानकीकरण कोन बात स्पष्ट करैत अछि (49)?

- (A) केवल निजी मजाक
- (B) ध्वनि रोकब
- (C) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ
- (D) सभी रूप नष्ट करब

६५०. मैथिली सन्दर्भमे साहित्य कोन बात स्पष्ट करैत अछि (50)?

- (A) केवल गणना
- (B) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्त्वपूर्ण आधार
- (C) भाषा-विरोधी क्रिया
- (D) मौन-चित्र

६५१. मैथिली सन्दर्भमे राजनीतिक पक्ष कोन बात स्पष्ट करैत अछि (51)?

- (A) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि
- (B) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध
- (C) केवल ध्वनि नियम
- (D) अर्थ समाप्ति

६५२. मैथिली सन्दर्भमे क्षेत्रीय रूप कोन बात स्पष्ट करैत अछि (52)?

- (A) भाषाहीनता
- (B) एके शब्दक मृत्यु
- (C) चित्र-अक्षर
- (D) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप

६५३. मैथिली सन्दर्भमे सामाजिक बोली कोन बात स्पष्ट करैत अछि (53)?

- (A) धातुक बर्तन
- (B) मृत लिपि
- (C) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप
- (D) केवल नदीक धारा

६५४. मैथिली सन्दर्भमे द्विभाषिकता कोन बात स्पष्ट करैत अछि (54)?

- (A) केवल लिपि-रंग
- (B) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान
- (C) भाषाक पूर्ण निषेध
- (D) मौन-पालन

६५५. मैथिली सन्दर्भमे कोड-परिवर्तन कोन बात स्पष्ट करैत अछि (55)?

- (A) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग
- (B) अर्थक पूर्ण अभाव
- (C) कागजक रंग
- (D) ध्वनिहीनता

६५६. मैथिली सन्दर्भमे प्रतिष्ठित रूप कोन बात स्पष्ट करैत अछि (56)?

- (A) सदैव वैज्ञानिक रूपेँ श्रेष्ठ
- (B) भाषा नहि
- (C) अर्थहीन स्वर
- (D) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप

६५७. मैथिली सन्दर्भमे लोकबोली कोन बात स्पष्ट करैत अछि (57)?

- (A) कठोर मौन
- (B) चित्रमात्र
- (C) जनजीवनक सहज भाषा-रूप
- (D) केवल राजकीय आदेश

६५८. मैथिली सन्दर्भमे भाषिक निरन्तरता कोन बात स्पष्ट करैत अछि (58)?

- (A) ध्वनि-विहीनता
- (B) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता
- (C) अचानक पूर्ण अलगाव
- (D) शब्दक मृत्यु

६५९. मैथिली सन्दर्भमे लेखन-परम्परा कोन बात स्पष्ट करैत अछि (59)?

- (A) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन
- (B) केवल चित्रक रंग
- (C) वस्त्रक नाम
- (D) मौन संकेत

६६०. मैथिली सन्दर्भमे शिक्षा कोन बात स्पष्ट करैत अछि (60)?

- (A) भाषा नष्ट करब
- (B) केवल व्यक्तिगत ध्वनि
- (C) सामाजिक मौन
- (D) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम

६६१. भाषा-बोली विवादमे भाषाक भूमिका की अछि (61)?

- (A) व्यक्तिगत संकेत
- (B) अर्थहीन रेखा
- (C) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था
- (D) केवल एक ध्वनि

६६२. भाषा-बोली विवादमे बोलीक भूमिका की अछि (62)?

- (A) राजकीय कर मात्र
- (B) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप
- (C) पूर्णतः मौन
- (D) केवल लिपिक नाम

६६३. भाषा-बोली विवादमे परस्पर बोधगम्यताक भूमिका की अछि (63)?

- (A) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (B) कागजक मोटाई
- (C) शब्दक रंग
- (D) लिपिक आकार मात्र

६६४. भाषा-बोली विवादमे मानकीकरणक भूमिका की अछि (64)?

- (A) सभी रूप नष्ट करब
- (B) केवल निजी मजाक
- (C) ध्वनि रोकब
- (D) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ

६६५. भाषा-बोली विवादमे साहित्यिक भूमिका की अछि (65)?

- (A) मौन-चित्र
- (B) केवल गणना
- (C) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्त्वपूर्ण आधार
- (D) भाषा-विरोधी क्रिया

६६६. भाषा-बोली विवादमे राजनीतिक पक्षक भूमिका की अछि (66)?

- (A) अर्थ समाप्ति
- (B) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि
- (C) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध
- (D) केवल ध्वनि नियम

६६७. भाषा-बोली विवादमे क्षेत्रीय रूपक भूमिका की अछि (67)?

- (A) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (B) भाषाहीनता
- (C) एके शब्दक मृत्यु
- (D) चित्र-अक्षर

६६८. भाषा-बोली विवादमे सामाजिक बोलीक भूमिका की अछि (68)?

- (A) केवल नदीक धारा
- (B) धातुक बर्तन
- (C) मृत लिपि
- (D) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप

६६९. भाषा-बोली विवादमे द्विभाषिकताक भूमिका की अछि (69)?

- (A) मौन-पालन
- (B) केवल लिपि-रंग
- (C) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान
- (D) भाषाक पूर्ण निषेध

६७०. भाषा-बोली विवादमे कोड-परिवर्तनक भूमिका की अछि (70)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग
- (C) अर्थक पूर्ण अभाव
- (D) कागजक रंग

६७१. भाषा-बोली विवादमे प्रतिष्ठित रूपक भूमिका की अछि (71)?

- (A) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप
- (B) सदैव वैज्ञानिक रूपेँ श्रेष्ठ
- (C) भाषा नहि
- (D) अर्थहीन स्वर

६७२. भाषा-बोली विवादमे लोकबोलीक भूमिका की अछि (72)?

- (A) केवल राजकीय आदेश
- (B) कठोर मौन
- (C) चित्रमात्र
- (D) जनजीवनक सहज भाषा-रूप

६७३. भाषा-बोली विवादमे भाषिक निरन्तरताक भूमिका की अछि (73)?

- (A) शब्दक मृत्यु
- (B) ध्वनि-विहीनता
- (C) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता
- (D) अचानक पूर्ण अलगाव

६७४. भाषा-बोली विवादमे लेखन-परम्पराक भूमिका की अछि (74)?

- (A) मौन संकेत
- (B) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन
- (C) केवल चित्रक रंग
- (D) वस्त्रक नाम

६७५. भाषा-बोली विवादमे शिक्षाक भूमिका की अछि (75)?

- (A) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम
- (B) भाषा नष्ट करब
- (C) केवल व्यक्तिगत ध्वनि
- (D) सामाजिक मौन

६७६. नीचाँकमे भाषाक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (76)?

- (A) केवल एक ध्वनि
- (B) व्यक्तिगत संकेत
- (C) अर्थहीन रेखा
- (D) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था

६७७. नीचाँकमे बोलीक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (77)?

- (A) केवल लिपिक नाम
- (B) राजकीय कर मात्र
- (C) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप
- (D) पूर्णतः मौन

६७८. नीचाँकमे परस्पर बोधगम्यताक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (78)?

- (A) लिपिक आकार मात्र
- (B) दुई रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (C) कागजक मोटाई
- (D) शब्दक रंग

६७९. नीचाँकमे मानकीकरणक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (79)?

- (A) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ
- (B) सभी रूप नष्ट करब
- (C) केवल निजी मजाक
- (D) ध्वनि रोकब

६८०. नीचाँकमे साहित्यक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (80)?

- (A) भाषा-विरोधी क्रिया
- (B) मौन-चित्र
- (C) केवल गणना
- (D) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार

६८१. नीचाँकमे राजनीतिक पक्षक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (81)?

- (A) केवल ध्वनि नियम
- (B) अर्थ समाप्ति
- (C) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि
- (D) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध

६८२. नीचाँकमे क्षेत्रीय रूपक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (82)?

- (A) चित्र-अक्षर
- (B) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (C) भाषाहीनता
- (D) एके शब्दक मृत्यु

६८३. नीचाँकमे सामाजिक बोलीक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (83)?

- (A) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप
- (B) केवल नदीक धारा
- (C) धातुक बर्तन
- (D) मृत लिपि

६८४. नीचाँकमे द्विभाषिकताक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (84)?

- (A) भाषाक पूर्ण निषेध
- (B) मौन-पालन
- (C) केवल लिपि-रंग
- (D) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान

६८५. नीचाँकमे कोड-परिवर्तनक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (85)?

- (A) कागजक रंग
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग
- (D) अर्थक पूर्ण अभाव

६८६. नीचाँकमे प्रतिष्ठित रूपक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (86)?

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप
- (C) सदैव वैज्ञानिक रूपँ श्रेष्ठ
- (D) भाषा नहि

६८७. नीचाँकमे लोकबोलीक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (87)?

- (A) जनजीवनक सहज भाषा-रूप
- (B) केवल राजकीय आदेश
- (C) कठोर मौन
- (D) चित्रमात्र

६८८. नीचाँकमे भाषिक निरन्तरताक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (88)?

- (A) अचानक पूर्ण अलगाव
- (B) शब्दक मृत्यु
- (C) ध्वनि-विहीनता
- (D) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता

६८९. नीचाँकमे लेखन-परम्पराक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (89)?

- (A) वस्त्रक नाम
- (B) मौन संकेत
- (C) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन
- (D) केवल चित्रक रंग

६९०. नीचाँकमे शिक्षाक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (90)?

- (A) सामाजिक मौन
- (B) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम
- (C) भाषा नष्ट करब
- (D) केवल व्यक्तिगत ध्वनि

६९१. भाषाक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (91)

- (A) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था
- (B) केवल एक ध्वनि
- (C) व्यक्तिगत संकेत
- (D) अर्थहीन रेखा

६९२. बोलीक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (92)

- (A) पूर्णतः मौन
- (B) केवल लिपिक नाम
- (C) राजकीय कर मात्र
- (D) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप

६९३. परस्पर बोधगम्यताक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (93)

- (A) शब्दक रंग
- (B) लिपिक आकार मात्र
- (C) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि
- (D) कागजक मोटाइ

६९४. मानकीकरणक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (94)

- (A) ध्वनि रोकब
- (B) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बननाइ
- (C) सभी रूप नष्ट करब
- (D) केवल निजी मजाक

६९५. साहित्यक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (95)

- (A) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार
- (B) भाषा-विरोधी क्रिया
- (C) मौन-चित्र
- (D) केवल गणना

६९६. राजनीतिक पक्षक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (96)

- (A) भाषासँ राजनीति असम्बद्ध
- (B) केवल ध्वनि नियम
- (C) अर्थ समाप्ति
- (D) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि

६९७. क्षेत्रीय रूपक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (97)

- (A) एके शब्दक मृत्यु
- (B) चित्र-अक्षर
- (C) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप
- (D) भाषाहीनता

६९८. सामाजिक बोलीक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (98)

- (A) मृत लिपि
- (B) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप
- (C) केवल नदीक धारा
- (D) धातुक बर्तन

६९९. द्विभाषिकताक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (99)

- (A) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान
- (B) भाषाक पूर्ण निषेध
- (C) मौन-पालन
- (D) केवल लिपि-रंग

७००. कोड-परिवर्तनक परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (100)

- (A) अर्थक पूर्ण अभाव
- (B) कागजक रंग
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग

७०१. तत्सम शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) ध्वनिहीन संकेत
- (B) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द
- (C) लोकमे अपने बनल शब्द
- (D) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द

७०२. तद्भव शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (B) अचानक बनल संकेत
- (C) चित्रक नाम
- (D) केवल आधुनिक विदेशी शब्द

७०३. देशज शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) राजकीय उधार मात्र
- (B) प्रत्यय-विहीन मौन
- (C) अंतरिक्षक नाम
- (D) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द

७०४. आगन्तुक शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) केवल घरेलू उपसर्ग
- (B) मृत संकेत
- (C) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द
- (D) मूल ध्वनि बिना शब्द

७०५. उपसर्गक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) चित्रक सीमा
- (B) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश
- (C) शब्दक अन्तक लय मात्र
- (D) वाक्यक विराम

७०६. प्रत्ययक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (B) आरम्भक ध्वनि मात्र
- (C) कागजक किनार
- (D) स्वर-विराम

७०७. समासक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) अर्थक पूर्ण टूटन
- (B) ध्वनि-विहीनता
- (C) केवल विराम चिह्न
- (D) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप

७०८. यौगिक शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) काक-पदचिह्न
- (B) केवल लिपि
- (C) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द
- (D) अर्थहीन शब्द

७०९. रूढ़ शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) केवल संख्यांक
- (B) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत
- (C) पूर्णतः पारदर्शी समास
- (D) नियमहीन ध्वनि

७१०. योगरूढ़ शब्दक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द
- (B) कखनो विशेष अर्थ नहि
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) मौन संकेत

७११. अर्थ-विस्तारक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) अर्थ सीमित होएब
- (B) शब्द टूटि जाएब
- (C) लिपि बदलनाइ
- (D) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब

७१२. अर्थ-संकोचक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) उच्चारण मिटाएब
- (B) लिपि बढ़ाएब
- (C) शब्दक अर्थ सीमित होएब
- (D) अर्थ व्यापक होएब

७१३. रूपकात्मक विकासक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) ध्वनि-विनाश
- (B) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ
- (C) सादृश्यक अभाव
- (D) अर्थ-निषेध

७१४. लोक-व्युत्पत्तिक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ
- (B) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची
- (C) मौन-व्यवहार
- (D) चित्रक व्याकरण

७१५. शब्द-उधारक शब्द-विकासमे अर्थ की अछि?

- (A) शब्दक निषेध
- (B) ध्वनि-मुक्ति
- (C) केवल मौन
- (D) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ

७१६. शब्दक विकासक्रममे तत्सम शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (16)?

- (A) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द
- (B) ध्वनिहीन संकेत
- (C) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द
- (D) लोकमे अपने बनल शब्द

७१७. शब्दक विकासक्रममे तद्भव शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (17)?

- (A) केवल आधुनिक विदेशी शब्द
- (B) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (C) अचानक बनल संकेत
- (D) चित्रक नाम

७१८. शब्दक विकासक्रममे देशज शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (18)?

- (A) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द
- (B) राजकीय उधार मात्र
- (C) प्रत्यय-विहीन मौन
- (D) अंतरिक्षक नाम

७१९. शब्दक विकासक्रममे आगन्तुक शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (19)?

- (A) मूल ध्वनि बिना शब्द
- (B) केवल घरेलू उपसर्ग
- (C) मृत संकेत
- (D) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द

७२०. शब्दक विकासक्रममे उपसर्ग कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (20)?

- (A) वाक्यक विराम
- (B) चित्रक सीमा
- (C) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश
- (D) शब्दक अन्तक लय मात्र

७२१. शब्दक विकासक्रममे प्रत्यय कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (21)?

- (A) स्वर-विराम
- (B) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (C) आरम्भक ध्वनि मात्र
- (D) कागजक किनार

७२२. शब्दक विकासक्रममे समास कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (22)?

- (A) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप
- (B) अर्थक पूर्ण टूटन
- (C) ध्वनि-विहीनता
- (D) केवल विराम चिह्न

७२३. शब्दक विकासक्रममे यौगिक शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (23)?

- (A) अर्थहीन शब्द
- (B) काक-पदचिह्न
- (C) केवल लिपि
- (D) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द

७२४. शब्दक विकासक्रममे रूढ़ शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (24)?

- (A) नियमहीन ध्वनि
- (B) केवल संख्यांक
- (C) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत
- (D) पूर्णतः पारदर्शी समास

७२५. शब्दक विकासक्रममे योगरूढ़ शब्द कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (25)?

- (A) मौन संकेत
- (B) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द
- (C) कखनो विशेष अर्थ नहि
- (D) अर्थ-विनाश

७२६. शब्दक विकासक्रममे अर्थ-विस्तार कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (26)?

- (A) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब
- (B) अर्थ सीमित होएब
- (C) शब्द टूटि जाएब
- (D) लिपि बदलनाइ

७२७. शब्दक विकासक्रममे अर्थ-संकोच कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (27)?

- (A) अर्थ व्यापक होएब
- (B) उच्चारण मिटाएब
- (C) लिपि बढ़ाएब
- (D) शब्दक अर्थ सीमित होएब

७२८. शब्दक विकासक्रममे रूपकात्मक विकास कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (28)?

- (A) अर्थ-निषेध
- (B) ध्वनि-विनाश
- (C) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ
- (D) सादृश्यक अभाव

७२९. शब्दक विकासक्रममे लोक-व्युत्पत्ति कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (29)?

- (A) चित्रक व्याकरण
- (B) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ
- (C) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची
- (D) मौन-व्यवहार

७३०. शब्दक विकासक्रममे शब्द-उधार कोन प्रक्रिया देखबैत अछि (30)?

- (A) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ
- (B) शब्दक निषेध
- (C) ध्वनि-मुक्ति
- (D) केवल मौन

७३१. तत्सम शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (31)

- (A) लोकमे अपने बनल शब्द
- (B) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द
- (C) ध्वनिहीन संकेत
- (D) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द

७३२. तद्भव शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (32)

- (A) चित्रक नाम
- (B) केवल आधुनिक विदेशी शब्द
- (C) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (D) अचानक बनल संकेत

७३३. देशज शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (33)

- (A) अंतरिक्षक नाम
- (B) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द
- (C) राजकीय उधार मात्र
- (D) प्रत्यय-विहीन मौन

७३४. आगन्तुक शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (34)

- (A) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द
- (B) मूल ध्वनि बिना शब्द
- (C) केवल घरेलू उपसर्ग
- (D) मृत संकेत

७३५. उपसर्ग सम्बन्धी सही कथन चुनू। (35)

- (A) शब्दक अन्तक लय मात्र
- (B) वाक्यक विराम
- (C) चित्रक सीमा
- (D) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश

७३६. प्रत्यय सम्बन्धी सही कथन चुनू। (36)

- (A) कागजक किनार
- (B) स्वर-विराम
- (C) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (D) आरम्भक ध्वनि मात्र

७३७. समास सम्बन्धी सही कथन चुनू। (37)

- (A) केवल विराम चिह्न
- (B) दुड़ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप
- (C) अर्थक पूर्ण टूटन
- (D) ध्वनि-विहीनता

७३८. यौगिक शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (38)

- (A) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द
- (B) अर्थहीन शब्द
- (C) काक-पदचिह्न
- (D) केवल लिपि

७३९. रूढ़ शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (39)

- (A) पूर्णतः पारदर्शी समास
- (B) नियमहीन ध्वनि
- (C) केवल संख्यांक
- (D) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत

७४०. योगरूढ़ शब्द सम्बन्धी सही कथन चुनू। (40)

- (A) अर्थ-विनाश
- (B) मौन संकेत
- (C) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द
- (D) कखनो विशेष अर्थ नहि

७४१. अर्थ-विस्तार सम्बन्धी सही कथन चुनू। (41)

- (A) लिपि बदलनाइ
- (B) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब
- (C) अर्थ सीमित होएब
- (D) शब्द टूटि जाएब

७४२. अर्थ-संकोच सम्बन्धी सही कथन चुनू। (42)

- (A) शब्दक अर्थ सीमित होएब
- (B) अर्थ व्यापक होएब
- (C) उच्चारण मिटाएब
- (D) लिपि बढ़ाएब

७४३. रूपकात्मक विकास सम्बन्धी सही कथन चुनू। (43)

- (A) सादृश्यक अभाव
- (B) अर्थ-निषेध
- (C) ध्वनि-विनाश
- (D) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ

७४४. लोक-व्युत्पत्ति सम्बन्धी सही कथन चुनू। (44)

- (A) मौन-व्यवहार
- (B) चित्रक व्याकरण
- (C) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ
- (D) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची

७४५. शब्द-उधार सम्बन्धी सही कथन चुनू। (45)

- (A) केवल मौन
- (B) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ
- (C) शब्दक निषेध
- (D) ध्वनि-मुक्ति

७४६. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल तत्सम शब्द किएक जरूरी अछि (46)?

- (A) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द
- (B) लोकमे अपने बनल शब्द
- (C) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द
- (D) ध्वनिहीन संकेत

७४७. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल तद्भव शब्द किएक जरूरी अछि (47)?

- (A) अचानक बनल संकेत
- (B) चित्रक नाम
- (C) केवल आधुनिक विदेशी शब्द
- (D) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप

७४८. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल देशज शब्द किएक जरूरी अछि (48)?

- (A) प्रत्यय-विहीन मौन
- (B) अंतरिक्षक नाम
- (C) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द
- (D) राजकीय उधार मात्र

७४९. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल आगन्तुक शब्द किएक जरूरी अछि (49)?

- (A) मृत संकेत
- (B) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द
- (C) मूल ध्वनि बिना शब्द
- (D) केवल घरेलू उपसर्ग

७५०. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल उपसर्ग किएक जरूरी अछि (50)?

- (A) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश
- (B) शब्दक अन्तक लय मात्र
- (C) वाक्यक विराम
- (D) चित्रक सीमा

७५१. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल प्रत्यय किएक जरूरी अछि (51)?

- (A) आरम्भक ध्वनि मात्र
- (B) कागजक किनार
- (C) स्वर-विराम
- (D) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश

७५२. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल समास किएक जरूरी अछि (52)?

- (A) ध्वनि-विहीनता
- (B) केवल विराम चिह्न
- (C) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप
- (D) अर्थक पूर्ण टूटन

७५३. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल यौगिक शब्द किएक जरूरी अछि (53)?

- (A) केवल लिपि
- (B) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द
- (C) अर्थहीन शब्द
- (D) काक-पदचिह्न

७५४. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल रूढ़ शब्द किएक जरूरी अछि (54)?

- (A) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत
- (B) पूर्णतः पारदर्शी समास
- (C) नियमहीन ध्वनि
- (D) केवल संख्यांक

७५५. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल योगरूढ़ शब्द किएक जरूरी अछि (55)?

- (A) कखनो विशेष अर्थ नहि
- (B) अर्थ-विनाश
- (C) मौन संकेत
- (D) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द

७५६. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल अर्थ-विस्तार किएक जरूरी अछि (56)?

- (A) शब्द टूटि जाएब
- (B) लिपि बदलनाइ
- (C) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब
- (D) अर्थ सीमित होएब

७५७. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल अर्थ-संकोच किएक जरूरी अछि (57)?

- (A) लिपि बढ़ाएब
- (B) शब्दक अर्थ सीमित होएब
- (C) अर्थ व्यापक होएब
- (D) उच्चारण मिटाएब

७५८. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल रूपकात्मक विकास किएक जरूरी अछि (58)?

- (A) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ
- (B) सादृश्यक अभाव
- (C) अर्थ-निषेध
- (D) ध्वनि-विनाश

७५९. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल लोक-व्युत्पत्ति किएक जरूरी अछि (59)?

- (A) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची
- (B) मौन-व्यवहार
- (C) चित्रक व्याकरण
- (D) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ

७६०. मैथिली शब्द-भण्डार बुझबाक लेल शब्द-उधार किएक जरूरी अछि (60)?

- (A) ध्वनि-मुक्ति
- (B) केवल मौन
- (C) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ
- (D) शब्दक निषेध

७६१. तत्सम शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (61)?

- (A) ध्वनिहीन संकेत
- (B) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द
- (C) लोकमे अपने बनल शब्द
- (D) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द

७६२. तद्भव शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (62)?

- (A) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (B) अचानक बनल संकेत
- (C) चित्रक नाम
- (D) केवल आधुनिक विदेशी शब्द

७६३. देशज शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (63)?

- (A) राजकीय उधार मात्र
- (B) प्रत्यय-विहीन मौन
- (C) अंतरिक्षक नाम
- (D) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द

७६४. आगन्तुक शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (64)?

- (A) केवल घरेलू उपसर्ग
- (B) मृत संकेत
- (C) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द
- (D) मूल ध्वनि बिना शब्द

७६५. उपसर्गक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (65)?

- (A) चित्रक सीमा
- (B) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश
- (C) शब्दक अन्तक लय मात्र
- (D) वाक्यक विराम

७६६. प्रत्ययक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (66)?

- (A) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (B) आरम्भक ध्वनि मात्र
- (C) कागजक किनार
- (D) स्वर-विराम

७६७. समासक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (67)?

- (A) अर्थक पूर्ण टूटन
- (B) ध्वनि-विहीनता
- (C) केवल विराम चिह्न
- (D) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप

७६८. यौगिक शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (68)?

- (A) काक-पदचिह्न
- (B) केवल लिपि
- (C) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द
- (D) अर्थहीन शब्द

७६९. रूढ़ शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (69)?

- (A) केवल संख्यांक
- (B) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत
- (C) पूर्णतः पारदर्शी समास
- (D) नियमहीन ध्वनि

७७०. योगरूढ़ शब्दक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (70)?

- (A) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द
- (B) कखनो विशेष अर्थ नहि
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) मौन संकेत

७७१. अर्थ-विस्तारक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (71)?

- (A) अर्थ सीमित होएब
- (B) शब्द टूटि जाएब
- (C) लिपि बदलनाइ
- (D) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब

७७२. अर्थ-संकोचक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (72)?

- (A) उच्चारण मिटाएब
- (B) लिपि बढ़ाएब
- (C) शब्दक अर्थ सीमित होएब
- (D) अर्थ व्यापक होएब

७७३. रूपकात्मक विकासक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (73)?

- (A) ध्वनि-विनाश
- (B) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ
- (C) सादृश्यक अभाव
- (D) अर्थ-निषेध

७७४. लोक-व्युत्पत्तिक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (74)?

- (A) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ
- (B) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची
- (C) मौन-व्यवहार
- (D) चित्रक व्याकरण

७७५. शब्द-उधारक उपयुक्त व्याख्या कोन अछि (75)?

- (A) शब्दक निषेध
- (B) ध्वनि-मुक्ति
- (C) केवल मौन
- (D) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ

७७६. भाषाविज्ञानमे तत्सम शब्दक भूमिका की अछि (76)?

- (A) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द
- (B) ध्वनिहीन संकेत
- (C) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द
- (D) लोकमे अपने बनल शब्द

७७७. भाषाविज्ञानमे तद्भव शब्दक भूमिका की अछि (77)?

- (A) केवल आधुनिक विदेशी शब्द
- (B) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (C) अचानक बनल संकेत
- (D) चित्रक नाम

७७८. भाषाविज्ञानमे देशज शब्दक भूमिका की अछि (78)?

- (A) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द
- (B) राजकीय उधार मात्र
- (C) प्रत्यय-विहीन मौन
- (D) अंतरिक्षक नाम

७७९. भाषाविज्ञानमे आगन्तुक शब्दक भूमिका की अछि (79)?

- (A) मूल ध्वनि बिना शब्द
- (B) केवल घरेलू उपसर्ग
- (C) मृत संकेत
- (D) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द

७८०. भाषाविज्ञानमे उपसर्गक भूमिका की अछि (80)?

- (A) वाक्यक विराम
- (B) चित्रक सीमा
- (C) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश
- (D) शब्दक अन्तक लय मात्र

७८१. भाषाविज्ञानमे प्रत्ययक भूमिका की अछि (81)?

- (A) स्वर-विराम
- (B) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (C) आरम्भक ध्वनि मात्र
- (D) कागजक किनार

७८२. भाषाविज्ञानमे समासक भूमिका की अछि (82)?

- (A) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप
- (B) अर्थक पूर्ण टूटन
- (C) ध्वनि-विहीनता
- (D) केवल विराम चिह्न

७८३. भाषाविज्ञानमे यौगिक शब्दक भूमिका की अछि (83)?

- (A) अर्थहीन शब्द
- (B) काक-पदचिह्न
- (C) केवल लिपि
- (D) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द

७८४. भाषाविज्ञानमे रूढ़ शब्दक भूमिका की अछि (84)?

- (A) नियमहीन ध्वनि
- (B) केवल संख्यांक
- (C) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत
- (D) पूर्णतः पारदर्शी समास

७८५. भाषाविज्ञानमे योगरूढ शब्दक भूमिका की अछि (85)?

- (A) मौन संकेत
- (B) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ भऽ गेल शब्द
- (C) कखनो विशेष अर्थ नहि
- (D) अर्थ-विनाश

७८६. भाषाविज्ञानमे अर्थ-विस्तारक भूमिका की अछि (86)?

- (A) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब
- (B) अर्थ सीमित होएब
- (C) शब्द टूटि जाएब
- (D) लिपि बदलनाइ

७८७. भाषाविज्ञानमे अर्थ-संकोचक भूमिका की अछि (87)?

- (A) अर्थ व्यापक होएब
- (B) उच्चारण मिटाएब
- (C) लिपि बढ़ाएब
- (D) शब्दक अर्थ सीमित होएब

७८८. भाषाविज्ञानमे रूपकात्मक विकासक भूमिका की अछि (88)?

- (A) अर्थ-निषेध
- (B) ध्वनि-विनाश
- (C) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ
- (D) सादृश्यक अभाव

७८९. भाषाविज्ञानमे लोक-व्युत्पत्तिक भूमिका की अछि (89)?

- (A) चित्रक व्याकरण
- (B) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ
- (C) वैज्ञानिक नियमक पूर्ण सूची
- (D) मौन-व्यवहार

७९०. भाषाविज्ञानमे शब्द-उधारक भूमिका की अछि (90)?

- (A) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ
- (B) शब्दक निषेध
- (C) ध्वनि-मुक्ति
- (D) केवल मौन

७९१. तत्सम शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (91)

- (A) लोकमे अपने बनल शब्द
- (B) दोसरा भाषासँ आयल पूर्ण विदेशी शब्द
- (C) ध्वनिहीन संकेत
- (D) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द

७९२. तद्भव शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (92)

- (A) चित्रक नाम
- (B) केवल आधुनिक विदेशी शब्द
- (C) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप
- (D) अचानक बनल संकेत

७९३. देशज शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (93)

- (A) अंतरिक्षक नाम
- (B) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द
- (C) राजकीय उधार मात्र
- (D) प्रत्यय-विहीन मौन

७९४. आगन्तुक शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (94)

- (A) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द
- (B) मूल ध्वनि बिना शब्द
- (C) केवल घरेलू उपसर्ग
- (D) मृत संकेत

७९५. उपसर्ग पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (95)

- (A) शब्दक अन्तक लय मात्र
- (B) वाक्यक विराम
- (C) चित्रक सीमा
- (D) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश

७९६. प्रत्यय पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (96)

- (A) कागजक किनार
- (B) स्वर-विराम
- (C) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश
- (D) आरम्भक ध्वनि मात्र

७९७. समास पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (97)

- (A) केवल विराम चिह्न
- (B) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप
- (C) अर्थक पूर्ण टूटन
- (D) ध्वनि-विहीनता

७९८. यौगिक शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (98)

- (A) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द
- (B) अर्थहीन शब्द
- (C) काक-पदचिह्न
- (D) केवल लिपि

७९९. रूढ़ शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (99)

- (A) पूर्णतः पारदर्शी समास
- (B) नियमहीन ध्वनि
- (C) केवल संख्यांक
- (D) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत

८००. योगरूढ़ शब्द पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर चुनू। (100)

- (A) अर्थ-विनाश
- (B) मौन संकेत
- (C) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द
- (D) कखनो विशेष अर्थ नहि

८०१. ध्वनिविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (B) समाजक कर-व्यवस्था
- (C) चित्रकला इतिहास
- (D) कृषि-विज्ञान

८०२. ध्वनिमविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) केवल धातु-विज्ञान
- (B) वर्णक रंग
- (C) नाटकक भूमिका
- (D) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन

८०३. रूपविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) चित्रक रेखा
- (B) लोकगीतक ताल
- (C) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन
- (D) नदीक बहाव

८०४. वाक्यविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) कृषि-कर्म
- (B) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (C) केवल धातु-संग्रह
- (D) रंगोली

८०५. अर्थविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (B) भोजनक रस
- (C) वस्त्रक बुनाई
- (D) अक्षरक रंग

८०६. प्रयोगविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) केवल शब्दकोश
- (B) ध्वनिक लम्बाई
- (C) चित्रक आकार
- (D) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन

८०७. समाजभाषाविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) चन्द्र-गति
- (B) मूर्तिकला
- (C) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन
- (D) केवल वनस्पति-विज्ञान

८०८. ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) केवल रंग
- (B) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन
- (C) एक क्षणक ध्वनि
- (D) अविकारी संकेत

८०९. तुलनात्मक भाषाविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (B) एकभाषिक मौन
- (C) मूर्ति-मापन
- (D) लिपि-मिटाव

८१०. भाषा-नीतिक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (B) कृषि-सिंचाई
- (C) कथा-पात्र
- (D) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन

८११. मानकीकरण अध्ययनक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) व्यक्तिगत चुप्पी
- (B) अर्थ-विनाश
- (C) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता
- (D) भाषा-अस्वीकार

८१२. क्षेत्र-अध्ययनक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) मौन प्रयोग
- (B) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन
- (C) कागज देखिक अनुमान मात्र
- (D) घंटी बाजेब

८१३. शब्दकोश-विज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति
- (B) केवल गीत-ताल
- (C) धातु-कर्म
- (D) मूर्ति-विन्यास

८१४. लिपिविज्ञानक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) मौखिक ध्वनि मात्र
- (B) कृषि-उत्पादन
- (C) रंगक स्वाद
- (D) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन

८१५. भाषा-अधिग्रहणक अध्ययन-विषय की अछि?

- (A) मूर्ति-पूजा
- (B) कथा-संग्रह मात्र
- (C) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन
- (D) भाषाक अन्त

८१६. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ ध्वनिविज्ञान कोन बात देखैत अछि (16)?

- (A) कृषि-विज्ञान
- (B) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (C) समाजक कर-व्यवस्था
- (D) चित्रकला इतिहास

८१७. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ ध्वनिमविज्ञान कोन बात देखैत अछि (17)?

- (A) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन
- (B) केवल धातु-विज्ञान
- (C) वर्णक रंग
- (D) नाटकक भूमिका

८१८. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ रूपविज्ञान कोन बात देखैत अछि (18)?

- (A) नदीक बहाव
- (B) चित्रक रेखा
- (C) लोकगीतक ताल
- (D) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन

८१९. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ वाक्यविज्ञान कोन बात देखैत अछि (19)?

- (A) रंगोली
- (B) कृषि-कर्म
- (C) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (D) केवल धातु-संग्रह

८२०. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ अर्थविज्ञान कोन बात देखैत अछि (20)?

- (A) अक्षरक रंग
- (B) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (C) भोजनक रस
- (D) वस्त्रक बुनाई

८२१. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ प्रयोगविज्ञान कोन बात देखैत अछि (21)?

- (A) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन
- (B) केवल शब्दकोश
- (C) ध्वनिक लम्बाई
- (D) चित्रक आकार

८२२. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ समाजभाषाविज्ञान कोन बात देखैत अछि (22)?

- (A) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (B) चन्द्र-गति
- (C) मूर्तिकला
- (D) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन

८२३. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ ऐतिहासिक भाषाविज्ञान कोन बात देखैत अछि (23)?

- (A) अविकारी संकेत
- (B) केवल रंग
- (C) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन
- (D) एक क्षणक ध्वनि

८२४. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ तुलनात्मक भाषाविज्ञान कोन बात देखैत अछि (24)?

- (A) लिपि-मिटाव
- (B) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (C) एकभाषिक मौन
- (D) मूर्ति-मापन

८२५. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ भाषा-नीति कोन बात देखैत अछि (25)?

- (A) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन
- (B) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (C) कृषि-सिंचाई
- (D) कथा-पात्र

८२६. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ मानकीकरण अध्ययन कोन बात देखैत अछि (26)?

- (A) भाषा-अस्वीकार
- (B) व्यक्तिगत चुप्पी
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता

८२७. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ क्षेत्र-अध्ययन कोन बात देखैत अछि (27)?

- (A) घंटी बाजेब
- (B) मौन प्रयोग
- (C) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन
- (D) कागज देखिक अनुमान मात्र

८२८. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ शब्दकोश-विज्ञान कोन बात देखैत अछि (28)?

- (A) मूर्ति-विन्यास
- (B) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति
- (C) केवल गीत-ताल
- (D) धातु-कर्म

८२९. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ लिपिविज्ञान कोन बात देखैत अछि (29)?

- (A) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन
- (B) मौखिक ध्वनि मात्र
- (C) कृषि-उत्पादन
- (D) रंगक स्वाद

८३०. भाषाविज्ञानक शाखा रूपेँ भाषा-अधिग्रहण कोन बात देखैत अछि (30)?

- (A) भाषाक अन्त
- (B) मूर्ति-पूजा
- (C) कथा-संग्रह मात्र
- (D) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन

८३१. ध्वनिविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (31)

- (A) चित्रकला इतिहास
- (B) कृषि-विज्ञान
- (C) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (D) समाजक कर-व्यवस्था

८३२. ध्वनिमविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (32)

- (A) नाटकक भूमिका
- (B) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन
- (C) केवल धातु-विज्ञान
- (D) वर्णक रंग

८३३. रूपविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (33)

- (A) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन
- (B) नदीक बहाव
- (C) चित्रक रेखा
- (D) लोकगीतक ताल

८३४. वाक्यविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (34)

- (A) केवल धातु-संग्रह
- (B) रंगोली
- (C) कृषि-कर्म
- (D) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन

८३५. अर्थविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (35)

- (A) वस्त्रक बुनाई
- (B) अक्षरक रंग
- (C) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (D) भोजनक रस

८३६. प्रयोगविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (36)

- (A) चित्रक आकार
- (B) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन
- (C) केवल शब्दकोश
- (D) ध्वनिक लम्बाई

८३७. समाजभाषाविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (37)

- (A) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन
- (B) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (C) चन्द्र-गति
- (D) मूर्तिकला

८३८. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (38)

- (A) एक क्षणक ध्वनि
- (B) अविकारी संकेत
- (C) केवल रंग
- (D) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन

८३९. तुलनात्मक भाषाविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (39)

- (A) मूर्ति-मापन
- (B) लिपि-मिटाव
- (C) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (D) एकभाषिक मौन

८४०. भाषा-नीति सम्बन्धी सही कथन चुनू। (40)

- (A) कथा-पात्र
- (B) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन
- (C) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (D) कृषि-सिंचाई

८४१. मानकीकरण अध्ययन सम्बन्धी सही कथन चुनू। (41)

- (A) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता
- (B) भाषा-अस्वीकार
- (C) व्यक्तिगत चुप्पी
- (D) अर्थ-विनाश

८४२. क्षेत्र-अध्ययन सम्बन्धी सही कथन चुनू। (42)

- (A) कागज देखिक अनुमान मात्र
- (B) घंटी बाजेब
- (C) मौन प्रयोग
- (D) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन

८४३. शब्दकोश-विज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (43)

- (A) धातु-कर्म
- (B) मूर्ति-विन्यास
- (C) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति
- (D) केवल गीत-ताल

८४४. लिपिविज्ञान सम्बन्धी सही कथन चुनू। (44)

- (A) रंगक स्वाद
- (B) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन
- (C) मौखिक ध्वनि मात्र
- (D) कृषि-उत्पादन

८४५. भाषा-अधिग्रहण सम्बन्धी सही कथन चुनू। (45)

- (A) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन
- (B) भाषाक अन्त
- (C) मूर्ति-पूजा
- (D) कथा-संग्रह मात्र

८४६. मैथिली अध्ययनमे ध्वनिविज्ञानक उपयोग की अछि (46)?

- (A) समाजक कर-व्यवस्था
- (B) चित्रकला इतिहास
- (C) कृषि-विज्ञान
- (D) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन

८४७. मैथिली अध्ययनमे ध्वनिमविज्ञानक उपयोग की अछि (47)?

- (A) वर्णक रंग
- (B) नाटकक भूमिका
- (C) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन
- (D) केवल धातु-विज्ञान

८४८. मैथिली अध्ययनमे रूपविज्ञानक उपयोग की अछि (48)?

- (A) लोकगीतक ताल
- (B) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन
- (C) नदीक बहाव
- (D) चित्रक रेखा

८४९. मैथिली अध्ययनमे वाक्यविज्ञानक उपयोग की अछि (49)?

- (A) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (B) केवल धातु-संग्रह
- (C) रंगोली
- (D) कृषि-कर्म

८५०. मैथिली अध्ययनमे अर्थविज्ञानक उपयोग की अछि (50)?

- (A) भोजनक रस
- (B) वस्त्रक बुनाई
- (C) अक्षरक रंग
- (D) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन

८५१. मैथिली अध्ययनमे प्रयोगविज्ञानक उपयोग की अछि (51)?

- (A) ध्वनिक लम्बाई
- (B) चित्रक आकार
- (C) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन
- (D) केवल शब्दकोश

८५२. मैथिली अध्ययनमे समाजभाषाविज्ञानक उपयोग की अछि (52)?

- (A) मूर्तिकला
- (B) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन
- (C) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (D) चन्द्र-गति

८५३. मैथिली अध्ययनमे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक उपयोग की अछि (53)?

- (A) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन
- (B) एक क्षणक ध्वनि
- (C) अविकारी संकेत
- (D) केवल रंग

८५४. मैथिली अध्ययनमे तुलनात्मक भाषाविज्ञानक उपयोग की अछि (54)?

- (A) एकभाषिक मौन
- (B) मूर्ति-मापन
- (C) लिपि-मिटाव
- (D) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन

८५५. मैथिली अध्ययनमे भाषा-नीतिक उपयोग की अछि (55)?

- (A) कृषि-सिंचाई
- (B) कथा-पात्र
- (C) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन
- (D) ध्वनि-उच्चारण मात्र

८५६. मैथिली अध्ययनमे मानकीकरण अध्ययनक उपयोग की अछि (56)?

- (A) अर्थ-विनाश
- (B) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता
- (C) भाषा-अस्वीकार
- (D) व्यक्तिगत चुप्पी

८५७. मैथिली अध्ययनमे क्षेत्र-अध्ययनक उपयोग की अछि (57)?

- (A) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन
- (B) कागज देखिक अनुमान मात्र
- (C) घंटी बाजेब
- (D) मौन प्रयोग

८५८. मैथिली अध्ययनमे शब्दकोश-विज्ञानक उपयोग की अछि (58)?

- (A) केवल गीत-ताल
- (B) धातु-कर्म
- (C) मूर्ति-विन्यास
- (D) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति

८५९. मैथिली अध्ययनमे लिपिविज्ञानक उपयोग की अछि (59)?

- (A) कृषि-उत्पादन
- (B) रंगक स्वाद
- (C) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन
- (D) मौखिक ध्वनि मात्र

८६०. मैथिली अध्ययनमे भाषा-अधिग्रहणक उपयोग की अछि (60)?

- (A) कथा-संग्रह मात्र
- (B) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन
- (C) भाषाक अन्त
- (D) मूर्ति-पूजा

८६१. ध्वनिविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (61)?

- (A) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (B) समाजक कर-व्यवस्था
- (C) चित्रकला इतिहास
- (D) कृषि-विज्ञान

८६२. ध्वनिमविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (62)?

- (A) केवल धातु-विज्ञान
- (B) वर्णक रंग
- (C) नाटकक भूमिका
- (D) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन

८६३. रूपविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (63)?

- (A) चित्रक रेखा
- (B) लोकगीतक ताल
- (C) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन
- (D) नदीक बहाव

८६४. वाक्यविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (64)?

- (A) कृषि-कर्म
- (B) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (C) केवल धातु-संग्रह
- (D) रंगोली

८६५. अर्थविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (65)?

- (A) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (B) भोजनक रस
- (C) वस्त्रक बुनाई
- (D) अक्षरक रंग

८६६. प्रयोगविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (66)?

- (A) केवल शब्दकोश
- (B) ध्वनिक लम्बाई
- (C) चित्रक आकार
- (D) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन

८६७. समाजभाषाविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (67)?

- (A) चन्द्र-गति
- (B) मूर्तिकला
- (C) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन
- (D) केवल वनस्पति-विज्ञान

८६८. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (68)?

- (A) केवल रंग
- (B) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन
- (C) एक क्षणक ध्वनि
- (D) अविकारी संकेत

८६९. तुलनात्मक भाषाविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (69)?

- (A) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (B) एकभाषिक मौन
- (C) मूर्ति-मापन
- (D) लिपि-मिटाव

८७०. भाषा-नीति पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (70)?

- (A) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (B) कृषि-सिंचाई
- (C) कथा-पात्र
- (D) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन

८७१. मानकीकरण अध्ययन पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (71)?

- (A) व्यक्तिगत चुप्पी
- (B) अर्थ-विनाश
- (C) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता
- (D) भाषा-अस्वीकार

८७२. क्षेत्र-अध्ययन पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (72)?

- (A) मौन प्रयोग
- (B) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन
- (C) कागज देखिक अनुमान मात्र
- (D) घंटी बाजेब

८७३. शब्दकोश-विज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (73)?

- (A) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति
- (B) केवल गीत-ताल
- (C) धातु-कर्म
- (D) मूर्ति-विन्यास

८७४. लिपिविज्ञान पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (74)?

- (A) मौखिक ध्वनि मात्र
- (B) कृषि-उत्पादन
- (C) रंगक स्वाद
- (D) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन

८७५. भाषा-अधिग्रहण पर परीक्षा-दृष्टि सँ सही उत्तर कोन अछि (75)?

- (A) मूर्ति-पूजा
- (B) कथा-संग्रह मात्र
- (C) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन
- (D) भाषाक अन्त

८७६. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे ध्वनिविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (76)?

- (A) कृषि-विज्ञान
- (B) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (C) समाजक कर-व्यवस्था
- (D) चित्रकला इतिहास

८७७. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे ध्वनिमविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (77)?

- (A) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन
- (B) केवल धातु-विज्ञान
- (C) वर्णक रंग
- (D) नाटकक भूमिका

८७८. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे रूपविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (78)?

- (A) नदीक बहाव
- (B) चित्रक रेखा
- (C) लोकगीतक ताल
- (D) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन

८७९. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे वाक्यविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (79)?

- (A) रंगोली
- (B) कृषि-कर्म
- (C) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (D) केवल धातु-संग्रह

८८०. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे अर्थविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (80)?

- (A) अक्षरक रंग
- (B) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (C) भोजनक रस
- (D) वस्त्रक बुनाई

८८१. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे प्रयोगविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (81)?

- (A) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन
- (B) केवल शब्दकोश
- (C) ध्वनिक लम्बाई
- (D) चित्रक आकार

८८२. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे समाजभाषाविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (82)?

- (A) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (B) चन्द्र-गति
- (C) मूर्तिकला
- (D) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन

८८३. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे ऐतिहासिक भाषाविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (83)?

- (A) अविकारी संकेत
- (B) केवल रंग
- (C) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन
- (D) एक क्षणक ध्वनि

८८४. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे तुलनात्मक भाषाविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (84)?

- (A) लिपि-मिटाव
- (B) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (C) एकभाषिक मौन
- (D) मूर्ति-मापन

८८५. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे भाषा-नीति किएक महत्त्वपूर्ण अछि (85)?

- (A) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन
- (B) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (C) कृषि-सिंचाई
- (D) कथा-पात्र

८८६. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे मानकीकरण अध्ययन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (86)?

- (A) भाषा-अस्वीकार
- (B) व्यक्तिगत चुप्पी
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता

८८७. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे क्षेत्र-अध्ययन किएक महत्त्वपूर्ण अछि (87)?

- (A) घंटी बाजेब
- (B) मौन प्रयोग
- (C) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन
- (D) कागज देखिक अनुमान मात्र

८८८. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे शब्दकोश-विज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (88)?

- (A) मूर्ति-विन्यास
- (B) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति
- (C) केवल गीत-ताल
- (D) धातु-कर्म

८८९. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे लिपिविज्ञान किएक महत्त्वपूर्ण अछि (89)?

- (A) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन
- (B) मौखिक ध्वनि मात्र
- (C) कृषि-उत्पादन
- (D) रंगक स्वाद

८९०. भाषाक वैज्ञानिक अध्ययनमे भाषा-अधिग्रहण किएक महत्त्वपूर्ण अछि (90)?

- (A) भाषाक अन्त
- (B) मूर्ति-पूजा
- (C) कथा-संग्रह मात्र
- (D) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन

८९१. ध्वनिविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (91)

- (A) चित्रकला इतिहास
- (B) कृषि-विज्ञान
- (C) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन
- (D) समाजक कर-व्यवस्था

८९२. ध्वनिमविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (92)

- (A) नाटकक भूमिका
- (B) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन
- (C) केवल धातु-विज्ञान
- (D) वर्णक रंग

८९३. रूपविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (93)

- (A) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन
- (B) नदीक बहाव
- (C) चित्रक रेखा
- (D) लोकगीतक ताल

८९४. वाक्यविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (94)

- (A) केवल धातु-संग्रह
- (B) रंगोली
- (C) कृषि-कर्म
- (D) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन

८९५. अर्थविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (95)

- (A) वस्त्रक बुनाई
- (B) अक्षरक रंग
- (C) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन
- (D) भोजनक रस

८९६. प्रयोगविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (96)

- (A) चित्रक आकार
- (B) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन
- (C) केवल शब्दकोश
- (D) ध्वनिक लम्बाई

८९७. समाजभाषाविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (97)

- (A) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन
- (B) केवल वनस्पति-विज्ञान
- (C) चन्द्र-गति
- (D) मूर्तिकला

८९८. ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (98)

- (A) एक क्षणक ध्वनि
- (B) अविकारी संकेत
- (C) केवल रंग
- (D) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन

८९९. तुलनात्मक भाषाविज्ञानक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (99)

- (A) मूर्ति-मापन
- (B) लिपि-मिटाव
- (C) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन
- (D) एकभाषिक मौन

९००. भाषा-नीतिक उपयुक्त परिभाषा चुनू। (100)

- (A) कथा-पात्र
- (B) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन
- (C) ध्वनि-उच्चारण मात्र
- (D) कृषि-सिंचाई

९०१. सही जोड़ी चुनू: भाषा — ?

- (A) मौन चित्र
- (B) केवल राजकीय कागज
- (C) धातु-चिह्न
- (D) सामाजिक संकेत-प्रणाली

९०२. सही जोड़ी चुनू: बोली — ?

- (A) मौन-पत्र
- (B) लिपि-विनाश
- (C) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप
- (D) अर्थहीन शोर

९०३. सही जोड़ी चुनू: मैथिली — ?

- (A) केवल विदेशी संकेत
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (C) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (D) चित्रलिपि मात्र

९०४. सही जोड़ी चुनू: तत्सम — ?

- (A) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (B) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द
- (C) विदेशी उधार
- (D) मौन संकेत

९०५. सही जोड़ी चुनू: तद्भव — ?

- (A) अपरिवर्तित तत्सम
- (B) विदेशी चिह्न
- (C) चित्रक नाम
- (D) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द

९०६. सही जोड़ी चुनू: देशज — ?

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) लिपिक रंग
- (C) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द
- (D) राजकीय उधार

९०७. सही जोड़ी चुनू: आगन्तुक — ?

- (A) चित्रक आकार
- (B) दोसरा भाषासँ आयल शब्द
- (C) अपन धातु-सूची
- (D) मौन प्रयोग

९०८. सही जोड़ी चुनू: ध्वनिविज्ञान — ?

- (A) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (B) कृषि-पद्धति
- (C) मूर्ति-सज्जा
- (D) कथा-काल

९०९. सही जोड़ी चुनू: रूपविज्ञान — ?

- (A) नदी-नाप
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) सामाजिक कर
- (D) शब्दरचनाक अध्ययन

९१०. सही जोड़ी चुनू: वाक्यविज्ञान — ?

- (A) धातु-पात्र
- (B) नृत्य-ताल
- (C) वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (D) चित्र-विन्यास

९११. सही जोड़ी चुनू: अर्थविज्ञान — ?

- (A) शिल्पक इतिहास
- (B) अर्थक अध्ययन
- (C) रंगक अध्ययन
- (D) कृषि-उत्पादन

९१२. सही जोड़ी चुनू: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान — ?

- (A) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन
- (B) क्षणिक मौन
- (C) केवल रंग
- (D) धातु-रूप

९१३. सही जोड़ी चुनू: तुलनात्मक पद्धति — ?

- (A) एकभाषिक मौन
- (B) अर्थ-विनाश
- (C) मूर्तिकला
- (D) भाषासभक तुलना

९१४. सही जोड़ी चुनू: मानकीकरण — ?

- (A) मौन-साधना
- (B) व्यक्तिगत शोर
- (C) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया
- (D) भाषा-विरोध

९१५. सही जोड़ी चुनू: भाषोत्पत्ति — ?

- (A) एकल शब्दकोश
- (B) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार
- (C) लिपिक रंग
- (D) कृषि-औजार

९१६. भाषाक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (16)?

- (A) सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (B) मौन चित्र
- (C) केवल राजकीय कागज
- (D) धातु-चिह्न

९१७. बोलीक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (17)?

- (A) अर्थहीन शोर
- (B) मौन-पत्र
- (C) लिपि-विनाश
- (D) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप

९१८. मैथिलीक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (18)?

- (A) चित्रलिपि मात्र
- (B) केवल विदेशी संकेत
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) दक्षिणी द्रविड़ भाषा

९१९. तत्समक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (19)?

- (A) मौन संकेत
- (B) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (C) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द
- (D) विदेशी उधार

९२०. तद्भवक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (20)?

- (A) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द
- (B) अपरिवर्तित तत्सम
- (C) विदेशी चिह्न
- (D) चित्रक नाम

९२१. देशजक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (21)?

- (A) राजकीय उधार
- (B) अर्थहीन स्वर
- (C) लिपिक रंग
- (D) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द

९२२. आगन्तुकक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (22)?

- (A) मौन प्रयोग
- (B) चित्रक आकार
- (C) दोसरा भाषासँ आयल शब्द
- (D) अपन धातु-सूची

९२३. ध्वनिविज्ञानक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (23)?

- (A) कथा-काल
- (B) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (C) कृषि-पद्धति
- (D) मूर्ति-सज्जा

९२४. रूपविज्ञानक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (24)?

- (A) शब्दरचनाक अध्ययन
- (B) नदी-नाप
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) सामाजिक कर

९२५. वाक्यविज्ञानक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (25)?

- (A) चित्र-विन्यास
- (B) धातु-पात्र
- (C) नृत्य-ताल
- (D) वाक्य-रचनाक अध्ययन

९२६. अर्थविज्ञानक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (26)?

- (A) कृषि-उत्पादन
- (B) शिल्पक इतिहास
- (C) अर्थक अध्ययन
- (D) रंगक अध्ययन

९२७. ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (27)?

- (A) धातु-रूप
- (B) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन
- (C) क्षणिक मौन
- (D) केवल रंग

९२८. तुलनात्मक पद्धतिक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (28)?

- (A) भाषासभक तुलना
- (B) एकभाषिक मौन
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) मूर्तिकला

९२९. मानकीकरणक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (29)?

- (A) भाषा-विरोध
- (B) मौन-साधना
- (C) व्यक्तिगत शोर
- (D) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया

९३०. भाषोत्पत्तिक सन्दर्भमे उपयुक्त उत्तर कोन अछि (30)?

- (A) कृषि-औजार
- (B) एकल शब्दकोश
- (C) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार
- (D) लिपिक रंग

९३१. कथन पूरा करू: भाषा भाषाविज्ञानमे ... (31)

- (A) धातु-चिह्न
- (B) सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (C) मौन चित्र
- (D) केवल राजकीय कागज

९३२. कथन पूरा करू: बोली भाषाविज्ञानमे ... (32)

- (A) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप
- (B) अर्थहीन शोर
- (C) मौन-पत्र
- (D) लिपि-विनाश

९३३. कथन पूरा करू: मैथिली भाषाविज्ञानमे ... (33)

- (A) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (B) चित्रलिपि मात्र
- (C) केवल विदेशी संकेत
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा

९३४. कथन पूरा करू: तत्सम भाषाविज्ञानमे ... (34)

- (A) विदेशी उधार
- (B) मौन संकेत
- (C) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (D) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द

९३५. कथन पूरा करू: तद्भव भाषाविज्ञानमे ... (35)

- (A) चित्रक नाम
- (B) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द
- (C) अपरिवर्तित तत्सम
- (D) विदेशी चिह्न

९३६. कथन पूरा करू: देशज भाषाविज्ञानमे ... (36)

- (A) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द
- (B) राजकीय उधार
- (C) अर्थहीन स्वर
- (D) लिपिक रंग

९३७. कथन पूरा करु: आगन्तुक भाषाविज्ञानमे ... (37)

- (A) अपन धातु-सूची
- (B) मौन प्रयोग
- (C) चित्रक आकार
- (D) दोसरा भाषासँ आयल शब्द

९३८. कथन पूरा करु: ध्वनिविज्ञान भाषाविज्ञानमे ... (38)

- (A) मूर्ति-सज्जा
- (B) कथा-काल
- (C) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (D) कृषि-पद्धति

९३९. कथन पूरा करु: रूपविज्ञान भाषाविज्ञानमे ... (39)

- (A) सामाजिक कर
- (B) शब्दरचनाक अध्ययन
- (C) नदी-नाप
- (D) ध्वनिहीनता

९४०. कथन पूरा करु: वाक्यविज्ञान भाषाविज्ञानमे ... (40)

- (A) वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (B) चित्र-विन्यास
- (C) धातु-पात्र
- (D) नृत्य-ताल

९४१. कथन पूरा करु: अर्थविज्ञान भाषाविज्ञानमे ... (41)

- (A) रंगक अध्ययन
- (B) कृषि-उत्पादन
- (C) शिल्पक इतिहास
- (D) अर्थक अध्ययन

९४२. कथन पूरा करु: ऐतिहासिक भाषाविज्ञान भाषाविज्ञानमे ... (42)

- (A) केवल रंग
- (B) धातु-रूप
- (C) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन
- (D) क्षणिक मौन

९४३. कथन पूरा करु: तुलनात्मक पद्धति भाषाविज्ञानमे ... (43)

- (A) मूर्तिकला
- (B) भाषासभक तुलना
- (C) एकभाषिक मौन
- (D) अर्थ-विनाश

९४४. कथन पूरा करु: मानकीकरण भाषाविज्ञानमे ... (44)

- (A) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया
- (B) भाषा-विरोध
- (C) मौन-साधना
- (D) व्यक्तिगत शोर

९४५. कथन पूरा करु: भाषोत्पत्ति भाषाविज्ञानमे ... (45)

- (A) लिपिक रंग
- (B) कृषि-औजार
- (C) एकल शब्दकोश
- (D) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार

९४६. नीचाँकमे भाषाक सही परिभाषा कोन अछि (46)?

- (A) केवल राजकीय कागज
- (B) धातु-चिह्न
- (C) सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (D) मौन चित्र

९४७. नीचाँकमे बोलीक सही परिभाषा कोन अछि (47)?

- (A) लिपि-विनाश
- (B) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप
- (C) अर्थहीन शोर
- (D) मौन-पत्र

९४८. नीचाँकमे मैथिलीक सही परिभाषा कोन अछि (48)?

- (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (B) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (C) चित्रलिपि मात्र
- (D) केवल विदेशी संकेत

९४९. नीचाँकमे तत्समक सही परिभाषा कोन अछि (49)?

- (A) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द
- (B) विदेशी उधार
- (C) मौन संकेत
- (D) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द

९५०. नीचाँकमे तद्भवक सही परिभाषा कोन अछि (50)?

- (A) विदेशी चिह्न
- (B) चित्रक नाम
- (C) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द
- (D) अपरिवर्तित तत्सम

९५१. नीचाँकमे देशजक सही परिभाषा कोन अछि (51)?

- (A) लिपिक रंग
- (B) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द
- (C) राजकीय उधार
- (D) अर्थहीन स्वर

९५२. नीचाँकमे आगन्तुकक सही परिभाषा कोन अछि (52)?

- (A) दोसरा भाषासँ आयल शब्द
- (B) अपन धातु-सूची
- (C) मौन प्रयोग
- (D) चित्रक आकार

१५३. नीचाँकमे ध्वनिविज्ञानक सही परिभाषा कोन अछि (53)?

- (A) कृषि-पद्धति
- (B) मूर्ति-सज्जा
- (C) कथा-काल
- (D) भाषिक ध्वनिक अध्ययन

१५४. नीचाँकमे रूपविज्ञानक सही परिभाषा कोन अछि (54)?

- (A) ध्वनिहीनता
- (B) सामाजिक कर
- (C) शब्दरचनाक अध्ययन
- (D) नदी-नाप

१५५. नीचाँकमे वाक्यविज्ञानक सही परिभाषा कोन अछि (55)?

- (A) नृत्य-ताल
- (B) वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (C) चित्र-विन्यास
- (D) धातु-पात्र

१५६. नीचाँकमे अर्थविज्ञानक सही परिभाषा कोन अछि (56)?

- (A) अर्थक अध्ययन
- (B) रंगक अध्ययन
- (C) कृषि-उत्पादन
- (D) शिल्पक इतिहास

१५७. नीचाँकमे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक सही परिभाषा कोन अछि (57)?

- (A) क्षणिक मौन
- (B) केवल रंग
- (C) धातु-रूप
- (D) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन

१५८. नीचाँकमे तुलनात्मक पद्धतिक सही परिभाषा कोन अछि (58)?

- (A) अर्थ-विनाश
- (B) मूर्तिकला
- (C) भाषासभक तुलना
- (D) एकभाषिक मौन

१५९. नीचाँकमे मानकीकरणक सही परिभाषा कोन अछि (59)?

- (A) व्यक्तिगत शोर
- (B) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया
- (C) भाषा-विरोध
- (D) मौन-साधना

१६०. नीचाँकमे भाषोत्पत्तिक सही परिभाषा कोन अछि (60)?

- (A) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार
- (B) लिपिक रंग
- (C) कृषि-औजार
- (D) एकल शब्दकोश

९६१. भाषा विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (61)

- (A) मौन चित्र
- (B) केवल राजकीय कागज
- (C) धातु-चिह्न
- (D) सामाजिक संकेत-प्रणाली

९६२. बोली विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (62)

- (A) मौन-पत्र
- (B) लिपि-विनाश
- (C) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप
- (D) अर्थहीन शोर

९६३. मैथिली विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (63)

- (A) केवल विदेशी संकेत
- (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (C) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (D) चित्रलिपि मात्र

९६४. तत्सम विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (64)

- (A) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (B) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द
- (C) विदेशी उधार
- (D) मौन संकेत

९६५. तद्भव विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (65)

- (A) अपरिवर्तित तत्सम
- (B) विदेशी चिह्न
- (C) चित्रक नाम
- (D) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द

९६६. देशज विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (66)

- (A) अर्थहीन स्वर
- (B) लिपिक रंग
- (C) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द
- (D) राजकीय उधार

९६७. आगन्तुक विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (67)

- (A) चित्रक आकार
- (B) दोसरा भाषासँ आयल शब्द
- (C) अपन धातु-सूची
- (D) मौन प्रयोग

९६८. ध्वनिविज्ञान विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (68)

- (A) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (B) कृषि-पद्धति
- (C) मूर्ति-सज्जा
- (D) कथा-काल

९६९. रूपविज्ञान विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (69)

- (A) नदी-नाप
- (B) ध्वनिहीनता
- (C) सामाजिक कर
- (D) शब्दरचनाक अध्ययन

९७०. वाक्यविज्ञान विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (70)

- (A) धातु-पात्र
- (B) नृत्य-ताल
- (C) वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (D) चित्र-विन्यास

९७१. अर्थविज्ञान विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (71)

- (A) शिल्पक इतिहास
- (B) अर्थक अध्ययन
- (C) रंगक अध्ययन
- (D) कृषि-उत्पादन

९७२. ऐतिहासिक भाषाविज्ञान विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (72)

- (A) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन
- (B) क्षणिक मौन
- (C) केवल रंग
- (D) धातु-रूप

९७३. तुलनात्मक पद्धति विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (73)

- (A) एकभाषिक मौन
- (B) अर्थ-विनाश
- (C) मूर्तिकला
- (D) भाषासभक तुलना

९७४. मानकीकरण विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (74)

- (A) मौन-साधना
- (B) व्यक्तिगत शोर
- (C) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया
- (D) भाषा-विरोध

९७५. भाषोत्पत्ति विषयक परीक्षा-योग्य सही बात चुनू। (75)

- (A) एकल शब्दकोश
- (B) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार
- (C) लिपिक रंग
- (D) कृषि-औजार

९७६. तुलनात्मक प्रश्नमे भाषाक सही स्थान कोन अछि (76)?

- (A) सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (B) मौन चित्र
- (C) केवल राजकीय कागज
- (D) धातु-चिह्न

९७७. तुलनात्मक प्रश्नमे बोलीक सही स्थान कोन अछि (77)?

- (A) अर्थहीन शोर
- (B) मौन-पत्र
- (C) लिपि-विनाश
- (D) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप

९७८. तुलनात्मक प्रश्नमे मैथिलीक सही स्थान कोन अछि (78)?

- (A) चित्रलिपि मात्र
- (B) केवल विदेशी संकेत
- (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा
- (D) दक्षिणी द्रविड़ भाषा

९७९. तुलनात्मक प्रश्नमे तत्समक सही स्थान कोन अछि (79)?

- (A) मौन संकेत
- (B) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (C) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द
- (D) विदेशी उधार

९८०. तुलनात्मक प्रश्नमे तद्भवक सही स्थान कोन अछि (80)?

- (A) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द
- (B) अपरिवर्तित तत्सम
- (C) विदेशी चिह्न
- (D) चित्रक नाम

९८१. तुलनात्मक प्रश्नमे देशजक सही स्थान कोन अछि (81)?

- (A) राजकीय उधार
- (B) अर्थहीन स्वर
- (C) लिपिक रंग
- (D) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द

९८२. तुलनात्मक प्रश्नमे आगन्तुकक सही स्थान कोन अछि (82)?

- (A) मौन प्रयोग
- (B) चित्रक आकार
- (C) दोसरा भाषासँ आयल शब्द
- (D) अपन धातु-सूची

९८३. तुलनात्मक प्रश्नमे ध्वनिविज्ञानक सही स्थान कोन अछि (83)?

- (A) कथा-काल
- (B) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (C) कृषि-पद्धति
- (D) मूर्ति-सज्जा

९८४. तुलनात्मक प्रश्नमे रूपविज्ञानक सही स्थान कोन अछि (84)?

- (A) शब्दरचनाक अध्ययन
- (B) नदी-नाप
- (C) ध्वनिहीनता
- (D) सामाजिक कर

९८५. तुलनात्मक प्रश्नमे वाक्यविज्ञानक सही स्थान कोन अछि (85)?

- (A) चित्र-विन्यास
- (B) धातु-पात्र
- (C) नृत्य-ताल
- (D) वाक्य-रचनाक अध्ययन

९८६. तुलनात्मक प्रश्नमे अर्थविज्ञानक सही स्थान कोन अछि (86)?

- (A) कृषि-उत्पादन
- (B) शिल्पक इतिहास
- (C) अर्थक अध्ययन
- (D) रंगक अध्ययन

९८७. तुलनात्मक प्रश्नमे ऐतिहासिक भाषाविज्ञानक सही स्थान कोन अछि (87)?

- (A) धातु-रूप
- (B) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन
- (C) क्षणिक मौन
- (D) केवल रंग

९८८. तुलनात्मक प्रश्नमे तुलनात्मक पद्धतिक सही स्थान कोन अछि (88)?

- (A) भाषासभक तुलना
- (B) एकभाषिक मौन
- (C) अर्थ-विनाश
- (D) मूर्तिकला

९८९. तुलनात्मक प्रश्नमे मानकीकरणक सही स्थान कोन अछि (89)?

- (A) भाषा-विरोध
- (B) मौन-साधना
- (C) व्यक्तिगत शोर
- (D) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया

९९०. तुलनात्मक प्रश्नमे भाषोत्पत्तिक सही स्थान कोन अछि (90)?

- (A) कृषि-औजार
- (B) एकल शब्दकोश
- (C) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार
- (D) लिपिक रंग

९९१. भाषा पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (91)

- (A) धातु-चिह्न
- (B) सामाजिक संकेत-प्रणाली
- (C) मौन चित्र
- (D) केवल राजकीय कागज

९९२. बोली पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (92)

- (A) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप
- (B) अर्थहीन शोर
- (C) मौन-पत्र
- (D) लिपि-विनाश

९९३. मैथिली पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (93)

- (A) दक्षिणी द्रविड़ भाषा
- (B) चित्रलिपि मात्र
- (C) केवल विदेशी संकेत
- (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा

९९४. तत्सम पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (94)

- (A) विदेशी उधार
- (B) मौन संकेत
- (C) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द
- (D) लोकमे ध्वनि-बदलल शब्द

९९५. तद्भव पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (95)

- (A) चित्रक नाम
- (B) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द
- (C) अपरिवर्तित तत्सम
- (D) विदेशी चिह्न

९९६. देशज पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (96)

- (A) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द
- (B) राजकीय उधार
- (C) अर्थहीन स्वर
- (D) लिपिक रंग

९९७. आगन्तुक पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (97)

- (A) अपन धातु-सूची
- (B) मौन प्रयोग
- (C) चित्रक आकार
- (D) दोसरा भाषासँ आयल शब्द

९९८. ध्वनिविज्ञान पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (98)

- (A) मूर्ति-सज्जा
- (B) कथा-काल
- (C) भाषिक ध्वनिक अध्ययन
- (D) कृषि-पद्धति

९९९. रूपविज्ञान पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (99)

- (A) सामाजिक कर
- (B) शब्दरचनाक अध्ययन
- (C) नदी-नाप
- (D) ध्वनिहीनता

१०००. वाक्यविज्ञान पर आधारित उपयुक्त उत्तर चुनू। (100)

- (A) वाक्य-रचनाक अध्ययन
- (B) चित्र-विन्यास
- (C) धातु-पात्र
- (D) नृत्य-ताल

१. (A) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
२. (D) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
३. (C) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
४. (B) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
५. (A) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
६. (D) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
७. (C) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
८. (B) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
९. (A) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
१०. (D) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
११. (C) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
१२. (B) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
१३. (A) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
१४. (D) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
१५. (C) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
१६. (B) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
१७. (A) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
१८. (D) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
१९. (C) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
२०. (B) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
२१. (A) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
२२. (D) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
२३. (C) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
२४. (B) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
२५. (A) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
२६. (D) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
२७. (C) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
२८. (B) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
२९. (A) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
३०. (D) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
३१. (C) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।

३२. (B) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
३३. (A) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
३४. (D) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
३५. (C) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
३६. (B) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
३७. (A) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
३८. (D) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
३९. (C) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
४०. (B) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
४१. (A) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
४२. (D) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
४३. (C) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
४४. (B) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
४५. (A) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
४६. (D) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
४७. (C) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
४८. (B) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
४९. (A) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
५०. (D) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
५१. (C) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
५२. (B) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
५३. (A) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
५४. (D) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
५५. (C) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
५६. (B) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
५७. (A) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
५८. (D) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
५९. (C) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
६०. (B) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
६१. (A) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
६२. (D) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
६३. (C) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।

६४. (B) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
६५. (A) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
६६. (D) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
६७. (C) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
६८. (B) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
६९. (A) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
७०. (D) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
७१. (C) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
७२. (B) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
७३. (A) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
७४. (D) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
७५. (C) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
७६. (B) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
७७. (A) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
७८. (D) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
७९. (C) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
८०. (B) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
८१. (A) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।
८२. (D) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
८३. (C) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
८४. (B) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
८५. (A) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
८६. (D) एक मनसँ दोसर मन धरि अर्थ पहुँचाबयक क्रिया — भाषाक मुख्य प्रयोजन संप्रेषण अछि।
८७. (C) भाषाक दृश्य लेखन-रूप — लिपि भाषा नहि, भाषा लिखबाक साधन छी।
८८. (B) जीवित सामाजिक प्रयोगक रूप — भाषाक जीवन बोलचाल आ व्यवहारमे देखाइत अछि।
८९. (A) व्यापक स्वीकार, लेखन, शिक्षा आ प्रशासनमे उपयोगी रूप — मानकीकरणसँ भाषा सार्वजनिक व्यवहारमे स्थिरता पबैत अछि।
९०. (D) संदर्भ अनुसार भाषाक वास्तविक इस्तेमाल — भाषा केना बोलल-लिखल जाइत अछि, ई प्रयोगशास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाइत अछि।
९१. (C) मनुष्यक विचार, भाव आ ज्ञानक सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा सामाजिक संप्रेषणक व्यवस्थित साधन छी; एकर मूल काज अर्थ पहुँचाएब अछि।
९२. (B) अर्थ पहुँचाबयवला रूप — भाषामे संकेत ध्वनि, शब्द, रूप वा वाक्यक माध्यमे अर्थ दैत अछि।
९३. (A) शब्द आ अर्थक सम्बन्ध सामाजिक मान्यता पर आधारित होइत अछि — भाषाक शब्द-अर्थ सम्बन्ध सामान्यतः समाज द्वारा मानल गेल परम्परा पर टिकैत अछि।
९४. (D) भाषा समाजमे व्यवहारसँ जीवित रहैत अछि — भाषा समाजक साझा व्यवहार अछि; बोलनिहार समुदाय बिना भाषा निर्जीव भऽ जाइत अछि।
९५. (C) उच्चारणसँ बनल भाषिक स्वरूप — बोली गेल भाषा ध्वनि पर आधारित होइत अछि; लिपि बादक दृश्य रूप छी।
९६. (B) भाषाक रूप, क्रम आ प्रयोगक नियम-व्यवस्था — व्याकरण भाषा केँ संयोजित, सुबोध आ व्यवस्थित बनबैत अछि।

१७. (A) पूर्ण अर्थ दैबला शब्द-समूह — वाक्य भाषाक ओ इकाई अछि जाहिसँ विचार अपेक्षाकृत पूर्ण रूपेँ व्यक्त होइत अछि।
१८. (D) भाषा मनुष्यक जटिल सांकेतिक सामर्थ्य — पशु संकेत देइत अछि, मुदा मानवीय भाषा अधिक लचीला, सृजनशील आ नियमबद्ध अछि।
१९. (C) सीमित साधनसँ असीम वाक्य बनाबयक क्षमता — भाषा सीमित ध्वनि आ शब्दसँ नूतन वाक्य, नूतन अर्थ आ नूतन विचार बनबैत अछि।
१००. (B) पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत भाषिक व्यवहार — भाषा परम्परा सँ चलैत अछि, मुदा ओ परम्परा समयानुसार बदलैत सेहो रहैत अछि।
१०१. (D) भाषाक ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१०२. (C) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१०३. (B) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१०४. (A) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१०५. (D) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१०६. (C) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१०७. (B) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१०८. (A) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१०९. (D) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
११०. (C) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
१११. (B) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।
११२. (A) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
११३. (D) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
११४. (C) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
११५. (B) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
११६. (A) भाषाक ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
११७. (D) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
११८. (C) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
११९. (B) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१२०. (A) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१२१. (D) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१२२. (C) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१२३. (B) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१२४. (A) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
१२५. (D) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
१२६. (C) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।

१२७. (B) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
१२८. (A) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
१२९. (D) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
१३०. (C) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
१३१. (B) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१३२. (A) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१३३. (D) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१३४. (C) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१३५. (B) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१३६. (A) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१३७. (D) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१३८. (C) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१३९. (B) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
१४०. (A) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
१४१. (D) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।
१४२. (C) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
१४३. (B) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
१४४. (A) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
१४५. (D) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
१४६. (C) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१४७. (B) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१४८. (A) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१४९. (D) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१५०. (C) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१५१. (B) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१५२. (A) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१५३. (D) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१५४. (C) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
१५५. (B) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।

१५६. (A) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।
१५७. (D) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
१५८. (C) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
१५९. (B) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
१६०. (A) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
१६१. (D) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१६२. (C) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१६३. (B) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१६४. (A) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१६५. (D) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१६६. (C) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१६७. (B) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१६८. (A) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१६९. (D) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
१७०. (C) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
१७१. (B) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।
१७२. (A) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
१७३. (D) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
१७४. (C) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
१७५. (B) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
१७६. (A) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयवला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१७७. (D) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१७८. (C) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयवला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१७९. (B) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१८०. (A) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१८१. (D) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१८२. (C) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१८३. (B) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१८४. (A) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।

१८५. (D) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
१८६. (C) भाषाक उद्भवमे जैविक, सामाजिक आ सांकेतिक तत्व सभ जुड़ल माननाइ — आधुनिक दृष्टि एकरेखीय उत्तरसँ बाँचि बहुकारण देखैत अछि।
१८७. (B) आपसी व्यवहारक जरूरत भाषाविकासक प्रेरक रहल — समाजमे सहयोग, चेतावनी, स्मृति आ ज्ञान-साझेदारी भाषाक आवश्यकता बढ़बैत अछि।
१८८. (A) मानवक मस्तिष्क आ उच्चारण-अंग भाषाक आधार दैत अछि — भाषा सामाजिक होइत हुए सेहो मानवीय जैविक क्षमता पर आधारित अछि।
१८९. (D) ध्वनि आ अर्थक रूप समाजमे बारम्बार प्रयोगसँ स्थिर भेल — समाजक पुनरावृत्त व्यवहार भाषा-रूप केँ स्थिर करैत अछि।
१९०. (C) वस्तु अनुपस्थित रहितो ओकरा संकेतसँ व्यक्त करबाक क्षमता — मानव भाषा प्रतीकात्मक अछि; ओ अनुपस्थित वस्तु, भूत, भविष्य, कल्पना सभ व्यक्त कऽ सकैत अछि।
१९१. (B) भाषाकेँ ईश्वर-प्रदत्त मानयला धारणा — दैवी सिद्धान्त धार्मिक मान्यता दैत अछि, मुदा आधुनिक भाषाविज्ञानमे ई वैज्ञानिक प्रमाणक आधार नहि मानल जाइत।
१९२. (A) प्राकृतिक ध्वनि अनुकरणसँ शब्द बनबाक विचार — अनुकरणसँ किछु शब्द बनि सकैत अछि, मुदा पूरा भाषा नहि।
१९३. (D) आश्चर्य, पीड़ा, आनन्द आदि स्वतः निकसल ध्वनि सँ भाषाक आरम्भ मानयला विचार — उद्गार-ध्वनि भाषा विकासक एक अंश बुझा सकैत अछि, सम्पूर्ण व्याकरणक उद्भव नहि।
१९४. (C) सामूहिक श्रमक ताल-मेलसँ भाषिक ध्वनि विकसित भेल — मानव सहयोग आ श्रम भाषा-विकासक सामाजिक आधार मानल जाइत अछि।
१९५. (B) भाषा मानव-समुदायक सतत सम्पर्कसँ विकसित भेल — भाषा सामाजिक क्रिया छी; सम्पर्क, परम्परा आ आवश्यकता एकरा बढ़बैत अछि।
१९६. (A) हाथ-मुखक संकेतसँ वाचिक भाषाक दिशा बनल — संकेत आरम्भिक संप्रेषणक साधन रहल होयत, मुदा वाचिक भाषा अलग जटिलता रखैत अछि।
१९७. (D) बालकक भाषाग्रहणसँ भाषा-विकासक किछु संकेत भेटैत अछि — बालक भाषा सीखैत अछि, मुदा बालभाषासँ मानव भाषोत्पत्तिक पूरा इतिहास सिद्ध नहि होइत।
१९८. (C) भाषोत्पत्ति पर कोनो एक सिद्धान्त पूर्ण प्रमाणित नहि — भाषाक उद्भव बहुकारणीय आ अति पुरान प्रक्रिया छी।
१९९. (B) अनुकरणसँ सभ अमूर्त शब्दक जन्म नहि बुझायल जा सकैत — प्रेम, न्याय, समय जेकाँ अमूर्त शब्द केवल ध्वनि-अनुकरणसँ नहि बुझाएत।
२००. (A) भाषा मानव सहयोग आ सामूहिक जीवनक उपज मानल जा सकैत अछि — सहभागिता भाषा केँ अर्थ, नियम आ व्यवहार प्रदान करैत अछि।
२०१. (C) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२०२. (B) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२०३. (A) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२०४. (D) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२०५. (C) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२०६. (B) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२०७. (A) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२०८. (D) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२०९. (C) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२१०. (B) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२११. (A) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२१२. (D) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२१३. (C) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।
२१४. (B) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२१५. (A) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२१६. (D) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।

२१७. (C) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२१८. (B) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२१९. (A) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२२०. (D) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२२१. (C) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२२२. (B) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२२३. (A) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२२४. (D) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२२५. (C) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२२६. (B) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२२७. (A) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२२८. (D) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।
२२९. (C) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२३०. (B) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२३१. (A) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२३२. (D) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२३३. (C) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२३४. (B) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२३५. (A) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२३६. (D) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२३७. (C) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२३८. (B) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२३९. (A) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२४०. (D) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२४१. (C) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२४२. (B) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२४३. (A) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।
२४४. (D) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२४५. (C) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२४६. (B) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२४७. (A) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२४८. (D) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२४९. (C) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२५०. (B) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२५१. (A) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२५२. (D) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।

२५३. (C) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा के अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२५४. (B) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२५५. (A) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२५६. (D) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२५७. (C) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२५८. (B) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।
२५९. (A) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२६०. (D) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यिक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२६१. (C) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२६२. (B) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२६३. (A) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२६४. (D) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२६५. (C) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२६६. (B) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२६७. (A) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२६८. (D) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२६९. (C) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२७०. (B) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२७१. (A) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२७२. (D) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२७३. (C) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।
२७४. (B) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२७५. (A) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यिक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२७६. (D) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२७७. (C) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२७८. (B) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२७९. (A) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२८०. (D) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२८१. (C) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२८२. (B) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२८३. (A) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२८४. (D) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोकैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
२८५. (C) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
२८६. (B) दोसरा भाषासँ शब्द ग्रहण — सम्पर्कक कारण भाषा नव शब्द ग्रहण करैत अछि।
२८७. (A) जन-व्यवहारसँ भाषा रूप ग्रहण करैत अछि — भाषाक वास्तविक परिवर्तन लोकप्रयोगमे देखाइत अछि।
२८८. (D) भिन्न रूपसभ केँ एकरूप करबाक प्रवृत्ति — उपमा वा समानता-प्रवृत्ति सँ रूपक कठिन भिन्नता घटि सकैत अछि।

२८९. (C) उच्चारण वा रूपक सहज दिशा — भाषा-प्रयोगक सुविधा कतेक परिवर्तनक कारण बनैत अछि।
२९०. (B) प्रतिष्ठित समूहक भाषा-रूपक अनुकरण — शिक्षा, नगर, प्रशासन वा साहित्यक प्रतिष्ठा भाषिक रूप पर असर करैत अछि।
२९१. (A) उच्चारणमे समयानुसार ध्वनिक रूप बदलनाइ — उच्चारणक सहजता, सम्पर्क आ पीढ़ीगत बदलावसँ ध्वनि बदलि सकैत अछि।
२९२. (D) शब्दरूप, प्रत्यय, विभक्ति आदि बदलनाइ — रूपविज्ञान भाषाक शब्द-रचना आ रूपान्तरणक परिवर्तन देखैत अछि।
२९३. (C) शब्द-क्रम आ वाक्य-रचनामे बदलाव — वाक्यविन्यास समय आ व्यवहारसँ बदलैत अछि।
२९४. (B) शब्दक अर्थ पहिलासँ अधिक व्यापक भऽ जाएब — अर्थ-विस्तारमे शब्द नूतन प्रसंग धरि फैलैत अछि।
२९५. (A) शब्दक अर्थ सीमित भऽ जाएब — अर्थ-संकोचमे व्यापक अर्थ सँ संकीर्ण अर्थ बनैत अछि।
२९६. (D) शब्दक अर्थमे दिशा-बदलाव — समाज, संस्कृति आ प्रयोग बदललासँ शब्दक अर्थ सेहो बदलैत अछि।
२९७. (C) दोसरा भाषासँ शब्द, शैली वा ध्वनिक प्रभाव — व्यापार, शिक्षा, शासन आ प्रवास भाषामे नूतन तत्व अनैत अछि।
२९८. (B) नव पीढ़ी द्वारा प्रयोगक नव रूप — हर पीढ़ी भाषा केँ अपन सामाजिक अनुभव अनुसार बदलैत अछि।
२९९. (A) चयनित रूपक सार्वजनिक स्वीकृति — मानकीकरण परिवर्तन रोक्कैत नहि; ओ सार्वजनिक प्रयोगमे स्थिरता अनैत अछि।
३००. (D) नव साधन आ माध्यमसँ शब्द-प्रयोग बदलनाइ — छपाई, रेडियो, संगणक, दूरभाष आदि भाषिक व्यवहार बदलैत अछि।
३०१. (B) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३०२. (A) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३०३. (D) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्वपूर्ण कड़ी छी।
३०४. (C) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।
३०५. (B) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोडि देखल जाइत अछि।
३०६. (A) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३०७. (D) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३०८. (C) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३०९. (B) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्वपूर्ण रहल।
३१०. (A) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३११. (D) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३१२. (C) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३१३. (B) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३१४. (A) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३१५. (D) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३१६. (C) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३१७. (B) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३१८. (A) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्वपूर्ण कड़ी छी।
३१९. (D) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।

३२०. (C) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोडि देखल जाइत अछि।
३२१. (B) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३२२. (A) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३२३. (D) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३२४. (C) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
३२५. (B) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३२६. (A) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्त्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३२७. (D) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३२८. (C) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३२९. (B) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३३०. (A) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३३१. (D) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३३२. (C) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३३३. (B) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी छी।
३३४. (A) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाइत अछि।
३३५. (D) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोडि देखल जाइत अछि।
३३६. (C) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३३७. (B) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३३८. (A) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३३९. (D) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
३४०. (C) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३४१. (B) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्त्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३४२. (A) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३४३. (D) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३४४. (C) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३४५. (B) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३४६. (A) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३४७. (D) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।

३४८. (C) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी छी।
३४९. (B) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।
३५०. (A) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोड़ि देखल जाइत अछि।
३५१. (D) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३५२. (C) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३५३. (B) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३५४. (A) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
३५५. (D) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३५६. (C) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्त्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३५७. (B) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३५८. (A) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३५९. (D) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३६०. (C) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३६१. (B) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३६२. (A) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३६३. (D) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी छी।
३६४. (C) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।
३६५. (B) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोड़ि देखल जाइत अछि।
३६६. (A) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३६७. (D) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३६८. (C) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३६९. (B) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
३७०. (A) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३७१. (D) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्त्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३७२. (C) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३७३. (B) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३७४. (A) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३७५. (D) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३७६. (C) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।

३७७. (B) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३७८. (A) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी छी।
३७९. (D) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।
३८०. (C) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोड़ि देखल जाइत अछि।
३८१. (B) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३८२. (A) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३८३. (D) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३८४. (C) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
३८५. (B) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
३८६. (A) पुरान लेखन-साक्ष्य आ ज्ञान-संरक्षणक साधन — भाषाक पुरान रूप बुझबाक लेल पाण्डुलिपि, अभिलेख आ साहित्यिक पाठ महत्त्वपूर्ण साक्ष्य दैत अछि।
३८७. (D) मिथिलाक न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र आ काव्यक ज्ञान-संसार — मिथिलाक पाण्डित्य परम्परा भाषा-संस्कार आ लेखन-विस्तारमे सहायक रहल।
३८८. (C) दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, सुपौल आदि क्षेत्रक साझा भाषिक आधार — मैथिली अपन क्षेत्रीय विस्तार आ बोलनिहार समुदायसँ पहिचान पबैत अछि।
३८९. (B) मैथिली उद्भव आ विकासमे जीवित लोक-स्मृतिक स्रोत — लोकगीत भाषा के सहज रूप, शब्द आ सांस्कृतिक स्मृति बचबैत अछि।
३९०. (A) मैथिली भाषा-रूपक आरम्भिक लिखित प्रमाणक महत्त्वपूर्ण पक्ष — गद्यसाक्ष्य भाषा-विकासक वास्तविक रूप समझबामे सहायक होइत अछि।
३९१. (D) मिथिला क्षेत्रक प्रमुख आर्य भाषा — मैथिली मिथिला क्षेत्रमे विकसित पूर्वी आर्य भाषिक परम्परासँ सम्बद्ध अछि।
३९२. (C) प्राचीन आर्य साहित्यिक भाषा, जकर परम्परा बादक आर्य भाषासँ जुड़ल — संस्कृतक साहित्यिक परम्परा आ लोक-प्राकृत रूपसभसँ नूतन आर्य भाषाक विकास बुझल जाइत अछि।
३९३. (B) जन-व्यवहारक मध्य भारतीय आर्य भाषा-रूप — प्राकृत भाषा-रूपसभ संस्कृत आ नव्य आर्य भाषाक बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी छी।
३९४. (A) प्राकृतपछिला संक्रमणशील भाषा-रूप — अपभ्रंश आ अवहट्ट सँ नव्य भारतीय आर्य भाषाक रूप बनेबाक प्रक्रिया बुझाईत अछि।
३९५. (D) अपभ्रंशसँ नव्य आर्य भाषा-दिशा धरि मध्यवर्ती रूप — मैथिली सहित किछु पूर्वी भाषाक आरम्भिक साहित्यिक संकेत अवहट्टसँ जोड़ि देखल जाइत अछि।
३९६. (C) मैथिली भाषा-विकासक सांस्कृतिक-भौगोलिक आधार — मिथिलाक समाज, विद्यापरम्परा, पञ्जी, लोकसाहित्य आ सांस्कृतिक संसार मैथिली विकासक आधार छी।
३९७. (B) प्राचीन मैथिली गद्य-परम्पराक महत्त्वपूर्ण नाम — ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मैथिली गद्यक प्राचीन महत्त्वपूर्ण द्योतक मानल जाइत अछि।
३९८. (A) मैथिली लेखन-परम्परासँ जुड़ल लिपि — तिरहुता वा मिथिलाक्षर मैथिली लेखन आ पाण्डुलिपि परम्परासँ सम्बद्ध रहल अछि।
३९९. (D) जनसमुदायक जीवित व्यवहारक भाषा — मैथिलीक उद्भवमे लोक-व्यवहार आ साहित्यिक परम्परा दुनू महत्त्वपूर्ण रहल।
४००. (C) मैथिलीक उद्भवक व्यापक भाषिक क्षेत्र — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषाक समूहमे गनल जाइत अछि।
४०१. (A) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४०२. (D) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।
४०३. (C) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।

४०४. (B) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४०५. (A) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४०६. (D) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४०७. (C) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४०८. (B) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४०९. (A) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४१०. (D) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४११. (C) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४१२. (B) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४१३. (A) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४१४. (D) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४१५. (C) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।
४१६. (B) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४१७. (A) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।
४१८. (D) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४१९. (C) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४२०. (B) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४२१. (A) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४२२. (D) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४२३. (C) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४२४. (B) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४२५. (A) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४२६. (D) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४२७. (C) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४२८. (B) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४२९. (A) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४३०. (D) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।
४३१. (C) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४३२. (B) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

४३३. (A) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४३४. (D) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४३५. (C) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४३६. (B) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४३७. (A) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४३८. (D) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४३९. (C) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४४०. (B) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४४१. (A) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४४२. (D) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४४३. (C) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४४४. (B) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४४५. (A) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।
४४६. (D) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४४७. (C) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।
४४८. (B) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४४९. (A) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४५०. (D) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४५१. (C) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४५२. (B) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४५३. (A) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४५४. (D) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४५५. (C) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४५६. (B) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४५७. (A) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४५८. (D) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४५९. (C) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४६०. (B) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।
४६१. (A) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।

४६२. (D) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।
४६३. (C) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४६४. (B) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४६५. (A) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४६६. (D) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४६७. (C) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४६८. (B) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४६९. (A) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४७०. (D) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४७१. (C) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४७२. (B) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४७३. (A) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४७४. (D) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४७५. (C) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।
४७६. (B) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ट-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४७७. (A) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।
४७८. (D) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४७९. (C) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४८०. (B) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४८१. (A) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४८२. (D) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४८३. (C) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४८४. (B) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
४८५. (A) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
४८६. (D) आधुनिक बोलचाल आ सांस्कृतिक प्रसारक माध्यम — माध्यम बदललासँ भाषा लोकधरि पहुँचबाक बाट बदलैत अछि।
४८७. (C) संगणक, वेब आ इलेक्ट्रॉनिक पाठक माध्यमसँ मैथिलीक नव विस्तार — डिजिटल माध्यम भाषा-संरक्षण आ प्रसारक नव अवसर दैत अछि।
४८८. (B) पाठ्यक्रम, परीक्षा आ संस्थागत अध्ययन द्वारा भाषा-विकास — शिक्षा मैथिली भाषा केँ नव पीढ़ी धरि व्यवस्थित रूपेँ पहुँचबैत अछि।
४८९. (A) दोसरा भाषाक ज्ञान मैथिलीमे अनबाक विधा — अनुवाद मैथिली शब्द-भण्डार आ विचार-क्षेत्र केँ विस्तृत करैत अछि।
४९०. (D) भाषा-साहित्यक विवेकपूर्ण परीक्षणक आधुनिक विधा — आलोचना भाषा-साहित्यक गुण, सीमा आ दिशा पर विचार करैत अछि।

४९१. (C) भाषा-रूपक निर्माण, पाण्डुलिपि आ आरम्भिक गद्य-पद्यक समय — प्रारम्भिक कालमे लोकभाषा, अवहट्ठ-अपभ्रंशक कड़ी आ आरम्भिक साहित्यिक रूप देखल जाइत अछि।
४९२. (B) विद्यापति, पदावली, कीर्तनिया नाटक आ दरबारी-लोकधारा सँ समृद्ध समय — मध्यकाल मैथिली काव्य, गीत, नाटक आ भक्ति-शृङ्गार परम्परा लेल महत्वपूर्ण अछि।
४९३. (A) छपाई, शिक्षा, पत्र-पत्रिका, उपन्यास, नाटक, आलोचना आ भाषा-आन्दोलनक काल — आधुनिक युगमे मैथिली साहित्यिक विधा-विस्तार आ सार्वजनिक भाषा-चेतना तेज भेल।
४९४. (D) मैथिली पदावलीक महान् परम्परा-स्रोत — विद्यापति मैथिली काव्यपरम्परा, गीतिकाव्य आ भाषा-प्रतिष्ठाक केन्द्र छथि।
४९५. (C) मध्यकालीन मैथिली नाटकक गेय-रूप — कीर्तनिया नाटक संगीत, अभिनय आ लोक-धर्मक मिलनसँ बनल रंगधारा छी।
४९६. (B) मल्ल-कालीन दरबार आ सांस्कृतिक सम्पर्कसँ जुड़ल नाट्य-धारा — नेपालमे रचल मैथिली नाटक मध्यकालीन मैथिली साहित्यक विस्तार देखबैत अछि।
४९७. (A) भाषाक पाठ-विस्तार आ पाठक-समाज निर्माणक साधन — छपाईसँ मैथिली पुस्तक, पत्रिका आ भाषा-विमर्श अधिक फैलल।
४९८. (D) आधुनिक मैथिली चेतना, आलोचना आ सार्वजनिक संवादक मंच — पत्र-पत्रिकासँ भाषा-आन्दोलन, साहित्यिक बहस आ विधा-विकास बल पबैत अछि।
४९९. (C) आधुनिक मैथिली भाषा-आन्दोलनक महत्वपूर्ण उपलब्धि — आधुनिक कालमे मैथिली केँ राजकीय-संवैधानिक पहचान प्राप्त भेल।
५००. (B) वर्तनी, व्याकरण, पाठ्यक्रम आ सार्वजनिक लेखनमे स्थिरता — मानकीकरणसँ शिक्षा, परीक्षा आ प्रकाशनमे एकरूपता अबैत अछि।
५०१. (D) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५०२. (C) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।
५०३. (B) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५०४. (A) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५०५. (D) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५०६. (C) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५०७. (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५०८. (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५०९. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५१०. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५११. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५१२. (A) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५१३. (D) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५१४. (C) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५१५. (B) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५१६. (A) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५१७. (D) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।

५१८. (C) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५१९. (B) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५२०. (A) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५२१. (D) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५२२. (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५२३. (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५२४. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५२५. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५२६. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५२७. (B) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५२८. (A) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५२९. (D) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५३०. (C) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५३१. (B) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५३२. (A) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।
५३३. (D) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५३४. (C) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५३५. (B) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५३६. (A) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५३७. (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५३८. (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५३९. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५४०. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५४१. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५४२. (C) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५४३. (B) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५४४. (A) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५४५. (D) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५४६. (C) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५४७. (B) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।

५४८. (A) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५४९. (D) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५५०. (C) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५५१. (B) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५५२. (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५५३. (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५५४. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५५५. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५५६. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५५७. (D) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५५८. (C) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५५९. (B) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५६०. (A) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५६१. (D) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५६२. (C) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।
५६३. (B) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५६४. (A) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५६५. (D) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५६६. (C) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५६७. (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५६८. (A) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५६९. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५७०. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५७१. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५७२. (A) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५७३. (D) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५७४. (C) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५७५. (B) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५७६. (A) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५७७. (D) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।

५७८. (C) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५७९. (B) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५८०. (A) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५८१. (D) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५८२. (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५८३. (B) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५८४. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
५८५. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
५८६. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — ओड़िया, बांग्ला, असमिया आ मैथिली पूर्वी आर्य परम्परासँ सम्बद्ध मानल जाइत अछि।
५८७. (B) भाषासभक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयक पद्धति — भाषा-परिवार बुझबाक लेल वंश-वृक्ष रूपक उपयोगी अछि, मुदा सम्पर्क-प्रभाव सेहो देखबाक चाही।
५८८. (A) पड़ोसी भाषासभक परस्पर प्रभावक क्षेत्र — वंश-सम्बन्धक संग भाषा-सम्पर्क सेहो रूप आ शब्द बदलैत अछि।
५८९. (D) भाषासभक ध्वनि, शब्द आ रूपक तुलना द्वारा इतिहास बुझबाक उपाय — तुलनात्मक भाषाविज्ञान भाषिक सम्बन्ध खोजबाक मुख्य पद्धति छी।
५९०. (C) एकहि पुरान स्रोतसँ आयल मिलत-जुलत शब्द — सजातीय शब्द भाषिक परिवारक ऐतिहासिक सम्बन्ध देखाबयमे सहायक होइत अछि।
५९१. (B) विश्वक विस्तृत भाषा-परिवार, जाहिमे हिन्द-ईरानी शाखा सेहो अछि — मैथिलीक दूरस्थ वंश-सम्बन्ध भारोपीय भाषा-परिवारसँ जोड़ल जाइत अछि।
५९२. (A) भारोपीय परिवारक शाखा, जाहिसँ हिन्द-आर्य भाषा-समूह जुड़ैत अछि — मैथिलीक व्यापक वंशावलीमे भारोपीय सँ हिन्द-ईरानी, तकर बाद हिन्द-आर्य क्रम अबैत अछि।
५९३. (D) भारतीय आर्य भाषासभक समूह — मैथिली हिन्द-आर्य भाषा-परम्परामे गनल जाइत अछि।
५९४. (C) भारतीय आर्य भाषाक ओ धरातल जकरा संग मैथिली जुड़ल अछि — मैथिली पूर्वी भारतीय आर्य भाषिक क्षेत्रमे अवस्थित अछि।
५९५. (B) पुरान वर्गीकरणमे मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि लेल प्रयुक्त समूह — किछु भाषा-वर्गीकरणमे मैथिली केँ बिहारी समूहक प्रमुख भाषा मानल गेल।
५९६. (A) हिन्द-आर्य परिवारक पूर्वी आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
५९७. (D) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली, मगही, भोजपुरी नजदीकी क्षेत्रक आर्य भाषासभ छी।
५९८. (C) पूर्वी आर्य क्षेत्रक पड़ोसी भाषा — मैथिली आ भोजपुरीमे क्षेत्रीय निकटता अछि, मुदा दुनू स्वतंत्र भाषिक परम्परा रखैत अछि।
५९९. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारक दोसरा प्रमुख भाषा — मैथिली आ बांग्ला दूरस्थ पूर्वी आर्य सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा अपन-अपन स्वतंत्र विकास अछि।
६००. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — असमिया सेहो पूर्वी हिन्द-आर्य परिवारमे गनल जाइत अछि।
६०१. (C) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६०२. (B) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६०३. (A) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६०४. (D) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६०५. (C) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६०६. (B) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६०७. (A) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६०८. (D) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।

६०९. (C) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६१०. (B) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६११. (A) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।
६१२. (D) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६१३. (C) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६१४. (B) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।
६१५. (A) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६१६. (D) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६१७. (C) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६१८. (B) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६१९. (A) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६२०. (D) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६२१. (C) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६२२. (B) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६२३. (A) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६२४. (D) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६२५. (C) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६२६. (B) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।
६२७. (A) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६२८. (D) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६२९. (C) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।
६३०. (B) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६३१. (A) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६३२. (D) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६३३. (C) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६३४. (B) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६३५. (A) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६३६. (D) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६३७. (C) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६३८. (B) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६३९. (A) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६४०. (D) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६४१. (C) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।

६४२. (B) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६४३. (A) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६४४. (D) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।
६४५. (C) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६४६. (B) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६४७. (A) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६४८. (D) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६४९. (C) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६५०. (B) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६५१. (A) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६५२. (D) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६५३. (C) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६५४. (B) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६५५. (A) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६५६. (D) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।
६५७. (C) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६५८. (B) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६५९. (A) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।
६६०. (D) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६६१. (C) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६६२. (B) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६६३. (A) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६६४. (D) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६६५. (C) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६६६. (B) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६६७. (A) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६६८. (D) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६६९. (C) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६७०. (B) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६७१. (A) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।
६७२. (D) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६७३. (C) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६७४. (B) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।

६७५. (A) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६७६. (D) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६७७. (C) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६७८. (B) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६७९. (A) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६८०. (D) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६८१. (C) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६८२. (B) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६८३. (A) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६८४. (D) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
६८५. (C) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
६८६. (B) समाज द्वारा अधिक मान्यता प्राप्त भाषिक रूप — प्रतिष्ठा सामाजिक कारणसँ बनैत अछि; ई भाषिक श्रेष्ठताक अनिवार्य प्रमाण नहि।
६८७. (A) जनजीवनक सहज भाषा-रूप — लोकबोली साहित्य, लोकगीत, कहावत आ दैनिक संचारमे जीवित रहैत अछि।
६८८. (D) पड़ोसी बोलीसभक क्रमिक समानता-असमानता — कतेक क्षेत्रमे बोलीसभ धीरे-धीरे बदलैत जाएत अछि, तेज सीमा नहि भेटैत।
६८९. (C) भाषा-पहिचानक एक प्रमुख साधन — लेखन-परम्परा भाषा केँ ऐतिहासिक गहराई आ सार्वजनिकता दैत अछि।
६९०. (B) मानक भाषा फैलाबयक संस्थागत माध्यम — विद्यालय, पाठ्यपुस्तक आ परीक्षा भाषा-रूपक स्थिरता बढ़बैत अछि।
६९१. (A) व्यापक साहित्य, मानक रूप, शिक्षा आ सार्वजनिक प्रयोगवाली भाषिक व्यवस्था — भाषा सामान्यतः व्यापक समाज, साहित्य, लेखन आ मानकीकरणसँ जुड़ल रहैत अछि।
६९२. (D) विशेष क्षेत्र वा समूहक बोलचालक रूप — बोली भाषाक जीवित स्थानीय रूप छी।
६९३. (C) दुइ रूपक बोलनिहार एक-दोसराकेँ कतेक बुझैत छथि — भाषा-बोली सम्बन्धमे परस्पर समझ महत्वपूर्ण कसौटी अछि, मुदा एकमात्र नहि।
६९४. (B) एक भाषिक रूपक स्वीकार्य सार्वजनिक स्वरूप बनाइ — मानक भाषा शिक्षा, साहित्य, प्रशासन आ संचारमे उपयोगी होइत अछि।
६९५. (A) भाषाक प्रतिष्ठा आ विस्तारक महत्वपूर्ण आधार — समृद्ध साहित्य भाषाकेँ अलग पहचान आ दीर्घ परम्परा दैत अछि।
६९६. (D) भाषा-बोलीक भेदमे सत्ता आ मान्यता सेहो असर करैत अछि — भाषा आ बोलीक सीमा केवल भाषिक नहि, सामाजिक-राजनीतिक सेहो होइत अछि।
६९७. (C) एके भाषाक अलग-अलग स्थानिक रूप — मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रीय रूप सभ भाषाक विविधता देखबैत अछि।
६९८. (B) जाति, वर्ग, पेशा वा समूह अनुसार प्रयोगक रूप — भाषा समाजक संरचनासँ जुड़ल रहैत अछि।
६९९. (A) दुइ भाषा/रूपक व्यवहारिक ज्ञान — समाजमे लोक प्रायः एकाधिक भाषा वा रूप इस्तेमाल करैत छथि।
७००. (D) बातचीतमे भाषिक रूप बदलि-बदलि प्रयोग — संदर्भ, श्रोता आ विषय अनुसार वक्ता भाषा वा बोलीक रूप बदलि सकैत अछि।
७०१. (B) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७०२. (A) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७०३. (D) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७०४. (C) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७०५. (B) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्वपूर्ण साधन अछि।
७०६. (A) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७०७. (D) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।

७०८. (C) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७०९. (B) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७१०. (A) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७११. (D) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७१२. (C) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७१३. (B) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।
७१४. (A) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७१५. (D) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७१६. (C) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७१७. (B) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७१८. (A) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७१९. (D) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७२०. (C) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७२१. (B) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७२२. (A) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७२३. (D) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७२४. (C) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७२५. (B) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७२६. (A) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७२७. (D) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७२८. (C) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।
७२९. (B) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७३०. (A) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७३१. (D) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७३२. (C) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७३३. (B) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७३४. (A) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७३५. (D) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७३६. (C) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७३७. (B) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७३८. (A) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७३९. (D) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७४०. (C) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७४१. (B) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७४२. (A) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७४३. (D) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।

७४४. (C) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७४५. (B) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७४६. (A) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७४७. (D) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७४८. (C) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७४९. (B) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७५०. (A) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७५१. (D) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७५२. (C) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७५३. (B) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७५४. (A) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७५५. (D) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७५६. (C) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७५७. (B) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७५८. (A) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।
७५९. (D) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७६०. (C) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७६१. (B) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७६२. (A) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७६३. (D) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७६४. (C) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७६५. (B) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७६६. (A) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७६७. (D) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७६८. (C) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७६९. (B) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७७०. (A) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७७१. (D) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७७२. (C) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७७३. (B) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।
७७४. (A) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७७५. (D) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७७६. (C) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७७७. (B) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७७८. (A) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७७९. (D) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।

७८०. (C) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७८१. (B) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७८२. (A) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७८३. (D) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७८४. (C) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
७८५. (B) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
७८६. (A) शब्दक अर्थ अधिक व्यापक होएब — अर्थ-विस्तार समाजक नूतन प्रयोगसँ होइत अछि।
७८७. (D) शब्दक अर्थ सीमित होएब — सामाजिक प्रयोग कखनो शब्दक अर्थ केँ संकीर्ण बना दैत अछि।
७८८. (C) सादृश्यक आधार पर नूतन अर्थ बननाइ — रूपक भाषा केँ अर्थ-विस्तारक नूतन राह दैत अछि।
७८९. (B) लोक-बुझाइ अनुसार शब्दक रूप बदलनाइ — कतेक बेर लोक शब्द केँ चिन्हल रूपसँ मिलाबय लेल बदलि दैत अछि।
७९०. (A) भाषिक सम्पर्कसँ शब्द लैनाइ — भाषा परस्पर शब्द लेइत-दैत रहैत अछि।
७९१. (D) संस्कृतसँ प्रायः अपरिवर्तित रूपमे आयल शब्द — तत्सम शब्द संस्कृतक रूप काफी हद धरि सुरक्षित राखैत अछि।
७९२. (C) संस्कृत/पुरान आर्य स्रोतसँ ध्वनि-परिवर्तन द्वारा बनल देशी रूप — तद्भव शब्द ऐतिहासिक ध्वनि-परिवर्तनक परिणाम होइत अछि।
७९३. (B) स्थानीय लोक-प्रयोगमे विकसित शब्द — देशज शब्द लोकजीवनक अनुभव आ स्थानीय परम्परासँ जुड़ल होइत अछि।
७९४. (A) दोसरा भाषासँ ग्रहण कएल शब्द — सम्पर्क, व्यापार, शासन, शिक्षा आदिसँ आगन्तुक शब्द भाषा मे अबैत अछि।
७९५. (D) शब्दक आरम्भमे जुड़ि अर्थ बदलयवला अंश — उपसर्ग शब्द-निर्माणक महत्त्वपूर्ण साधन अछि।
७९६. (C) शब्दक अन्तमे जुड़ि नूतन रूप वा अर्थ बनाबयवला अंश — प्रत्ययसँ शब्दक वर्ग, अर्थ वा व्याकरणिक रूप बदलि सकैत अछि।
७९७. (B) दुइ वा अधिक पदक संक्षिप्त संयुक्त रूप — समास शब्द-निर्माणमे संक्षेप आ घनत्व प्रदान करैत अछि।
७९८. (A) अंशसभक अर्थसँ बनल स्पष्ट संयुक्त अर्थवाला शब्द — यौगिक शब्दमे घटक अर्थ मिलि पूरा अर्थ बनबैत अछि।
७९९. (D) जकर अर्थ घटकसभसँ सहज नहि खुलैत — रूढ़ शब्दक अर्थ परम्परासँ स्वीकारल जाइत अछि।
८००. (C) घटक अर्थ रहितो विशेष अर्थमे रूढ़ भऽ गेल शब्द — योगरूढ़ता शब्द-विकासक ओ अवस्था अछि जतय निर्माण आ परम्परा दुनू भेटैत अछि।
८०१. (A) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष केँ वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८०२. (D) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८०३. (C) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८०४. (B) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८०५. (A) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८०६. (D) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
८०७. (C) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८०८. (B) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८०९. (A) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८१०. (D) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८११. (C) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८१२. (B) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।
८१३. (A) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८१४. (D) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८१५. (C) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र छी।

८१६. (B) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष के वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८१७. (A) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८१८. (D) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८१९. (C) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८२०. (B) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८२१. (A) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।
८२२. (D) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८२३. (C) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८२४. (B) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८२५. (A) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८२६. (D) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८२७. (C) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।
८२८. (B) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८२९. (A) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८३०. (D) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्वपूर्ण क्षेत्र छी।
८३१. (C) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष के वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८३२. (B) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८३३. (A) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८३४. (D) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८३५. (C) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८३६. (B) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।
८३७. (A) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८३८. (D) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८३९. (C) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८४०. (B) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८४१. (A) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८४२. (D) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।
८४३. (C) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८४४. (B) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८४५. (A) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्वपूर्ण क्षेत्र छी।
८४६. (D) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष के वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८४७. (C) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८४८. (B) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८४९. (A) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८५०. (D) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८५१. (C) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।

८५२. (B) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८५३. (A) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८५४. (D) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८५५. (C) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८५६. (B) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८५७. (A) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।
८५८. (D) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८५९. (C) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८६०. (B) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्वपूर्ण क्षेत्र छी।
८६१. (A) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष केँ वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८६२. (D) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८६३. (C) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८६४. (B) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८६५. (A) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८६६. (D) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।
८६७. (C) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८६८. (B) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८६९. (A) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८७०. (D) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८७१. (C) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८७२. (B) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।
८७३. (A) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८७४. (D) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८७५. (C) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्वपूर्ण क्षेत्र छी।
८७६. (B) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष केँ वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८७७. (A) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८७८. (D) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८७९. (C) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८८०. (B) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८८१. (A) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।
८८२. (D) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८८३. (C) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८८४. (B) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
८८५. (A) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
८८६. (D) वर्तनी, रूप, शब्दावली आ शैलीक सार्वजनिक स्थिरता — मानकीकरण भाषा केँ शिक्षा, प्रकाशन आ शासनमे उपयोगी बनबैत अछि।
८८७. (C) बोलनिहार समुदायसँ प्रत्यक्ष भाषिक सामग्री संकलन — क्षेत्र-अध्ययन जीवित भाषा-रूपक प्रमाण दैत अछि।

८८८. (B) शब्द-संग्रह, अर्थ, प्रयोग आ स्रोतक व्यवस्थित प्रस्तुति — शब्दकोश भाषा-भण्डार आ शब्द-विकास बुझबाक आधार दैत अछि।
८८९. (A) लिपि, अक्षर-चिह्न आ लेखन-प्रणालीक अध्ययन — लिपिविज्ञान भाषाक दृश्य रूपक ऐतिहासिक आ संरचनात्मक अध्ययन करैत अछि।
८९०. (D) बालक वा शिक्षार्थी भाषा केना सीखैत छथि, ओकर अध्ययन — भाषा-अधिग्रहण मानव भाषिक क्षमता बुझबाक महत्वपूर्ण क्षेत्र छी।
८९१. (C) भाषिक ध्वनिक उच्चारण, श्रवण आ स्वरूपक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान भाषाक ध्वनि पक्ष केँ वैज्ञानिक ढंगसँ देखैत अछि।
८९२. (B) कोन ध्वनि अर्थ-भेद करैत अछि, ओकर अध्ययन — ध्वनिम भाषामे अर्थ-भेदक न्यूनतम ध्वनिक इकाई होइत अछि।
८९३. (A) शब्दक बनावट, रूपिम, उपसर्ग-प्रत्ययक अध्ययन — रूपविज्ञान शब्दरचना आ व्याकरणिक रूप देखैत अछि।
८९४. (D) शब्दक क्रम आ वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान भाषा मे पद आ वाक्य केना बनैत अछि से देखैत अछि।
८९५. (C) शब्द आ वाक्यक अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान अर्थ, अर्थ-सम्बन्ध आ अर्थ-परिवर्तनक अध्ययन करैत अछि।
८९६. (B) संदर्भमे कथनक अर्थ आ प्रयोजनक अध्ययन — प्रयोगविज्ञानमे वक्ता, श्रोता, प्रसंग आ आशय महत्वपूर्ण होइत अछि।
८९७. (A) भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन — भाषा जाति, वर्ग, लिंग, पेशा, क्षेत्र आ शक्ति-संबंधसँ जुड़ल अछि।
८९८. (D) भाषाक समयानुसार विकास आ परिवर्तनक अध्ययन — ऐतिहासिक भाषाविज्ञान परिवार, ध्वनि-नियम, पुरान रूप आ विकासक्रम देखैत अछि।
८९९. (C) भाषासभक तुलना द्वारा सम्बन्ध बुझबाक अध्ययन — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवार आ सजातीय शब्द चिन्हबैत अछि।
९००. (B) शिक्षा, प्रशासन आ सार्वजनिक प्रयोगमे भाषाक नियोजन — भाषा-नीति भाषाक सामाजिक भविष्य आ संस्थागत प्रयोगसँ जुड़ल अछि।
९०१. (D) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
९०२. (C) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
९०३. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
९०४. (A) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
९०५. (D) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
९०६. (C) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
९०७. (B) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
९०८. (A) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।
९०९. (D) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
९१०. (C) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
९११. (B) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
९१२. (A) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
९१३. (D) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
९१४. (C) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।
९१५. (B) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
९१६. (A) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
९१७. (D) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
९१८. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
९१९. (B) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
९२०. (A) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
९२१. (D) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
९२२. (C) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
९२३. (B) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।

१२४. (A) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
१२५. (D) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
१२६. (C) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
१२७. (B) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
१२८. (A) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
१२९. (D) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।
१३०. (C) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
१३१. (B) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
१३२. (A) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
१३३. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
१३४. (C) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
१३५. (B) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
१३६. (A) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
१३७. (D) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
१३८. (C) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।
१३९. (B) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
१४०. (A) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
१४१. (D) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
१४२. (C) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
१४३. (B) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
१४४. (A) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।
१४५. (D) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
१४६. (C) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
१४७. (B) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
१४८. (A) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
१४९. (D) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
१५०. (C) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
१५१. (B) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
१५२. (A) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
१५३. (D) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।
१५४. (C) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
१५५. (B) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
१५६. (A) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
१५७. (D) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
१५८. (C) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
१५९. (B) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।

१६०. (A) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
१६१. (D) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
१६२. (C) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
१६३. (B) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
१६४. (A) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
१६५. (D) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
१६६. (C) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
१६७. (B) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
१६८. (A) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।
१६९. (D) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
१७०. (C) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
१७१. (B) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
१७२. (A) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
१७३. (D) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
१७४. (C) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।
१७५. (B) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
१७६. (A) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
१७७. (D) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
१७८. (C) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
१७९. (B) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
१८०. (A) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।
१८१. (D) स्थानीय लोक-उत्पन्न शब्द — देशज शब्द लोकजीवन आ स्थानिक अनुभवसँ जुड़ल अछि।
१८२. (C) दोसरा भाषासँ आयल शब्द — आगन्तुक शब्द सम्पर्कक प्रमाण दैत अछि।
१८३. (B) भाषिक ध्वनिक अध्ययन — ध्वनिविज्ञान उच्चारण आ श्रवण पक्ष देखैत अछि।
१८४. (A) शब्दरचनाक अध्ययन — रूपविज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, रूपिम आदि देखैत अछि।
१८५. (D) वाक्य-रचनाक अध्ययन — वाक्यविज्ञान पदक्रम आ वाक्य-संरचना देखैत अछि।
१८६. (C) अर्थक अध्ययन — अर्थविज्ञान शब्द आ वाक्यक अर्थ देखैत अछि।
१८७. (B) भाषा-परिवर्तनक समयगत अध्ययन — ऐतिहासिक दृष्टि भाषा विकासक्रम स्पष्ट करैत अछि।
१८८. (A) भाषासभक तुलना — तुलनात्मक पद्धति भाषा-परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि।
१८९. (D) सार्वजनिक स्वीकृत रूप बनाबयक प्रक्रिया — मानकीकरण शिक्षा आ लेखनमे स्थिरता दैत अछि।
१९०. (C) भाषाक आरम्भ सम्बन्धी विचार — भाषोत्पत्ति पर एकमात्र सिद्धान्त अंतिम नहि मानल जाइत।
१९१. (B) सामाजिक संकेत-प्रणाली — भाषा समाजमे अर्थ-संचार करैत अछि।
१९२. (A) क्षेत्रीय/समूहगत बोलचालक रूप — बोली भाषा-विविधताक जीवित रूप छी।
१९३. (D) पूर्वी हिन्द-आर्य भाषा — मैथिली भारोपीय परिवारक हिन्द-आर्य शाखासँ सम्बद्ध अछि।
१९४. (C) संस्कृतसँ कम बदलल शब्द — तत्सम शब्द प्रायः संस्कृत-रूप निकट राखैत अछि।
१९५. (B) ध्वनि-परिवर्तनसँ विकसित आर्य शब्द — तद्भव शब्द ऐतिहासिक परिवर्तनक निशान राखैत अछि।

૧૧૬. (A) સ્થાનીય લોક-ઉત્પન્ન શબ્દ — દેશજ શબ્દ લોકજીવન આ સ્થાનિક અનુભવસં જુડેલ અછિ।
૧૧૭. (D) દોસરા ભાષાસં આયલ શબ્દ — આગન્તુક શબ્દ સમ્પર્કક પ્રમાણ દૈત અછિ।
૧૧૮. (C) ભાષિક ધ્વનિક અધ્યયન — ધ્વનિવિજ્ઞાન ઉચ્ચારણ આ શ્રવણ પક્ષ દેખૈત અછિ।
૧૧૯. (B) શબ્દરચનાક અધ્યયન — રૂપવિજ્ઞાન ઉપસર્ગ, પ્રત્યય, રૂપિમ આદિ દેખૈત અછિ।
૧૦૦૦. (A) વાક્ય-રચનાક અધ્યયન — વાક્યવિજ્ઞાન પદક્રમ આ વાક્ય-સંરચના દેખૈત અછિ।

अध्याय २ : काव्यशास्त्र — विदेह क्विज

१. 'काव्यक लक्षण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश

२. जे स्थिति/धारणा “शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग” हो, ओकर नाम की?

- (A) रसात्मक वाक्य
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) काव्यक प्रयोजन
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

३. 'काव्यक लक्षण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

४. काव्यशास्त्रमे 'काव्यक लक्षण' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

५. 'काव्यक लक्षण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।

६. 'शब्दार्थ-सौन्दर्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश

७. जे स्थिति/धारणा “शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल” हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक प्रयोजन
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) काव्यक लक्षण
- (D) रसात्मक वाक्य

८. 'शब्दार्थ-सौन्दर्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

९. काव्यशास्त्रमे 'शब्दार्थ-सौन्दर्य' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

१०. 'शब्दार्थ-सौन्दर्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

११. 'रसात्मक वाक्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

१२. जे स्थिति/धारणा "जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक प्रयोजन
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) काव्यक लक्षण
- (D) रसात्मक वाक्य

१३. 'रसात्मक वाक्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

१४. काव्यशास्त्रमे 'रसात्मक वाक्य' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

१५. 'रसात्मक वाक्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

१६. 'काव्यक प्रयोजन'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश

१७. जे स्थिति/धारणा “यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश” हो, ओकर नाम की?

- (A) रसात्मक वाक्य
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (D) काव्यक प्रयोजन

१८. ‘काव्यक प्रयोजन’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

१९. काव्यशास्त्रमे ‘काव्यक प्रयोजन’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

२०. ‘काव्यक प्रयोजन’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
- (B) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (C) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

२१. ‘यश’क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) श्रेष्ठ काव्य द्वारा कविक कीर्ति

२२. जे स्थिति/धारणा “श्रेष्ठ काव्य द्वारा कविक कीर्ति” हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक लक्षण
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) यश

२३. ‘यश’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) काव्य कविक नामकेँ कालातीत बना सकैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

२४. काव्यशास्त्रमे ‘यश’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) श्रेष्ठ काव्य द्वारा कविक कीर्ति
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

२५. 'यश' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

२६. 'अर्थ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) कविक जीविका वा पुरस्कार-संबंधी लाभ

२७. जे स्थिति/धारणा "कविक जीविका वा पुरस्कार-संबंधी लाभ" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक लक्षण
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) अर्थ
- (D) रसात्मक वाक्य

२८. 'अर्थ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
- (C) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।

२९. काव्यशास्त्रमे 'अर्थ' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) कविक जीविका वा पुरस्कार-संबंधी लाभ
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

३०. 'अर्थ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

३१. 'व्यवहारज्ञान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) जीवन, समाज आ नीति सम्बन्धी व्यावहारिक बोध
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

३२. जे स्थिति/धारणा "जीवन, समाज आ नीति सम्बन्धी व्यावहारिक बोध" हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (B) रसात्मक वाक्य
- (C) व्यवहारज्ञान
- (D) काव्यक लक्षण

३३. 'व्यवहारज्ञान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) काव्य अनुभवक माध्यमँ जीवनक शिक्षा देइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

३४. काव्यशास्त्रमे 'व्यवहारज्ञान' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जीवन, समाज आ नीति सम्बन्धी व्यावहारिक बोध
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

३५. 'व्यवहारज्ञान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) काव्य अनुभवक माध्यमँ जीवनक शिक्षा देइत अछि।

३६. 'कान्तासम्मितोपदेश'क सही लक्षण की अछि?

- (A) प्रियाक वचन जकाँ मधुर ढंगसँ उपदेश
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

३७. जे स्थिति/धारणा "प्रियाक वचन जकाँ मधुर ढंगसँ उपदेश" हो, ओकर नाम की?

- (A) कान्तासम्मितोपदेश
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

३८. 'कान्तासम्मितोपदेश' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) काव्य कठोर सीखकेँ मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।

३९. काव्यशास्त्रमे 'कान्तासम्मितोपदेश' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) प्रियाक वचन जकाँ मधुर ढंगसँ उपदेश
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

४०. 'कान्तासम्मितोपदेश' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) काव्य कठोर सीखकेँ मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।

४१. 'शिवेतर क्षय'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) अमंगल, अज्ञान आ अनैतिक प्रवृत्तिक हास
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

४२. जे स्थिति/धारणा "अमंगल, अज्ञान आ अनैतिक प्रवृत्तिक हास" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक लक्षण
- (B) शिवेतर क्षय
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

४३. 'शिवेतर क्षय' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
- (B) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

४४. काव्यशास्त्रमे 'शिवेतर क्षय' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) अमंगल, अज्ञान आ अनैतिक प्रवृत्तिक हास
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

४५. 'शिवेतर क्षय' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (C) श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

४६. 'आनन्द'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) रसास्वादसँ उत्पन्न आन्तरिक सुख
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

४७. जे स्थिति/धारणा "रसास्वादसँ उत्पन्न आन्तरिक सुख" हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (B) आनन्द
- (C) काव्यक लक्षण
- (D) रसात्मक वाक्य

४८. 'आनन्द' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।

४९. काव्यशास्त्रमे 'आनन्द' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) रसास्वादसँ उत्पन्न आन्तरिक सुख

५०. 'आनन्द' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

५१. 'लोकमंगल'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) समाजक हित आ संवेदनाक विस्तार

५२. जे स्थिति/धारणा "समाजक हित आ संवेदनाक विस्तार" हो, ओकर नाम की?

- (A) लोकमंगल
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (D) रसात्मक वाक्य

५३. 'लोकमंगल' सम्बन्धी सही कथन चुनौ।

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) लोकमंगल काव्यकै निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
- (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।

५४. काव्यशास्त्रमे 'लोकमंगल' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) समाजक हित आ संवेदनाक विस्तार
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

५५. 'लोकमंगल' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) लोकमंगल काव्यकै निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

५६. 'प्रतिभा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) कविक सहज सृजन-शक्ति
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

५७. जे स्थिति/धारणा “कविक सहज सृजन-शक्ति” हो, ओकर नाम की?

- (A) रसात्मक वाक्य
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) प्रतिभा
- (D) काव्यक लक्षण

५८. ‘प्रतिभा’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त’ काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।

५९. काव्यशास्त्रमे ‘प्रतिभा’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) कविक सहज सृजन-शक्ति
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

६०. ‘प्रतिभा’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त’ काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

६१. ‘व्युत्पत्ति’क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) अध्ययन, शास्त्रज्ञान आ परम्परा-बोध
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

६२. जे स्थिति/धारणा “अध्ययन, शास्त्रज्ञान आ परम्परा-बोध” हो, ओकर नाम की?

- (A) रसात्मक वाक्य
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) काव्यक लक्षण
- (D) व्युत्पत्ति

६३. ‘व्युत्पत्ति’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकेँ दिशा दैत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त’ काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

६४. काव्यशास्त्रमे ‘व्युत्पत्ति’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) अध्ययन, शास्त्रज्ञान आ परम्परा-बोध
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

६५. 'व्युत्पत्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।

६६. 'अभ्यास'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) निरन्तर रचना, संशोधन आ साधना
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

६७. जे स्थिति/धारणा "निरन्तर रचना, संशोधन आ साधना" हो, ओकर नाम की?

- (A) अभ्यास
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) काव्यक लक्षण

६८. 'अभ्यास' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

६९. काव्यशास्त्रमे 'अभ्यास' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) निरन्तर रचना, संशोधन आ साधना
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

७०. 'अभ्यास' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (B) अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

७१. 'लोकानुभव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) जीवन आ समाजक प्रत्यक्ष अनुभव
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

७२. जे स्थिति/धारणा "जीवन आ समाजक प्रत्यक्ष अनुभव" हो, ओकर नाम की?

- (A) लोकानुभव
- (B) रसात्मक वाक्य
- (C) काव्यक लक्षण
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

७३. 'लोकानुभव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

७४. काव्यशास्त्रमे 'लोकानुभव' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) जीवन आ समाजक प्रत्यक्ष अनुभव
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

७५. 'लोकानुभव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

७६. 'कल्पना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) अनुभवकें नव कलात्मक रूप देबाक शक्ति
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

७७. जे स्थिति/धारणा "अनुभवकें नव कलात्मक रूप देबाक शक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) रसात्मक वाक्य
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) कल्पना
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

७८. 'कल्पना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।

७९. काव्यशास्त्रमे 'कल्पना' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) अनुभवकें नव कलात्मक रूप देबाक शक्ति
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

८०. 'कल्पना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

८१. 'संवेदना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) दुख-सुखक सूक्ष्म मानवीय अनुभव ग्रहण करबाक क्षमता
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

८२. जे स्थिति/धारणा "दुख-सुखक सूक्ष्म मानवीय अनुभव ग्रहण करबाक क्षमता" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक लक्षण
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) संवेदना

८३. 'संवेदना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

८४. काव्यशास्त्रमे 'संवेदना' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) दुख-सुखक सूक्ष्म मानवीय अनुभव ग्रहण करबाक क्षमता
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग

८५. 'संवेदना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

८६. 'औचित्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (D) विषय, पात्र, काल, भाषा आ भावक उचित मेल

८७. जे स्थिति/धारणा "विषय, पात्र, काल, भाषा आ भावक उचित मेल" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्यक लक्षण
- (B) रसात्मक वाक्य
- (C) औचित्य
- (D) शब्दार्थ-सौन्दर्य

८८. 'औचित्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।

८९. काव्यशास्त्रमे 'औचित्य' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) विषय, पात्र, काल, भाषा आ भावक उचित मेल
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

९०. 'औचित्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।

९१. 'सहृदय'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (B) रस ग्रहण करबाक संस्कारयुक्त पाठक वा श्रोता
- (C) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

९२. जे स्थिति/धारणा "रस ग्रहण करबाक संस्कारयुक्त पाठक वा श्रोता" हो, ओकर नाम की?

- (A) सहृदय
- (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (C) रसात्मक वाक्य
- (D) काव्यक लक्षण

९३. 'सहृदय' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।

९४. काव्यशास्त्रमे 'सहृदय' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि
- (C) रस ग्रहण करबाक संस्कारयुक्त पाठक वा श्रोता
- (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल

९५. 'सहृदय' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (B) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।

९६. 'ध्वनि-सूत्र'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (C) कहल बातक पाछाँ सूचित गहिर अर्थ
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

९७. जे स्थिति/धारणा “कहल बातक पाछाँ सूचित गहिर अर्थ” हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दार्थ-सौन्दर्य
- (B) काव्यक लक्षण
- (C) ध्वनि-सूत्र
- (D) रसात्मक वाक्य

९८. ‘ध्वनि-सूत्र’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त’ काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (D) ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।

९९. काव्यशास्त्रमे ‘ध्वनि-सूत्र’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग
- (B) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल
- (C) कहल बातक पाछाँ सूचित गहिर अर्थ
- (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि

१००. ‘ध्वनि-सूत्र’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
- (C) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त’ काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
- (D) ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।

१०१. ‘पद्य’क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य

१०२. जे स्थिति/धारणा “लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) पद्य
- (C) गद्य
- (D) प्रबन्ध-काव्य

१०३. ‘पद्य’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१०४. काव्यशास्त्रमे ‘पद्य’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१०५. 'पद्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१०६. 'गद्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१०७. जे स्थिति/धारणा "छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रबन्ध-काव्य
- (B) पद्य
- (C) गद्य
- (D) चम्पू

१०८. 'गद्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१०९. काव्यशास्त्रमे 'गद्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य

११०. 'गद्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।

१११. 'चम्पू'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य

११२. जे स्थिति/धारणा "गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) प्रबन्ध-काव्य
- (C) गद्य
- (D) पद्य

११३. 'चम्पू' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।

११४. काव्यशास्त्रमे 'चम्पू' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

११५. 'चम्पू' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

११६. 'प्रबन्ध-काव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

११७. जे स्थिति/धारणा "विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) गद्य
- (B) प्रबन्ध-काव्य
- (C) पद्य
- (D) चम्पू

११८. 'प्रबन्ध-काव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

११९. काव्यशास्त्रमे 'प्रबन्ध-काव्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१२०. 'प्रबन्ध-काव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१२१. 'मुक्तक-काव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) स्वतंत्र पद जे अपने-आपमे पूर्ण हो
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१२२. जे स्थिति/धारणा "स्वतंत्र पद जे अपने-आपमे पूर्ण हो" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) मुक्तक-काव्य
- (C) गद्य
- (D) पद्य

१२३. 'मुक्तक-काव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१२४. काव्यशास्त्रमे 'मुक्तक-काव्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) स्वतंत्र पद जे अपने-आपमे पूर्ण हो

१२५. 'मुक्तक-काव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१२६. 'महाकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) विशाल कथाविस्तार, उदात्त नायक आ व्यापक दृष्टिवला काव्य
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१२७. जे स्थिति/धारणा "विशाल कथाविस्तार, उदात्त नायक आ व्यापक दृष्टिवला काव्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) महाकाव्य
- (B) गद्य
- (C) पद्य
- (D) चम्पू

१२८. 'महाकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१२९. काव्यशास्त्रमे 'महाकाव्य' के केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) विशाल कथाविस्तार, उदात्त नायक आ व्यापक दृष्टिवला काव्य
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१३०. 'महाकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१३१. 'खण्डकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) कोनो एक प्रसंग वा जीवन-खंड पर केन्द्रित काव्य

१३२. जे स्थिति/धारणा "कोनो एक प्रसंग वा जीवन-खंड पर केन्द्रित काव्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) गद्य
- (C) पद्य
- (D) खण्डकाव्य

१३३. 'खण्डकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१३४. काव्यशास्त्रमे 'खण्डकाव्य' के केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) कोनो एक प्रसंग वा जीवन-खंड पर केन्द्रित काव्य

१३५. 'खण्डकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१३६. 'गीतिकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) व्यक्तिगत भाव, लय आ गेयता प्रधान काव्य

१३७. जे स्थिति/धारणा “व्यक्तिगत भाव, लय आ गेयता प्रधान काव्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) गद्य
- (C) पद्य
- (D) गीतिकाव्य

१३८. ‘गीतिकाव्य’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) गीतिका मे भावक तीव्रता आ संगीतात्मकता रहैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१३९. काव्यशास्त्रमे ‘गीतिकाव्य’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) व्यक्तिगत भाव, लय आ गेयता प्रधान काव्य

१४०. ‘गीतिकाव्य’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गीतिका मे भावक तीव्रता आ संगीतात्मकता रहैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१४१. ‘नाटक’क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) संवाद, अभिनय आ मंचनयोग्य दृश्य काव्य

१४२. जे स्थिति/धारणा “संवाद, अभिनय आ मंचनयोग्य दृश्य काव्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) नाटक
- (B) चम्पू
- (C) पद्य
- (D) गद्य

१४३. ‘नाटक’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) नाटकक पूर्णता मंच पर खुलैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१४४. काव्यशास्त्रमे ‘नाटक’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) संवाद, अभिनय आ मंचनयोग्य दृश्य काव्य
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१४५. 'नाटक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) नाटकक पूर्णता मंच पर खुलैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१४६. 'रूपक'क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) नाट्यपरम्पराक मुख्य दृश्य काव्य-रूप
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१४७. जे स्थिति/धारणा "नाट्यपरम्पराक मुख्य दृश्य काव्य-रूप" हो, ओकर नाम की?

- (A) रूपक
- (B) गद्य
- (C) चम्पू
- (D) पद्य

१४८. 'रूपक' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) रूपक अभिनय, पात्र आ रसक संगठित रूप अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१४९. काव्यशास्त्रमे 'रूपक' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) नाट्यपरम्पराक मुख्य दृश्य काव्य-रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१५०. 'रूपक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रूपक अभिनय, पात्र आ रसक संगठित रूप अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१५१. 'उपरूपक'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) रूपकसँ छोट वा विशिष्ट दृश्य काव्य-प्रकार

१५२. जे स्थिति/धारणा "रूपकसँ छोट वा विशिष्ट दृश्य काव्य-प्रकार" हो, ओकर नाम की?

- (A) गद्य
- (B) उपरूपक
- (C) पद्य
- (D) चम्पू

१५३. 'उपरूपक' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) उपरूपक नाट्यक सहायक भेद मानल जाइत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१५४. काव्यशास्त्रमे 'उपरूपक' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) रूपकसँ छोट वा विशिष्ट दृश्य काव्य-प्रकार
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१५५. 'उपरूपक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) उपरूपक नाट्यक सहायक भेद मानल जाइत अछि।

१५६. 'कथा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) घटना, पात्र आ कथानक पर आधारित रचना

१५७. जे स्थिति/धारणा "घटना, पात्र आ कथानक पर आधारित रचना" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) कथा
- (C) गद्य
- (D) पद्य

१५८. 'कथा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) कथा मे वृत्तान्त आ पात्र-व्यवहार प्रधान रहैत अछि।

१५९. काव्यशास्त्रमे 'कथा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) घटना, पात्र आ कथानक पर आधारित रचना

१६०. 'कथा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) कथा मे वृत्तान्त आ पात्र-व्यवहार प्रधान रहैत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१६१. 'आख्यायिका'क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) वर्णनात्मक कथा-प्रधान गद्यरचना
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१६२. जे स्थिति/धारणा "वर्णनात्मक कथा-प्रधान गद्यरचना" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) आख्यायिका
- (C) गद्य
- (D) पद्य

१६३. 'आख्यायिका' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) आख्यायिका मे वृत्तान्तक विस्तार महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१६४. काव्यशास्त्रमे 'आख्यायिका' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) वर्णनात्मक कथा-प्रधान गद्यरचना

१६५. 'आख्यायिका' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) आख्यायिका मे वृत्तान्तक विस्तार महत्त्वपूर्ण होइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१६६. 'श्रव्यकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे सुनल वा पढ़ल जा सकय
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१६७. जे स्थिति/धारणा "जे सुनल वा पढ़ल जा सकय" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) श्रव्यकाव्य
- (C) गद्य
- (D) पद्य

१६८. 'श्रव्यकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) श्रव्यकाव्य वाचन, पाठ आ गायनसँ आस्वादित होइत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१६९. काव्यशास्त्रमे 'श्रव्यकाव्य' के केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) जे सुनल वा पढ़ल जा सकय
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१७०. 'श्रव्यकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) श्रव्यकाव्य वाचन, पाठ आ गायनसँ आस्वादित होइत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१७१. 'दृश्यकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे मंच पर देखल जा सकय
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१७२. जे स्थिति/धारणा "जे मंच पर देखल जा सकय" हो, ओकर नाम की?

- (A) गद्य
- (B) चम्पू
- (C) पद्य
- (D) दृश्यकाव्य

१७३. 'दृश्यकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) दृश्यकाव्य अभिनय आ दृश्य-विधानसँ सम्बद्ध अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१७४. काव्यशास्त्रमे 'दृश्यकाव्य' के केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) जे मंच पर देखल जा सकय
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१७५. 'दृश्यकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) दृश्यकाव्य अभिनय आ दृश्य-विधानसँ सम्बद्ध अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१७६. 'भक्तिकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) भक्ति, समर्पण आ आराध्य-भावक काव्य
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१७७. जे स्थिति/धारणा “भक्ति, समर्पण आ आराध्य-भावक काव्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) भक्तिकाव्य
- (B) गद्य
- (C) पद्य
- (D) चम्पू

१७८. ‘भक्तिकाव्य’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१७९. काव्यशास्त्रमे ‘भक्तिकाव्य’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) भक्ति, समर्पण आ आराध्य-भावक काव्य
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१८०. ‘भक्तिकाव्य’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१८१. ‘शृङ्गार-काव्य’क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (D) प्रेम, सौन्दर्य, मिलन-विरह आ रति-भावक काव्य

१८२. जे स्थिति/धारणा “प्रेम, सौन्दर्य, मिलन-विरह आ रति-भावक काव्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) गद्य
- (B) चम्पू
- (C) शृङ्गार-काव्य
- (D) पद्य

१८३. ‘शृङ्गार-काव्य’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।

१८४. काव्यशास्त्रमे ‘शृङ्गार-काव्य’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) प्रेम, सौन्दर्य, मिलन-विरह आ रति-भावक काव्य
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१८५. 'शृङ्गार-काव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।

१८६. 'वीरकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) शौर्य, उत्साह आ पराक्रम प्रधान काव्य
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१८७. जे स्थिति/धारणा "शौर्य, उत्साह आ पराक्रम प्रधान काव्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) वीरकाव्य
- (B) गद्य
- (C) चम्पू
- (D) पद्य

१८८. 'वीरकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।

१८९. काव्यशास्त्रमे 'वीरकाव्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) शौर्य, उत्साह आ पराक्रम प्रधान काव्य
- (C) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (D) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना

१९०. 'वीरकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (C) वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१९१. 'नीतिकाव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) व्यवहार, सदाचार आ नीति-ज्ञानक काव्य
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

१९२. जे स्थिति/धारणा "व्यवहार, सदाचार आ नीति-ज्ञानक काव्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) चम्पू
- (B) पद्य
- (C) गद्य
- (D) नीतिकाव्य

१९३. 'नीतिकाव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१९४. काव्यशास्त्रमे 'नीतिकाव्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (C) व्यवहार, सदाचार आ नीति-ज्ञानक काव्य
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१९५. 'नीतिकाव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।

१९६. 'वर्णनात्मक काव्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप
- (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (C) ऋतु, प्रकृति, नगर, युद्ध वा सौन्दर्यक विस्तारयुक्त चित्रण
- (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य

१९७. जे स्थिति/धारणा "ऋतु, प्रकृति, नगर, युद्ध वा सौन्दर्यक विस्तारयुक्त चित्रण" हो, ओकर नाम की?

- (A) पद्य
- (B) वर्णनात्मक काव्य
- (C) चम्पू
- (D) गद्य

१९८. 'वर्णनात्मक काव्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (B) वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
- (C) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।

१९९. काव्यशास्त्रमे 'वर्णनात्मक काव्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना
- (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य
- (C) ऋतु, प्रकृति, नगर, युद्ध वा सौन्दर्यक विस्तारयुक्त चित्रण
- (D) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप

२००. 'वर्णनात्मक काव्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
- (B) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
- (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
- (D) वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।

२०१. 'अभिधा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२०२. जे स्थिति/धारणा "शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) मुख्यार्थ
- (C) व्यंजना
- (D) अभिधा

२०३. 'अभिधा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।

२०४. काव्यशास्त्रमे 'अभिधा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२०५. 'अभिधा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (D) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।

२०६. 'लक्षणा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ

२०७. जे स्थिति/धारणा "मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) अभिधा
- (C) मुख्यार्थ
- (D) व्यंजना

२०८. 'लक्षणा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (B) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२०९. काव्यशास्त्रमे 'लक्षणा' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ

२१०. 'लक्षणा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।

२११. 'व्यंजना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ

२१२. जे स्थिति/धारणा "मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) व्यंजना
- (C) मुख्यार्थ
- (D) अभिधा

२१३. 'व्यंजना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२१४. काव्यशास्त्रमे 'व्यंजना' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२१५. 'व्यंजना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।

२१६. 'मुख्यार्थ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२१७. जे स्थिति/धारणा “शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ” हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) अभिधा
- (C) मुख्यार्थ
- (D) व्यंजना

२१८. ‘मुख्यार्थ’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२१९. काव्यशास्त्रमे ‘मुख्यार्थ’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्दक प्राथमिक आ प्रत्यक्ष अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२२०. ‘मुख्यार्थ’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) मुख्यार्थ अभिधासँ ज्ञात होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।

२२१. ‘लक्ष्यार्थ’क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षणा द्वारा ग्रहण कएल सम्बन्धित अर्थ
- (B) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२२२. जे स्थिति/धारणा “लक्षणा द्वारा ग्रहण कएल सम्बन्धित अर्थ” हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) लक्षणा
- (C) व्यंजना
- (D) लक्ष्यार्थ

२२३. ‘लक्ष्यार्थ’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्ष्यार्थ मुख्यार्थसँ सम्बन्ध राखैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२२४. काव्यशास्त्रमे ‘लक्ष्यार्थ’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लक्षणा द्वारा ग्रहण कएल सम्बन्धित अर्थ
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२२५. 'लक्ष्यार्थ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) लक्ष्यार्थ मुख्यार्थसँ सम्बन्ध राखैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२२६. 'व्यंग्यार्थ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) व्यंजना द्वारा सूचित अप्रत्यक्ष अर्थ

२२७. जे स्थिति/धारणा "व्यंजना द्वारा सूचित अप्रत्यक्ष अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) व्यंग्यार्थ
- (B) लक्षणा
- (C) अभिधा
- (D) व्यंजना

२२८. 'व्यंग्यार्थ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) व्यंग्यार्थ सीधे नहि कहल गेल, मुदा अनुभवित होइत अछि।

२२९. काव्यशास्त्रमे 'व्यंग्यार्थ' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) व्यंजना द्वारा सूचित अप्रत्यक्ष अर्थ
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२३०. 'व्यंग्यार्थ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंग्यार्थ सीधे नहि कहल गेल, मुदा अनुभवित होइत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२३१. 'वाच्यार्थ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) वाक्य वा शब्दसँ सीधे व्यक्त अर्थ

२३२. जे स्थिति/धारणा "वाक्य वा शब्दसँ सीधे व्यक्त अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) वाच्यार्थ
- (B) लक्षणा
- (C) व्यंजना
- (D) अभिधा

२३३. 'वाच्यार्थ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) वाच्यार्थ अभिधात्मक अर्थक निकट अछि।

२३४. काव्यशास्त्रमे 'वाच्यार्थ' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) वाक्य वा शब्दसँ सीधे व्यक्त अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२३५. 'वाच्यार्थ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) वाच्यार्थ अभिधात्मक अर्थक निकट अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२३६. 'ध्वन्यार्थ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) कथित अर्थक पाछाँक ध्वनित अर्थ
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२३७. जे स्थिति/धारणा "कथित अर्थक पाछाँक ध्वनित अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) ध्वन्यार्थ
- (B) लक्षणा
- (C) व्यंजना
- (D) अभिधा

२३८. 'ध्वन्यार्थ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) ध्वन्यार्थ सहृदयक अनुभूति सँ खुलैत अछि।

२३९. काव्यशास्त्रमे 'ध्वन्यार्थ' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कथित अर्थक पाछाँक ध्वनित अर्थ
- (B) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२४०. 'ध्वन्यार्थ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) ध्वन्यार्थ सहृदयक अनुभूति सँ खुलैत अछि।

२४१. 'रूढ़ि'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) प्रचलनसँ स्थिर भेल अर्थ

२४२. जे स्थिति/धारणा “प्रचलनसँ स्थिर भेल अर्थ” हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) रूढ़ि
- (C) व्यंजना
- (D) लक्षणा

२४३. 'रूढ़ि' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) रूढ़ि समाजक प्रयोग पर टिकैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२४४. काव्यशास्त्रमे 'रूढ़ि' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (C) प्रचलनसँ स्थिर भेल अर्थ
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२४५. 'रूढ़ि' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) रूढ़ि समाजक प्रयोग पर टिकैत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२४६. 'योग'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) शब्दक अवयव वा व्युत्पत्तिसँ निकलल अर्थ
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२४७. जे स्थिति/धारणा “शब्दक अवयव वा व्युत्पत्तिसँ निकलल अर्थ” हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) व्यंजना
- (C) लक्षणा
- (D) योग

२४८. 'योग' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) योग अर्थ शब्द-रचना पर आधारित होइत अछि।

२४९. काव्यशास्त्रमे 'योग' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्दक अवयव वा व्युत्पत्तिसँ निकलल अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२५०. 'योग' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) योग अर्थ शब्द-रचना पर आधारित होइत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२५१. 'योगरूढ़ि'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) व्युत्पत्ति आ प्रचलन दुनूक संयुक्त अर्थ
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२५२. जे स्थिति/धारणा "व्युत्पत्ति आ प्रचलन दुनूक संयुक्त अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) व्यंजना
- (B) अभिधा
- (C) लक्षणा
- (D) योगरूढ़ि

२५३. 'योगरूढ़ि' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) योगरूढ़िमे रचना आ रूढ़ि दुनू सक्रिय रहैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२५४. काव्यशास्त्रमे 'योगरूढ़ि' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) व्युत्पत्ति आ प्रचलन दुनूक संयुक्त अर्थ

२५५. 'योगरूढ़ि' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) योगरूढ़िमे रचना आ रूढ़ि दुनू सक्रिय रहैत अछि।

२५६. 'जहल्लक्षणा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ पूर्ण छोड़ि लक्ष्यार्थ ग्रहण
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२५७. जे स्थिति/धारणा “मुख्यार्थ पूर्ण छोड़ि लक्ष्यार्थ ग्रहण” हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) जहल्लक्षणा
- (C) व्यंजना
- (D) अभिधा

२५८. ‘जहल्लक्षणा’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) एहि लक्षणामे मूल अर्थ त्यागि देल जाइत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।

२५९. काव्यशास्त्रमे ‘जहल्लक्षणा’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ पूर्ण छोड़ि लक्ष्यार्थ ग्रहण
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२६०. ‘जहल्लक्षणा’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) एहि लक्षणामे मूल अर्थ त्यागि देल जाइत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।

२६१. ‘अजहल्लक्षणा’क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ छोड़ने बिना ओकर विस्तारसँ अर्थ ग्रहण
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२६२. जे स्थिति/धारणा “मुख्यार्थ छोड़ने बिना ओकर विस्तारसँ अर्थ ग्रहण” हो, ओकर नाम की?

- (A) व्यंजना
- (B) अजहल्लक्षणा
- (C) अभिधा
- (D) लक्षणा

२६३. ‘अजहल्लक्षणा’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) एहि लक्षणामे मुख्य अर्थक अंश टिकैत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।

२६४. काव्यशास्त्रमे ‘अजहल्लक्षणा’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ छोड़ने बिना ओकर विस्तारसँ अर्थ ग्रहण
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२६५. 'अजहल्लक्षणा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) एहि लक्षणामे मुख्य अर्थक अंश टिकैत अछि।

२६६. 'जहदजहल्लक्षणा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थक एक भाग छोड़ि एक भाग राखि लक्ष्यार्थ ग्रहण
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२६७. जे स्थिति/धारणा "मुख्यार्थक एक भाग छोड़ि एक भाग राखि लक्ष्यार्थ ग्रहण" हो, ओकर नाम की?

- (A) व्यंजना
- (B) अभिधा
- (C) लक्षणा
- (D) जहदजहल्लक्षणा

२६८. 'जहदजहल्लक्षणा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) एहि लक्षणामे त्याग आ ग्रहण दुनू होइत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२६९. काव्यशास्त्रमे 'जहदजहल्लक्षणा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थक एक भाग छोड़ि एक भाग राखि लक्ष्यार्थ ग्रहण
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२७०. 'जहदजहल्लक्षणा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) एहि लक्षणामे त्याग आ ग्रहण दुनू होइत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२७१. 'गौणी लक्षणा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (B) गुण-साम्यक आधार पर लाक्षणिक अर्थ
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२७२. जे स्थिति/धारणा "गुण-साम्यक आधार पर लाक्षणिक अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) लक्षणा
- (C) व्यंजना
- (D) गौणी लक्षणा

२७३. 'गौणी लक्षणा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) गौणी लक्षणामे सादृश्य वा गुण सम्बन्ध काम करैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२७४. काव्यशास्त्रमे 'गौणी लक्षणा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (C) गुण-साम्यक आधार पर लाक्षणिक अर्थ
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२७५. 'गौणी लक्षणा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) गौणी लक्षणामे सादृश्य वा गुण सम्बन्ध काम करैत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।

२७६. 'प्रयोजनवती लक्षणा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) विशेष उद्देश्यसँ ग्रहण कएल लाक्षणिक अर्थ
- (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२७७. जे स्थिति/धारणा "विशेष उद्देश्यसँ ग्रहण कएल लाक्षणिक अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) अभिधा
- (C) व्यंजना
- (D) प्रयोजनवती लक्षणा

२७८. 'प्रयोजनवती लक्षणा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) कवि-प्रयोजन अर्थ-परिवर्तन करबैत अछि।

२७९. काव्यशास्त्रमे 'प्रयोजनवती लक्षणा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) विशेष उद्देश्यसँ ग्रहण कएल लाक्षणिक अर्थ
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२८०. 'प्रयोजनवती लक्षणा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (B) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (C) कवि-प्रयोजन अर्थ-परिवर्तन करबैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२८१. 'तात्पर्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पूरा कथनक अभिप्रेत अर्थ
- (B) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति

२८२. जे स्थिति/धारणा "पूरा कथनक अभिप्रेत अर्थ" हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) तात्पर्य
- (C) लक्षणा
- (D) व्यंजना

२८३. 'तात्पर्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२८४. काव्यशास्त्रमे 'तात्पर्य' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) पूरा कथनक अभिप्रेत अर्थ

२८५. 'तात्पर्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।

२८६. 'सन्दर्भ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (B) वक्ता, प्रसंग, परिस्थिति आ वाक्य-संबंध
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२८७. जे स्थिति/धारणा "वक्ता, प्रसंग, परिस्थिति आ वाक्य-संबंध" हो, ओकर नाम की?

- (A) अभिधा
- (B) व्यंजना
- (C) सन्दर्भ
- (D) लक्षणा

२८८. 'सन्दर्भ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराई दैत अछि।
- (C) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (D) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।

२८९. काव्यशास्त्रमे 'सन्दर्भ' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) वक्ता, प्रसंग, परिस्थिति आ वाक्य-संबंध
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति

२९०. 'सन्दर्भ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२९१. 'संकेत'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) शब्द आ अर्थक सामाजिक सम्बन्ध

२९२. जे स्थिति/धारणा "शब्द आ अर्थक सामाजिक सम्बन्ध" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षणा
- (B) संकेत
- (C) व्यंजना
- (D) अभिधा

२९३. 'संकेत' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
- (B) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।

२९४. काव्यशास्त्रमे 'संकेत' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (B) शब्द आ अर्थक सामाजिक सम्बन्ध
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति

२९५. 'संकेत' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२९६. 'लाक्षणिक प्रयोग'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्य अर्थ छोड़ि सम्बन्धित अर्थमे शब्दक प्रयोग

२९७. जे स्थिति/धारणा “मुख्य अर्थ छोड़ि सम्बन्धित अर्थमे शब्दक प्रयोग” हो, ओकर नाम की?

- (A) व्यंजना
- (B) लाक्षणिक प्रयोग
- (C) लक्षणा
- (D) अभिधा

२९८. ‘लाक्षणिक प्रयोग’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (C) लाक्षणिक प्रयोग भाषा केँ लचीला बनबैत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२९९. काव्यशास्त्रमे ‘लाक्षणिक प्रयोग’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मुख्यार्थ वा लक्ष्यार्थक पाछाँक सूचित गूढ़ अर्थ प्रकट कराबयवाली शक्ति
- (B) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति
- (C) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति
- (D) मुख्य अर्थ छोड़ि सम्बन्धित अर्थमे शब्दक प्रयोग

३००. ‘लाक्षणिक प्रयोग’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) व्यंजना काव्यक ध्वनि आ गहराइ दैत अछि।
- (B) लाक्षणिक प्रयोग भाषा केँ लचीला बनबैत अछि।
- (C) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
- (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

३०१. ‘रस’क सही लक्षण की अछि?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि

३०२. जे स्थिति/धारणा “भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद” हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) स्थायीभाव
- (C) आलम्बन विभाव
- (D) रस

३०३. ‘रस’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।

३०४. काव्यशास्त्रमे ‘रस’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३०५. 'रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३०६. 'स्थायीभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि

३०७. जे स्थिति/धारणा "मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि" हो, ओकर नाम की?

- (A) रस
- (B) आलम्बन विभाव
- (C) स्थायीभाव
- (D) विभाव

३०८. 'स्थायीभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३०९. काव्यशास्त्रमे 'स्थायीभाव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३१०. 'स्थायीभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।

३११. 'विभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३१२. जे स्थिति/धारणा "भाव जगाबयवला कारण वा आधार" हो, ओकर नाम की?

- (A) स्थायीभाव
- (B) विभाव
- (C) आलम्बन विभाव
- (D) रस

३१३. 'विभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३१४. काव्यशास्त्रमे 'विभाव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३१५. 'विभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३१६. 'आलम्बन विभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३१७. जे स्थिति/धारणा "जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि" हो, ओकर नाम की?

- (A) स्थायीभाव
- (B) रस
- (C) आलम्बन विभाव
- (D) विभाव

३१८. 'आलम्बन विभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३१९. काव्यशास्त्रमे 'आलम्बन विभाव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि

३२०. 'आलम्बन विभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३२१. 'उद्दीपन विभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) परिसर, ऋतु वा वस्तु जे भावकें उद्दीप्त करैत अछि
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३२२. जे स्थिति/धारणा "परिसर, ऋतु वा वस्तु जे भावकें उद्दीप्त करैत अछि" हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) उद्दीपन विभाव
- (C) रस
- (D) स्थायीभाव

३२३. 'उद्दीपन विभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३२४. काव्यशास्त्रमे 'उद्दीपन विभाव' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) परिसर, ऋतु वा वस्तु जे भावकें उद्दीप्त करैत अछि

३२५. 'उद्दीपन विभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३२६. 'अनुभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भीतरक भावक बाहरी चेष्टा
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३२७. जे स्थिति/धारणा "भीतरक भावक बाहरी चेष्टा" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुभाव
- (B) रस
- (C) स्थायीभाव
- (D) विभाव

३२८. 'अनुभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३२९. काव्यशास्त्रमे 'अनुभाव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भीतरक भावक बाहरी चेष्टा
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३३०. 'अनुभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३३१. 'सञ्चारीभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) क्षणिक सहायक भाव जे स्थायीभाव केँ पुष्ट करैत अछि

३३२. जे स्थिति/धारणा "क्षणिक सहायक भाव जे स्थायीभाव केँ पुष्ट करैत अछि" हो, ओकर नाम की?

- (A) रस
- (B) स्थायीभाव
- (C) विभाव
- (D) सञ्चारीभाव

३३३. 'सञ्चारीभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३३४. काव्यशास्त्रमे 'सञ्चारीभाव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) क्षणिक सहायक भाव जे स्थायीभाव केँ पुष्ट करैत अछि
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३३५. 'सञ्चारीभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३३६. 'शृङ्गार रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) रति स्थायीभाव पर आधारित प्रेम-सौन्दर्यक रस
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३३७. जे स्थिति/धारणा “रति स्थायीभाव पर आधारित प्रेम-सौन्दर्यक रस” हो, ओकर नाम की?

- (A) रस
- (B) विभाव
- (C) स्थायीभाव
- (D) शृङ्गार रस

३३८. ‘शृङ्गार रस’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३३९. काव्यशास्त्रमे ‘शृङ्गार रस’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) रति स्थायीभाव पर आधारित प्रेम-सौन्दर्यक रस
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३४०. ‘शृङ्गार रस’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।

३४१. ‘हास्य रस’क सही लक्षण की अछि?

- (A) हास स्थायीभाव पर आधारित विनोदक रस
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३४२. जे स्थिति/धारणा “हास स्थायीभाव पर आधारित विनोदक रस” हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) हास्य रस
- (C) रस
- (D) स्थायीभाव

३४३. ‘हास्य रस’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३४४. काव्यशास्त्रमे ‘हास्य रस’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) हास स्थायीभाव पर आधारित विनोदक रस
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३४५. 'हास्य रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।

३४६. 'करुण रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) शोक स्थायीभाव पर आधारित दया-विषादक रस

३४७. जे स्थिति/धारणा "शोक स्थायीभाव पर आधारित दया-विषादक रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) करुण रस
- (B) स्थायीभाव
- (C) विभाव
- (D) रस

३४८. 'करुण रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३४९. काव्यशास्त्रमे 'करुण रस' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) शोक स्थायीभाव पर आधारित दया-विषादक रस
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३५०. 'करुण रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।

३५१. 'रौद्र रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) क्रोध स्थायीभाव पर आधारित उग्र रस
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३५२. जे स्थिति/धारणा "क्रोध स्थायीभाव पर आधारित उग्र रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) रौद्र रस
- (C) स्थायीभाव
- (D) रस

३५३. 'रौद्र रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।

३५४. काव्यशास्त्रमे 'रौद्र रस' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) क्रोध स्थायीभाव पर आधारित उग्र रस
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३५५. 'रौद्र रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।

३५६. 'वीर रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) उत्साह स्थायीभाव पर आधारित पराक्रमक रस
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३५७. जे स्थिति/धारणा "उत्साह स्थायीभाव पर आधारित पराक्रमक रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) स्थायीभाव
- (C) रस
- (D) वीर रस

३५८. 'वीर रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३५९. काव्यशास्त्रमे 'वीर रस' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) उत्साह स्थायीभाव पर आधारित पराक्रमक रस

३६०. 'वीर रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३६१. 'भयानक रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) भय स्थायीभाव पर आधारित रस
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३६२. जे स्थिति/धारणा "भय स्थायीभाव पर आधारित रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) भयानक रस
- (B) विभाव
- (C) रस
- (D) स्थायीभाव

३६३. 'भयानक रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३६४. काव्यशास्त्रमे 'भयानक रस' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) भय स्थायीभाव पर आधारित रस
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३६५. 'भयानक रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३६६. 'बीभत्स रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) जुगुप्सा स्थायीभाव पर आधारित घृणाक रस
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३६७. जे स्थिति/धारणा "जुगुप्सा स्थायीभाव पर आधारित घृणाक रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) स्थायीभाव
- (B) विभाव
- (C) बीभत्स रस
- (D) रस

३६८. 'बीभत्स रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।

३६९. काव्यशास्त्रमे 'बीभत्स रस' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) जुगुप्सा स्थायीभाव पर आधारित घृणाक रस
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३७०. 'बीभत्स रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३७१. 'अद्भुत रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) विस्मय स्थायीभाव पर आधारित आश्चर्यक रस

३७२. जे स्थिति/धारणा "विस्मय स्थायीभाव पर आधारित आश्चर्यक रस" हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) अद्भुत रस
- (C) रस
- (D) स्थायीभाव

३७३. 'अद्भुत रस' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३७४. काव्यशास्त्रमे 'अद्भुत रस' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) विस्मय स्थायीभाव पर आधारित आश्चर्यक रस
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३७५. 'अद्भुत रस' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३७६. 'शान्त रस'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) निर्वेद वा शम पर आधारित शान्तिक रस

३७७. जे स्थिति/धारणा “निर्वेद वा शम पर आधारित शान्तिक रस” हो, ओकर नाम की?

- (A) शान्त रस
- (B) रस
- (C) विभाव
- (D) स्थायीभाव

३७८. ‘शान्त रस’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३७९. काव्यशास्त्रमे ‘शान्त रस’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) निर्वेद वा शम पर आधारित शान्तिक रस
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३८०. ‘शान्त रस’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३८१. ‘रति’क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) शृङ्गार रसक स्थायीभाव

३८२. जे स्थिति/धारणा “शृङ्गार रसक स्थायीभाव” हो, ओकर नाम की?

- (A) विभाव
- (B) स्थायीभाव
- (C) रस
- (D) रति

३८३. ‘रति’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) रति प्रेमक मूल भाव अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३८४. काव्यशास्त्रमे ‘रति’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शृङ्गार रसक स्थायीभाव
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३८५. 'रति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) रस काव्यक प्राण अछि।
- (B) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (C) रति प्रेमक मूल भाव अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३८६. 'शोक'क सही लक्षण की अछि?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) करुण रसक स्थायीभाव
- (C) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३८७. जे स्थिति/धारणा "करुण रसक स्थायीभाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) स्थायीभाव
- (B) रस
- (C) शोक
- (D) विभाव

३८८. 'शोक' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३८९. काव्यशास्त्रमे 'शोक' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) करुण रसक स्थायीभाव
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद

३९०. 'शोक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
- (B) रस काव्यक प्राण अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि।

३९१. 'उत्साह'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (C) वीर रसक स्थायीभाव
- (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार

३९२. जे स्थिति/धारणा "वीर रसक स्थायीभाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) उत्साह
- (B) विभाव
- (C) रस
- (D) स्थायीभाव

३९३. 'उत्साह' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उत्साह साहसक आधार अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३९४. काव्यशास्त्रमे 'उत्साह' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (D) वीर रसक स्थायीभाव

३९५. 'उत्साह' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (B) उत्साह साहसक आधार अछि।
- (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

३९६. 'विस्मय'क सही लक्षण की अछि?

- (A) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (B) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (C) अद्भुत रसक स्थायीभाव
- (D) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि

३९७. जे स्थिति/धारणा "अद्भुत रसक स्थायीभाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) विस्मय
- (B) विभाव
- (C) स्थायीभाव
- (D) रस

३९८. 'विस्मय' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) रस काव्यक प्राण अछि।
- (D) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।

३९९. काव्यशास्त्रमे 'विस्मय' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद
- (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार
- (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि
- (D) अद्भुत रसक स्थायीभाव

४००. 'विस्मय' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
- (B) विभाव भावक जागरण करैत अछि।
- (C) विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
- (D) रस काव्यक प्राण अछि।

४०१. 'प्रसाद गुण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह

४०२. जे स्थिति/धारणा "सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) ओज गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) समता गुण

४०३. 'प्रसाद गुण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।

४०४. काव्यशास्त्रमे 'प्रसाद गुण' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४०५. 'प्रसाद गुण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४०६. 'माधुर्य गुण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४०७. जे स्थिति/धारणा "कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) ओज गुण
- (D) समता गुण

४०८. 'माधुर्य गुण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४०९. काव्यशास्त्रमे 'माधुर्य गुण' के केना चिन्हल जाए?

- (A) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४१०. 'माधुर्य गुण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४११. 'ओज गुण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह

४१२. जे स्थिति/धारणा "तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) समता गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) ओज गुण

४१३. 'ओज गुण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४१४. काव्यशास्त्रमे 'ओज गुण' के केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह

४१५. 'ओज गुण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४१६. 'समता गुण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह

४१७. जे स्थिति/धारणा “भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह” हो, ओकर नाम की?

- (A) समता गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) ओज गुण
- (D) प्रसाद गुण

४१८. ‘समता गुण’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) समता रचनाकें टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४१९. काव्यशास्त्रमे ‘समता गुण’ कें केना चिन्हल जाए?

- (A) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४२०. ‘समता गुण’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) समता रचनाकें टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४२१. ‘सौकुमार्य’क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) कोमलता आ नाजुक भाषा-प्रयोग

४२२. जे स्थिति/धारणा “कोमलता आ नाजुक भाषा-प्रयोग” हो, ओकर नाम की?

- (A) सौकुमार्य
- (B) प्रसाद गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) ओज गुण

४२३. ‘सौकुमार्य’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४२४. काव्यशास्त्रमे ‘सौकुमार्य’ कें केना चिन्हल जाए?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) कोमलता आ नाजुक भाषा-प्रयोग

४२५. 'सौकुमार्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४२६. 'अर्थव्यक्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) अर्थक स्पष्ट आ पूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४२७. जे स्थिति/धारणा "अर्थक स्पष्ट आ पूर्ण अभिव्यक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) ओज गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) अर्थव्यक्ति

४२८. 'अर्थव्यक्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (D) अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।

४२९. काव्यशास्त्रमे 'अर्थव्यक्ति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) अर्थक स्पष्ट आ पूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४३०. 'अर्थव्यक्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।

४३१. 'उदारता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) विस्तृत, उन्नत आ गरिमामय भाव

४३२. जे स्थिति/धारणा "विस्तृत, उन्नत आ गरिमामय भाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) ओज गुण
- (D) उदारता

४३३. 'उदारता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४३४. काव्यशास्त्रमे 'उदारता' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) विस्तृत, उन्नत आ गरिमामय भाव
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४३५. 'उदारता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४३६. 'कान्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) भाषाक चमक आ सौन्दर्यपूर्ण उज्ज्वलता
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४३७. जे स्थिति/धारणा "भाषाक चमक आ सौन्दर्यपूर्ण उज्ज्वलता" हो, ओकर नाम की?

- (A) माधुर्य गुण
- (B) कान्ति
- (C) प्रसाद गुण
- (D) ओज गुण

४३८. 'कान्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।

४३९. काव्यशास्त्रमे 'कान्ति' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) भाषाक चमक आ सौन्दर्यपूर्ण उज्ज्वलता
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४४०. 'कान्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४४१. 'वैदर्भी रीति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) सरल, मधुर, प्रसादपूर्ण आ कोमल शैली
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४४२. जे स्थिति/धारणा "सरल, मधुर, प्रसादपूर्ण आ कोमल शैली" हो, ओकर नाम की?

- (A) वैदर्भी रीति
- (B) माधुर्य गुण
- (C) प्रसाद गुण
- (D) ओज गुण

४४३. 'वैदर्भी रीति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४४४. काव्यशास्त्रमे 'वैदर्भी रीति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) सरल, मधुर, प्रसादपूर्ण आ कोमल शैली

४४५. 'वैदर्भी रीति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४४६. 'गौड़ी रीति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) ओजस्वी, गाढ़ आ समासयुक्त शैली
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४४७. जे स्थिति/धारणा "ओजस्वी, गाढ़ आ समासयुक्त शैली" हो, ओकर नाम की?

- (A) ओज गुण
- (B) प्रसाद गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) गौड़ी रीति

४४८. 'गौड़ी रीति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४४९. काव्यशास्त्रमे 'गौड़ी रीति' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) ओजस्वी, गाढ़ आ समासयुक्त शैली

४५०. 'गौड़ी रीति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४५१. 'पाञ्चाली रीति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) मध्यम, संतुलित आ स्वाभाविक शैली
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४५२. जे स्थिति/धारणा "मध्यम, संतुलित आ स्वाभाविक शैली" हो, ओकर नाम की?

- (A) ओज गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) प्रसाद गुण
- (D) पाञ्चाली रीति

४५३. 'पाञ्चाली रीति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४५४. काव्यशास्त्रमे 'पाञ्चाली रीति' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) मध्यम, संतुलित आ स्वाभाविक शैली

४५५. 'पाञ्चाली रीति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।

४५६. 'रीति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) शब्द-व्यवस्था आ शैलीक विशिष्ट मार्ग

४५७. जे स्थिति/धारणा “शब्द-व्यवस्था आ शैलीक विशिष्ट मार्ग” हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) रीति
- (D) ओज गुण

४५८. ‘रीति’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) रीति कविक भाषिक चाल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४५९. काव्यशास्त्रमे ‘रीति’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) शब्द-व्यवस्था आ शैलीक विशिष्ट मार्ग
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४६०. ‘रीति’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) रीति कविक भाषिक चाल अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४६१. ‘शैली’क सही लक्षण की अछि?

- (A) कविक निज अभिव्यक्ति-पद्धति
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४६२. जे स्थिति/धारणा “कविक निज अभिव्यक्ति-पद्धति” हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) ओज गुण
- (C) शैली
- (D) माधुर्य गुण

४६३. ‘शैली’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४६४. काव्यशास्त्रमे ‘शैली’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) कविक निज अभिव्यक्ति-पद्धति

४६५. 'शैली' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।

४६६. 'पदरचना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) शब्दक क्रम, चयन आ विन्यास
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४६७. जे स्थिति/धारणा "शब्दक क्रम, चयन आ विन्यास" हो, ओकर नाम की?

- (A) माधुर्य गुण
- (B) ओज गुण
- (C) पदरचना
- (D) प्रसाद गुण

४६८. 'पदरचना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४६९. काव्यशास्त्रमे 'पदरचना' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) शब्दक क्रम, चयन आ विन्यास
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४७०. 'पदरचना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।

४७१. 'लाघव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) कम शब्दमे प्रभावी कथन

४७२. जे स्थिति/धारणा "कम शब्दमे प्रभावी कथन" हो, ओकर नाम की?

- (A) माधुर्य गुण
- (B) प्रसाद गुण
- (C) लाघव
- (D) ओज गुण

४७३. 'लाघव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४७४. काव्यशास्त्रमे 'लाघव' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) कम शब्दमे प्रभावी कथन
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४७५. 'लाघव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४७६. 'गाम्भीर्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) गहिर आ विचारपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४७७. जे स्थिति/धारणा "गहिर आ विचारपूर्ण अभिव्यक्ति" हो, ओकर नाम की?

- (A) माधुर्य गुण
- (B) ओज गुण
- (C) गाम्भीर्य
- (D) प्रसाद गुण

४७८. 'गाम्भीर्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४७९. काव्यशास्त्रमे 'गाम्भीर्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) गहिर आ विचारपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४८०. 'गाम्भीर्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४८१. 'सरलता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) बिना जटिलता सहज अर्थ पहुँचाबयवाली भाषा
- (B) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४८२. जे स्थिति/धारणा "बिना जटिलता सहज अर्थ पहुँचाबयवाली भाषा" हो, ओकर नाम की?

- (A) सरलता
- (B) ओज गुण
- (C) माधुर्य गुण
- (D) प्रसाद गुण

४८३. 'सरलता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४८४. काव्यशास्त्रमे 'सरलता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) बिना जटिलता सहज अर्थ पहुँचाबयवाली भाषा

४८५. 'सरलता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (B) सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।

४८६. 'दीप्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेजस्वी आ चमकदार प्रभाव
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४८७. जे स्थिति/धारणा "तेजस्वी आ चमकदार प्रभाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) दीप्ति
- (D) ओज गुण

४८८. 'दीप्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।

४८९. काव्यशास्त्रमे 'दीप्ति' के केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (C) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (D) तेजस्वी आ चमकदार प्रभाव

४९०. 'दीप्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

४९१. 'लय-समता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (C) वाक्य आ पदक संतुलित गति
- (D) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा

४९२. जे स्थिति/धारणा "वाक्य आ पदक संतुलित गति" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रसाद गुण
- (B) लय-समता
- (C) माधुर्य गुण
- (D) ओज गुण

४९३. 'लय-समता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (D) लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।

४९४. काव्यशास्त्रमे 'लय-समता' के केना चिन्हल जाए?

- (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह
- (B) वाक्य आ पदक संतुलित गति
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति

४९५. 'लय-समता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४९६. 'शब्द-चयन'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (B) भावानुकूल सटीक शब्दक चयन
- (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

४९७. जे स्थिति/धारणा “भावानुकूल सटीक शब्दक चयन” हो, ओकर नाम की?

- (A) ओज गुण
- (B) माधुर्य गुण
- (C) शब्द-चयन
- (D) प्रसाद गुण

४९८. ‘शब्द-चयन’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (B) शब्द-चयन औचित्य आ गुण केँ पुष्ट करैत अछि।
- (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
- (D) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।

४९९. काव्यशास्त्रमे ‘शब्द-चयन’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा
- (B) भावानुकूल सटीक शब्दक चयन
- (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति
- (D) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह

५००. ‘शब्द-चयन’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द-चयन औचित्य आ गुण केँ पुष्ट करैत अछि।
- (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
- (C) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
- (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।

५०१. ‘अलंकार’क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग

५०२. जे स्थिति/धारणा “काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास” हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दालंकार
- (B) अनुप्रास
- (C) अर्थालंकार
- (D) अलंकार

५०३. ‘अलंकार’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५०४. काव्यशास्त्रमे ‘अलंकार’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५०५. 'अलंकार' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५०६. 'शब्दालंकार'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५०७. जे स्थिति/धारणा "जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुप्रास
- (B) शब्दालंकार
- (C) अलंकार
- (D) अर्थालंकार

५०८. 'शब्दालंकार' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५०९. काव्यशास्त्रमे 'शब्दालंकार' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५१०. 'शब्दालंकार' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५११. 'अर्थालंकार'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५१२. जे स्थिति/धारणा "जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुप्रास
- (B) अर्थालंकार
- (C) अलंकार
- (D) शब्दालंकार

५१३. 'अर्थालंकार' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।

५१४. काव्यशास्त्रमे 'अर्थालंकार' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५१५. 'अर्थालंकार' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५१६. 'अनुप्रास'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग

५१७. जे स्थिति/धारणा "एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुप्रास
- (B) शब्दालंकार
- (C) अर्थालंकार
- (D) अलंकार

५१८. 'अनुप्रास' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५१९. काव्यशास्त्रमे 'अनुप्रास' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५२०. 'अनुप्रास' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५२१. 'श्लेष'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) एके शब्दसँ अनेक अर्थक बोध
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५२२. जे स्थिति/धारणा "एके शब्दसँ अनेक अर्थक बोध" हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) शब्दालंकार
- (C) अलंकार
- (D) श्लेष

५२३. 'श्लेष' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।

५२४. काव्यशास्त्रमे 'श्लेष' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) एके शब्दसँ अनेक अर्थक बोध
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५२५. 'श्लेष' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५२६. 'यमक'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) एके शब्द वा ध्वनिक पुनरावृत्ति, मुदा अर्थ भिन्न
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५२७. जे स्थिति/धारणा "एके शब्द वा ध्वनिक पुनरावृत्ति, मुदा अर्थ भिन्न" हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दालंकार
- (B) यमक
- (C) अर्थालंकार
- (D) अलंकार

५२८. 'यमक' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५२९. काव्यशास्त्रमे 'यमक' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) एके शब्द वा ध्वनिक पुनरावृत्ति, मुदा अर्थ भिन्न
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५३०. 'यमक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५३१. 'उपमा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) उपमेय आ उपमानक स्पष्ट सादृश्य
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५३२. जे स्थिति/धारणा "उपमेय आ उपमानक स्पष्ट सादृश्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) उपमा
- (B) अर्थालंकार
- (C) शब्दालंकार
- (D) अलंकार

५३३. 'उपमा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) उपमामे 'सन', 'जकाँ', 'समान' आदि संकेत भेटैत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५३४. काव्यशास्त्रमे 'उपमा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) उपमेय आ उपमानक स्पष्ट सादृश्य
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५३५. 'उपमा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उपमामे 'सन', 'जकाँ', 'समान' आदि संकेत भेटैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५३६. 'रूपक'क सही लक्षण की अछि?

- (A) उपमेय केँ उपमान मानि अभेद स्थापित करब
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५३७. जे स्थिति/धारणा “उपमेय केँ उपमान मानि अभेद स्थापित करब” हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) रूपक
- (C) अलंकार
- (D) शब्दालंकार

५३८. ‘रूपक’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५३९. काव्यशास्त्रमे ‘रूपक’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) उपमेय केँ उपमान मानि अभेद स्थापित करब
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५४०. ‘रूपक’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५४१. ‘उत्प्रेक्षा’क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) सम्भावना वा कल्पनात्मक सादृश्य
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५४२. जे स्थिति/धारणा “सम्भावना वा कल्पनात्मक सादृश्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) शब्दालंकार
- (C) उत्प्रेक्षा
- (D) अलंकार

५४३. ‘उत्प्रेक्षा’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५४४. काव्यशास्त्रमे ‘उत्प्रेक्षा’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) सम्भावना वा कल्पनात्मक सादृश्य
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५४५. 'उत्प्रेक्षा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) 'मानू', 'लगै जे' आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५४६. 'विभावना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) कारण बिना कार्य घटित भेल जकाँ कथन
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५४७. जे स्थिति/धारणा "कारण बिना कार्य घटित भेल जकाँ कथन" हो, ओकर नाम की?

- (A) विभावना
- (B) अलंकार
- (C) अर्थालंकार
- (D) शब्दालंकार

५४८. 'विभावना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।

५४९. काव्यशास्त्रमे 'विभावना' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) कारण बिना कार्य घटित भेल जकाँ कथन

५५०. 'विभावना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५५१. 'विशेषोक्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) कारण रहितो कार्य नहि भेल जकाँ कथन
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५५२. जे स्थिति/धारणा "कारण रहितो कार्य नहि भेल जकाँ कथन" हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) शब्दालंकार
- (C) अलंकार
- (D) विशेषोक्ति

५५३. 'विशेषोक्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५५४. काव्यशास्त्रमे 'विशेषोक्ति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) कारण रहितो कार्य नहि भेल जकाँ कथन
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५५५. 'विशेषोक्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।

५५६. 'अतिशयोक्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) बढ़ा-चढ़ा कऽ कथन

५५७. जे स्थिति/धारणा "बढ़ा-चढ़ा कऽ कथन" हो, ओकर नाम की?

- (A) अतिशयोक्ति
- (B) अलंकार
- (C) शब्दालंकार
- (D) अर्थालंकार

५५८. 'अतिशयोक्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५५९. काव्यशास्त्रमे 'अतिशयोक्ति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) बढ़ा-चढ़ा कऽ कथन
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५६०. 'अतिशयोक्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५६१. 'अप्रस्तुत-प्रशंसा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) अप्रस्तुत वस्तुद्वारा प्रस्तुत विषयक प्रशंसा वा निन्दा
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५६२. जे स्थिति/धारणा "अप्रस्तुत वस्तुद्वारा प्रस्तुत विषयक प्रशंसा वा निन्दा" हो, ओकर नाम की?

- (A) अलंकार
- (B) अर्थालंकार
- (C) अप्रस्तुत-प्रशंसा
- (D) शब्दालंकार

५६३. 'अप्रस्तुत-प्रशंसा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५६४. काव्यशास्त्रमे 'अप्रस्तुत-प्रशंसा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) अप्रस्तुत वस्तुद्वारा प्रस्तुत विषयक प्रशंसा वा निन्दा
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५६५. 'अप्रस्तुत-प्रशंसा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५६६. 'समासोक्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ अप्रस्तुत अर्थक संकेत
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५६७. जे स्थिति/धारणा "संक्षिप्त कथनमे गूढ़ अप्रस्तुत अर्थक संकेत" हो, ओकर नाम की?

- (A) शब्दालंकार
- (B) अलंकार
- (C) अर्थालंकार
- (D) समासोक्ति

५६८. 'समासोक्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५६९. काव्यशास्त्रमे 'समासोक्ति' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ अप्रस्तुत अर्थक संकेत
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५७०. 'समासोक्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५७१. 'सन्देह'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) दू वा अधिक सम्भावनामे संशय व्यक्त करब
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५७२. जे स्थिति/धारणा "दू वा अधिक सम्भावनामे संशय व्यक्त करब" हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) शब्दालंकार
- (C) अलंकार
- (D) सन्देह

५७३. 'सन्देह' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।

५७४. काव्यशास्त्रमे 'सन्देह' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) दू वा अधिक सम्भावनामे संशय व्यक्त करब
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५७५. 'सन्देह' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।

५७६. 'भ्रान्तिमान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक काव्यगत भ्रम
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५७७. जे स्थिति/धारणा “एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक काव्यगत भ्रम” हो, ओकर नाम की?

- (A) अलंकार
- (B) अर्थालंकार
- (C) शब्दालंकार
- (D) भ्रान्तिमान

५७८. ‘भ्रान्तिमान’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

५७९. काव्यशास्त्रमे ‘भ्रान्तिमान’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक काव्यगत भ्रम
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५८०. ‘भ्रान्तिमान’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
- (D) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।

५८१. ‘विषम’क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) विपरीत वा असंगत वस्तुक चमत्कारपूर्ण मेल

५८२. जे स्थिति/धारणा “विपरीत वा असंगत वस्तुक चमत्कारपूर्ण मेल” हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) अलंकार
- (C) शब्दालंकार
- (D) विषम

५८३. ‘विषम’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (D) विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।

५८४. काव्यशास्त्रमे ‘विषम’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) विपरीत वा असंगत वस्तुक चमत्कारपूर्ण मेल
- (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

५८५. 'विषम' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५८६. 'वक्रोक्ति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) टेढ़, व्यंग्यपूर्ण वा चमत्कारपूर्ण कथन
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५८७. जे स्थिति/धारणा “टेढ़, व्यंग्यपूर्ण वा चमत्कारपूर्ण कथन” हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) अलंकार
- (C) शब्दालंकार
- (D) वक्रोक्ति

५८८. 'वक्रोक्ति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५८९. काव्यशास्त्रमे 'वक्रोक्ति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) टेढ़, व्यंग्यपूर्ण वा चमत्कारपूर्ण कथन

५९०. 'वक्रोक्ति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।

५९१. 'अलंकार-औचित्य'क सही लक्षण की अछि?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) अलंकारक विषय आ भावसँ मेल

५९२. जे स्थिति/धारणा “अलंकारक विषय आ भावसँ मेल” हो, ओकर नाम की?

- (A) अलंकार
- (B) अलंकार-औचित्य
- (C) अर्थालंकार
- (D) शब्दालंकार

५९३. 'अलंकार-औचित्य' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अलंकार भावकें ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५९४. काव्यशास्त्रमे 'अलंकार-औचित्य' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) अलंकारक विषय आ भावसँ मेल
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो

५९५. 'अलंकार-औचित्य' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (D) अलंकार भावकें ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।

५९६. 'अलंकार-दोष'क सही लक्षण की अछि?

- (A) अतिरिक्त सजावटसँ भावक बाधा
- (B) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास

५९७. जे स्थिति/धारणा "अतिरिक्त सजावटसँ भावक बाधा" हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार
- (B) अलंकार-दोष
- (C) शब्दालंकार
- (D) अलंकार

५९८. 'अलंकार-दोष' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अलंकारक अति काव्यकें कृत्रिम बना सकैत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
- (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।

५९९. काव्यशास्त्रमे 'अलंकार-दोष' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास
- (B) अतिरिक्त सजावटसँ भावक बाधा
- (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो
- (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो

६००. 'अलंकार-दोष' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
- (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
- (C) अलंकारक अति काव्यकें कृत्रिम बना सकैत अछि।
- (D) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।

६०१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““मधुर मुस्कीमे मन मोहित””?

- (A) उपमा
- (B) यमक
- (C) श्लेष
- (D) अनुप्रास

६०२. ““मधुर मुस्कीमे मन मोहित”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६०३. ““मधुर मुस्कीमे मन मोहित”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) उपमा
- (D) यमक

६०४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““मधुर मुस्कीमे मन मोहित””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (B) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६०५. ““मधुर मुस्कीमे मन मोहित”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) यमक
- (D) उपमा

६०६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““चमकल चाँदनी चहुँदिस””?

- (A) यमक
- (B) श्लेष
- (C) अनुप्रास
- (D) उपमा

६०७. ““चमकल चाँदनी चहुँदिस”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६०८. ““चमकल चाँदनी चहुँदिस”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) उपमा
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६०९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““चमकल चाँदनी चहुँदिस””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६१०. ““चमकल चाँदनी चहुँदिस”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) यमक
- (C) उपमा
- (D) श्लेष

६११. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““कर सँ कर लिखल गेल””?

- (A) श्लेष
- (B) उपमा
- (C) अनुप्रास
- (D) यमक

६१२. ““कर सँ कर लिखल गेल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६१३. ““कर सँ कर लिखल गेल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) उपमा

६१४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““कर सँ कर लिखल गेल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६१५. ““कर सँ कर लिखल गेल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) उपमा
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) श्लेष

६१६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““फल फलल आ फल भेटल””?

- (A) यमक
- (B) अनुप्रास
- (C) उपमा
- (D) श्लेष

६१७. ““फल फलल आ फल भेटल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।

६१८. ““फल फलल आ फल भेटल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) उपमा
- (B) श्लेष
- (C) अनुप्रास
- (D) यमक

६१९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““फल फलल आ फल भेटल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६२०. ““फल फलल आ फल भेटल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) उपमा
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६२१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““हरि नाम सुनिते मन हरल””?

- (A) अनुप्रास
- (B) उपमा
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६२२. ““हरि नाम सुनिते मन हरल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) हरि शब्द अनेक अर्थक संकेत करैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६२३. ““हरि नाम सुनिते मन हरल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) उपमा
- (C) अनुप्रास
- (D) यमक

६२४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““हरि नाम सुनिते मन हरल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) हरि शब्द अनेक अर्थक संकेत करैत अछि।

६२५. “हरि नाम सुनिते मन हरल” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) उपमा

६२६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — “मधु आयल त बगिया महकल”?

- (A) यमक
- (B) उपमा
- (C) अनुप्रास
- (D) श्लेष

६२७. “मधु आयल त बगिया महकल” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६२८. “मधु आयल त बगिया महकल” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) उपमा

६२९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ “मधु आयल त बगिया महकल”क व्याख्या कोन अछि?

- (A) मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६३०. “मधु आयल त बगिया महकल” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) उपमा
- (B) श्लेष
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६३१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — “मुख चन्द्र सन”?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) उपमा

६३२. “मुख चन्द्र सन” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) ‘सन’ स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६३३. ““मुख चन्द्र सन”” कें चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) उपमा
- (B) अनुप्रास
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६३४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““मुख चन्द्र सन””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) ‘सन’ स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६३५. ““मुख चन्द्र सन”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) उपमा

६३६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““ओ रणक सिंह अछि””?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) रूपक
- (D) यमक

६३७. ““ओ रणक सिंह अछि”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६३८. ““ओ रणक सिंह अछि”” कें चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) रूपक
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) श्लेष

६३९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““ओ रणक सिंह अछि””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६४०. ““ओ रणक सिंह अछि”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) रूपक
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६४१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““मानू मेघ विरहमे रोइत हो””?

- (A) यमक
- (B) अनुप्रास
- (C) उत्प्रेक्षा
- (D) श्लेष

६४२. ““मानू मेघ विरहमे रोइत हो”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६४३. ““मानू मेघ विरहमे रोइत हो”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) यमक
- (B) उत्प्रेक्षा
- (C) अनुप्रास
- (D) श्लेष

६४४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““मानू मेघ विरहमे रोइत हो””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (D) मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।

६४५. ““मानू मेघ विरहमे रोइत हो”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) उत्प्रेक्षा
- (D) यमक

६४६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““बिना मेघक खेत भीजल””?

- (A) यमक
- (B) विभावना
- (C) अनुप्रास
- (D) श्लेष

६४७. ““बिना मेघक खेत भीजल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) कारण बिना कार्यक कथन अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६४८. ““बिना मेघक खेत भीजल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) विभावना
- (B) यमक
- (C) श्लेष
- (D) अनुप्रास

६४९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““बिना मेघक खेत भीजल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) कारण बिना कार्यक कथन अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६५०. ““बिना मेघक खेत भीजल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) यमक
- (B) श्लेष
- (C) विभावना
- (D) अनुप्रास

६५१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““दीप जलल, मुदा अँधार नहि हटकल””?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) विशेषोक्ति

६५२. ““दीप जलल, मुदा अँधार नहि हटकल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
- (B) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६५३. ““दीप जलल, मुदा अँधार नहि हटकल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) यमक
- (B) श्लेष
- (C) विशेषोक्ति
- (D) अनुप्रास

६५४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““दीप जलल, मुदा अँधार नहि हटकल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६५५. ““दीप जलल, मुदा अँधार नहि हटकल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) यमक
- (D) विशेषोक्ति

६५६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““नोरसँ नदी भरि गेल””?

- (A) यमक
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) अनुप्रास
- (D) श्लेष

६५७. ““नोरसँ नदी भरि गेल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६५८. ““नोरसँ नदी भरि गेल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) अनुप्रास
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) यमक
- (D) श्लेष

६५९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““नोरसँ नदी भरि गेल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६६०. ““नोरसँ नदी भरि गेल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) अतिशयोक्ति
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६६१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““दीपक जलि आनकें प्रकाश देलक””?

- (A) अनुप्रास
- (B) अप्रस्तुत-प्रशंसा
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६६२. ““दीपक जलि आनकें प्रकाश देलक”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) दीपकक माध्यमँ त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६६३. ““दीपक जलि आनकें प्रकाश देलक”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) यमक
- (B) अनुप्रास
- (C) अप्रस्तुत-प्रशंसा
- (D) श्लेष

६६४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““दीपक जलि आनकें प्रकाश देलक””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) दीपकक माध्यमँ त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६६५. ““दीपक जलि आनकें प्रकाश देलक”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अप्रस्तुत-प्रशंसा
- (B) अनुप्रास
- (C) श्लेष
- (D) यमक

६६६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““कमल सूखल, सूर्य बुझि गेल””?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) समासोक्ति

६६७. ““कमल सूखल, सूर्य बुझि गेल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।

६६८. ““कमल सूखल, सूर्य बुझि गेल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) यमक
- (B) श्लेष
- (C) अनुप्रास
- (D) समासोक्ति

६६९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ ““कमल सूखल, सूर्य बुझि गेल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
- (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६७०. ““कमल सूखल, सूर्य बुझि गेल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) समासोक्ति
- (B) यमक
- (C) श्लेष
- (D) अनुप्रास

६७१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““ई चन्द्र अछि कि प्रियक मुख””?

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) सन्देह
- (D) अनुप्रास

६७२. ““ई चन्द्र अछि कि प्रियक मुख”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (B) दू सम्भावनामे संशय अछि।
- (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६७३. ““ई चन्द्र अछि कि प्रियक मुख”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) अनुप्रास
- (D) सन्देह

६७४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिँ ““ई चन्द्र अछि कि प्रियक मुख””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) दू सम्भावनामे संशय अछि।
- (C) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६७५. ““ई चन्द्र अछि कि प्रियक मुख”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) सन्देह
- (D) अनुप्रास

६७६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““मुख देखि चकोर चन्द्र बुझलक””?

- (A) भ्रान्तिमान
- (B) श्लेष
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६७७. ““मुख देखि चकोर चन्द्र बुझलक”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६७८. ““मुख देखि चकोर चन्द्र बुझलक”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) भ्रान्तिमान
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६७९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिँ ““मुख देखि चकोर चन्द्र बुझलक””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६८०. ““मुख देखि चकोर चन्द्र बुझलक”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) भ्रान्तिमान
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) श्लेष

६८१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““बर्फमे आगि जरल””?

- (A) यमक
- (B) श्लेष
- (C) विषम
- (D) अनुप्रास

६८२. ““बर्फमे आगि जरल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६८३. ““बर्फमे आगि जरल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) विषम
- (D) यमक

६८४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिँ ““बर्फमे आगि जरल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।

६८५. ““बर्फमे आगि जरल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) विषम
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६८६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““बहुत नीक, दीप बुझा कऽ उजास बढेलहुँ””?

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) यमक
- (D) वक्रोक्ति

६८७. ““बहुत नीक, दीप बुझा कऽ उजास बढेलहुँ”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६८८. ““बहुत नीक, दीप बुझा कऽ उजास बढेलहुँ”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) यमक
- (B) अनुप्रास
- (C) श्लेष
- (D) वक्रोक्ति

६८९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““बहुत नीक, दीप बुझा कऽ उजास बढ़ेलहुँ””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६९०. ““बहुत नीक, दीप बुझा कऽ उजास बढ़ेलहुँ”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) वक्रोक्ति

६९१. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““नयन कमल जकाँ खिलल””?

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) उपमा
- (D) यमक

६९२. ““नयन कमल जकाँ खिलल”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
- (D) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६९३. ““नयन कमल जकाँ खिलल”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) अनुप्रास
- (C) यमक
- (D) उपमा

६९४. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे ““नयन कमल जकाँ खिलल””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।

६९५. ““नयन कमल जकाँ खिलल”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) श्लेष
- (B) उपमा
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६९६. एहि उदाहरणमे कोन अलंकार अछि — ““गुरु ज्ञानक दीप छथि””?

- (A) श्लेष
- (B) रूपक
- (C) यमक
- (D) अनुप्रास

६९७. ““गुरु ज्ञानक दीप छथि”” मे अलंकारक मुख्य आधार की अछि?

- (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (B) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।

६९८. ““गुरु ज्ञानक दीप छथि”” केँ चिन्हबाक सही नाम चुनू।

- (A) श्लेष
- (B) यमक
- (C) रूपक
- (D) अनुप्रास

६९९. काव्यशास्त्रीय दृष्टिसेँ ““गुरु ज्ञानक दीप छथि””क व्याख्या कोन अछि?

- (A) गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
- (B) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।
- (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
- (D) एके ‘कर’ ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

७००. ““गुरु ज्ञानक दीप छथि”” कोन प्रकारक चमत्कार देखबैत अछि?

- (A) अनुप्रास
- (B) श्लेष
- (C) रूपक
- (D) यमक

७०१. ‘अनुष्टुप्’क सही लक्षण की अछि?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७०२. जे स्थिति/धारणा “चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण” हो, ओकर नाम की?

- (A) शिखरिणी
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) मालिनी
- (D) अनुष्टुप्

७०३. ‘अनुष्टुप्’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७०४. काव्यशास्त्रमे ‘अनुष्टुप्’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७०५. 'अनुष्टुप्' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।

७०६. 'भुजंगप्रयात्'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७०७. जे स्थिति/धारणा "यगण-प्रधान तरंगित गति" हो, ओकर नाम की?

- (A) भुजंगप्रयात्
- (B) शिखरिणी
- (C) मालिनी
- (D) अनुष्टुप्

७०८. 'भुजंगप्रयात्' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७०९. काव्यशास्त्रमे 'भुजंगप्रयात्' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७१०. 'भुजंगप्रयात्' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७११. 'मालिनी'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७१२. जे स्थिति/धारणा "पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त" हो, ओकर नाम की?

- (A) भुजंगप्रयात्
- (B) मालिनी
- (C) अनुष्टुप्
- (D) शिखरिणी

७१३. 'मालिनी' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७१४. काव्यशास्त्रमे 'मालिनी' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७१५. 'मालिनी' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।

७१६. 'शिखरिणी'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७१७. जे स्थिति/धारणा "सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त" हो, ओकर नाम की?

- (A) मालिनी
- (B) अनुष्टुप्
- (C) शिखरिणी
- (D) भुजंगप्रयात्

७१८. 'शिखरिणी' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७१९. काव्यशास्त्रमे 'शिखरिणी' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) सत्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७२०. 'शिखरिणी' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) शिखरिणी आरोहशील आ कलात्मक लयक छन्द अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७२१. 'मन्दाक्रान्ता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) सत्रह वर्णक मंथर, कोमल गति वाला वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७२२. जे स्थिति/धारणा "सत्रह वर्णक मंथर, कोमल गति वाला वर्णवृत्त" हो, ओकर नाम की?

- (A) मालिनी
- (B) मन्दाक्रान्ता
- (C) अनुष्टुप्
- (D) भुजंगप्रयात्

७२३. 'मन्दाक्रान्ता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) मन्दाक्रान्ता विरह आ कोमल भावक लेल प्रसिद्ध अछि।

७२४. काव्यशास्त्रमे 'मन्दाक्रान्ता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) सत्रह वर्णक मंथर, कोमल गति वाला वर्णवृत्त
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७२५. 'मन्दाक्रान्ता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) मन्दाक्रान्ता विरह आ कोमल भावक लेल प्रसिद्ध अछि।

७२६. 'वर्णवृत्त'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमपर आधारित छन्द
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७२७. जे स्थिति/धारणा "वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमपर आधारित छन्द" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुष्टुप्
- (B) वर्णवृत्त
- (C) मालिनी
- (D) भुजंगप्रयात्

७२८. 'वर्णवृत्त' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) वर्णवृत्तमे मात्रा नहि, वर्ण-विन्यास मुख्य अछि।

७२९. काव्यशास्त्रमे 'वर्णवृत्त' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमपर आधारित छन्द
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७३०. 'वर्णवृत्त' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) वर्णवृत्तमे मात्रा नहि, वर्ण-विन्यास मुख्य अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७३१. 'गुरु वर्ण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) दीर्घ वा भारयुक्त वर्ण

७३२. जे स्थिति/धारणा "दीर्घ वा भारयुक्त वर्ण" हो, ओकर नाम की?

- (A) गुरु वर्ण
- (B) मालिनी
- (C) अनुष्टुप्
- (D) भुजंगप्रयात्

७३३. 'गुरु वर्ण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) गुरु वर्ण छन्दक भार आ गति निर्धारित करैत अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७३४. काव्यशास्त्रमे 'गुरु वर्ण' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) दीर्घ वा भारयुक्त वर्ण
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७३५. 'गुरु वर्ण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) गुरु वर्ण छन्दक भार आ गति निर्धारित करैत अछि।

७३६. 'लघु वर्ण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) ह्रस्व वा हलुक वर्ण
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७३७. जे स्थिति/धारणा “ह्रस्व वा हलुक वर्ण” हो, ओकर नाम की?

- (A) मालिनी
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) लघु वर्ण
- (D) अनुष्टुप्

७३८. ‘लघु वर्ण’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) लघु वर्ण छन्दक गति केँ तीव्र बना सकैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७३९. काव्यशास्त्रमे ‘लघु वर्ण’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) ह्रस्व वा हलुक वर्ण
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७४०. ‘लघु वर्ण’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) लघु वर्ण छन्दक गति केँ तीव्र बना सकैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७४१. ‘गण’क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) तीन वर्णक समूहसँ बनल छन्दीय इकाई

७४२. जे स्थिति/धारणा “तीन वर्णक समूहसँ बनल छन्दीय इकाई” हो, ओकर नाम की?

- (A) भुजंगप्रयात्
- (B) गण
- (C) अनुष्टुप्
- (D) मालिनी

७४३. ‘गण’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) गण वर्णवृत्तक पहचानमे सहायक अछि।

७४४. काव्यशास्त्रमे ‘गण’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) तीन वर्णक समूहसँ बनल छन्दीय इकाई
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७४५. 'गण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) गण वर्णवृत्तक पहचानमे सहायक अछि।

७४६. 'यगण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) लघु-गुरु-गुरु क्रमक गण
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७४७. जे स्थिति/धारणा "लघु-गुरु-गुरु क्रमक गण" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुष्टुप्
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) यगण
- (D) मालिनी

७४८. 'यगण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) भुजंगप्रयात् मे यगणक महत्त्व बताओल जाइत अछि।

७४९. काव्यशास्त्रमे 'यगण' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) लघु-गुरु-गुरु क्रमक गण
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७५०. 'यगण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् मे यगणक महत्त्व बताओल जाइत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७५१. 'छन्दोविचार'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) लय, वर्ण, मात्रा, यति आ गति केर अध्ययन

७५२. जे स्थिति/धारणा "लय, वर्ण, मात्रा, यति आ गति केर अध्ययन" हो, ओकर नाम की?

- (A) मालिनी
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) अनुष्टुप्
- (D) छन्दोविचार

७५३. 'छन्दोविचार' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।

७५४. काव्यशास्त्रमे 'छन्दोविचार' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लय, वर्ण, मात्रा, यति आ गति केर अध्ययन
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७५५. 'छन्दोविचार' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।

७५६. 'यति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) छन्दमे ठहरावक नियत स्थान
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७५७. जे स्थिति/धारणा "छन्दमे ठहरावक नियत स्थान" हो, ओकर नाम की?

- (A) भुजंगप्रयात्
- (B) मालिनी
- (C) अनुष्टुप्
- (D) यति

७५८. 'यति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) यति पाठकेँ सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७५९. काव्यशास्त्रमे 'यति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) छन्दमे ठहरावक नियत स्थान
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७६०. 'यति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) यति पाठकेँ सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७६१. 'गति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) छन्दक प्रवाह आ चाल
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७६२. जे स्थिति/धारणा "छन्दक प्रवाह आ चाल" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुष्टुप्
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) गति
- (D) मालिनी

७६३. 'गति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
- (B) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७६४. काव्यशास्त्रमे 'गति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) छन्दक प्रवाह आ चाल
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७६५. 'गति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७६६. 'पाद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) वर्णवृत्तक चरण वा भाग
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७६७. जे स्थिति/धारणा "वर्णवृत्तक चरण वा भाग" हो, ओकर नाम की?

- (A) पाद
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) अनुष्टुप्
- (D) मालिनी

७६८. 'पाद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७६९. काव्यशास्त्रमे 'पाद' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) वर्णवृत्तक चरण वा भाग
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७७०. 'पाद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।

७७१. 'वर्ण-गणना'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) छन्दमे वर्णक संख्या गिनब

७७२. जे स्थिति/धारणा "छन्दमे वर्णक संख्या गिनब" हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुष्टुप्
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) वर्ण-गणना
- (D) मालिनी

७७३. 'वर्ण-गणना' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७७४. काव्यशास्त्रमे 'वर्ण-गणना' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) छन्दमे वर्णक संख्या गिनब
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७७५. 'वर्ण-गणना' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।

७७६. 'लय'क सही लक्षण की अछि?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) ध्वनिक नियमित प्रवाह
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७७७. जे स्थिति/धारणा “ध्वनिक नियमित प्रवाह” हो, ओकर नाम की?

- (A) लय
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) मालिनी
- (D) अनुष्टुप्

७७८. ‘लय’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७७९. काव्यशास्त्रमे ‘लय’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) ध्वनिक नियमित प्रवाह

७८०. ‘लय’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।

७८१. ‘ताल-संबंध’क सही लक्षण की अछि?

- (A) पाठमे नियमित ध्वनि-संयोजन
- (B) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७८२. जे स्थिति/धारणा “पाठमे नियमित ध्वनि-संयोजन” हो, ओकर नाम की?

- (A) अनुष्टुप्
- (B) मालिनी
- (C) ताल-संबंध
- (D) भुजंगप्रयात्

७८३. ‘ताल-संबंध’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) ताल छन्दकेँ श्रवणीय बनबैत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७८४. काव्यशास्त्रमे ‘ताल-संबंध’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पाठमे नियमित ध्वनि-संयोजन
- (B) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त

७८५. 'ताल-संबंध' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७८६. 'विरह-गति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) धीम, मंथर आ कोमल छन्द-प्रवाह
- (B) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७८७. जे स्थिति/धारणा "धीम, मंथर आ कोमल छन्द-प्रवाह" हो, ओकर नाम की?

- (A) भुजंगप्रयात्
- (B) विरह-गति
- (C) अनुष्टुप्
- (D) मालिनी

७८८. 'विरह-गति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
- (D) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।

७८९. काव्यशास्त्रमे 'विरह-गति' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) धीम, मंथर आ कोमल छन्द-प्रवाह
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

७९०. 'विरह-गति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
- (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (C) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

७९१. 'उदात्त गति'क सही लक्षण की अछि?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) ऊँच, गंभीर आ गरिमामय प्रवाह

७९२. जे स्थिति/धारणा "ऊँच, गंभीर आ गरिमामय प्रवाह" हो, ओकर नाम की?

- (A) उदात्त गति
- (B) भुजंगप्रयात्
- (C) मालिनी
- (D) अनुष्टुप्

७९३. 'उदात्त गति' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७९४. काव्यशास्त्रमे 'उदात्त गति' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) ऊँच, गंभीर आ गरिमामय प्रवाह
- (C) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (D) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण

७९५. 'उदात्त गति' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (D) शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।

७९६. 'वृत्त-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) यगण-प्रधान तरंगित गति
- (B) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (C) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (D) गण, वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमसँ छन्द चिन्हब

७९७. जे स्थिति/धारणा "गण, वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमसँ छन्द चिन्हब" हो, ओकर नाम की?

- (A) मालिनी
- (B) अनुष्टुप्
- (C) वृत्त-पहिचान
- (D) भुजंगप्रयात्

७९८. 'वृत्त-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
- (B) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (C) वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
- (D) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।

७९९. काव्यशास्त्रमे 'वृत्त-पहिचान' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त
- (B) गण, वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमसँ छन्द चिन्हब
- (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण
- (D) यगण-प्रधान तरंगित गति

८००. 'वृत्त-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
- (B) वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
- (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
- (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।

८०१. 'दोहा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८०२. जे स्थिति/धारणा "तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम" हो, ओकर नाम की?

- (A) सोरठा
- (B) दोहा
- (C) कुण्डलिया
- (D) चौपाइ

८०३. 'दोहा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८०४. काव्यशास्त्रमे 'दोहा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८०५. 'दोहा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (B) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

८०६. 'सोरठा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८०७. जे स्थिति/धारणा "एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम" हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) चौपाइ
- (C) कुण्डलिया
- (D) सोरठा

८०८. 'सोरठा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८०९. काव्यशास्त्रमे 'सोरठा' के केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द

८१०. 'सोरठा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८११. 'चौपाइ'क सही लक्षण की अछि?

- (A) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८१२. जे स्थिति/धारणा "चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा" हो, ओकर नाम की?

- (A) कुण्डलिया
- (B) चौपाइ
- (C) सोरठा
- (D) दोहा

८१३. 'चौपाइ' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८१४. काव्यशास्त्रमे 'चौपाइ' के केना चिन्हल जाए?

- (A) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८१५. 'चौपाइ' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८१६. 'कुण्डलिया'क सही लक्षण की अछि?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द

८१७. जे स्थिति/धारणा “दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द” हो, ओकर नाम की?

- (A) चौपाइ
- (B) दोहा
- (C) कुण्डलिया
- (D) सोरठा

८१८. ‘कुण्डलिया’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८१९. काव्यशास्त्रमे ‘कुण्डलिया’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८२०. ‘कुण्डलिया’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।

८२१. ‘रोला’क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) चौबीस मात्रा-प्रधान मात्रिक छन्द
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८२२. जे स्थिति/धारणा “चौबीस मात्रा-प्रधान मात्रिक छन्द” हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) चौपाइ
- (C) सोरठा
- (D) रोला

८२३. ‘रोला’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।

८२४. काव्यशास्त्रमे ‘रोला’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) चौबीस मात्रा-प्रधान मात्रिक छन्द
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८२५. 'रोला' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८२६. 'हरिगीतिका'क सही लक्षण की अछि?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) प्रत्येक चरणमे अट्ठाइस मात्रा-प्रधान छन्द
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८२७. जे स्थिति/धारणा "प्रत्येक चरणमे अट्ठाइस मात्रा-प्रधान छन्द" हो, ओकर नाम की?

- (A) सोरठा
- (B) हरिगीतिका
- (C) दोहा
- (D) चौपाइ

८२८. 'हरिगीतिका' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि।

८२९. काव्यशास्त्रमे 'हरिगीतिका' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) प्रत्येक चरणमे अट्ठाइस मात्रा-प्रधान छन्द

८३०. 'हरिगीतिका' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि।

८३१. 'मात्रिक छन्द'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) मात्रा-गणना पर आधारित छन्द
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८३२. जे स्थिति/धारणा "मात्रा-गणना पर आधारित छन्द" हो, ओकर नाम की?

- (A) मात्रिक छन्द
- (B) चौपाइ
- (C) दोहा
- (D) सोरठा

८३३. 'मात्रिक छन्द' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८३४. काव्यशास्त्रमे 'मात्रिक छन्द' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) मात्रा-गणना पर आधारित छन्द
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८३५. 'मात्रिक छन्द' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८३६. 'मात्रा'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) ध्वनिक काल-मूल्य
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८३७. जे स्थिति/धारणा "ध्वनिक काल-मूल्य" हो, ओकर नाम की?

- (A) सोरठा
- (B) मात्रा
- (C) दोहा
- (D) चौपाइ

८३८. 'मात्रा' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) मात्रा गणना मात्रिक छन्दक आधार अछि।

८३९. काव्यशास्त्रमे 'मात्रा' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) ध्वनिक काल-मूल्य
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८४०. 'मात्रा' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) मात्रा गणना मात्रिक छन्दक आधार अछि।

८४१. 'सम चरण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) छन्दक दोसर आ चारिम चरण
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८४२. जे स्थिति/धारणा "छन्दक दोसर आ चारिम चरण" हो, ओकर नाम की?

- (A) चौपाइ
- (B) सम चरण
- (C) सोरठा
- (D) दोहा

८४३. 'सम चरण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्वपूर्ण अछि।

८४४. काव्यशास्त्रमे 'सम चरण' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) छन्दक दोसर आ चारिम चरण
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८४५. 'सम चरण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्वपूर्ण अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८४६. 'विषम चरण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) छन्दक पहिल आ तेसर चरण

८४७. जे स्थिति/धारणा "छन्दक पहिल आ तेसर चरण" हो, ओकर नाम की?

- (A) चौपाइ
- (B) सोरठा
- (C) दोहा
- (D) विषम चरण

८४८. 'विषम चरण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।

८४९. काव्यशास्त्रमे 'विषम चरण' के केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) छन्दक पहिल आ तेसर चरण
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८५०. 'विषम चरण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८५१. 'दोहा-सोरठा भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) मात्रा-क्रमक उलटफेर

८५२. जे स्थिति/धारणा "मात्रा-क्रमक उलटफेर" हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) चौपाइ
- (C) सोरठा
- (D) दोहा-सोरठा भेद

८५३. 'दोहा-सोरठा भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८५४. काव्यशास्त्रमे 'दोहा-सोरठा भेद' के केना चिन्हल जाए?

- (A) मात्रा-क्रमक उलटफेर
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८५५. 'दोहा-सोरठा भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।

८५६. 'चरण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) छन्दक एक पंक्ति-खंड

८५७. जे स्थिति/धारणा “छन्दक एक पंक्ति-खंड” हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) सोरठा
- (C) चरण
- (D) चौपाइ

८५८. ‘चरण’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि।
- (B) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

८५९. काव्यशास्त्रमे ‘चरण’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) छन्दक एक पंक्ति-खंड
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८६०. ‘चरण’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८६१. ‘तुक’क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) पंक्ति-अन्तक ध्वनि-साम्य

८६२. जे स्थिति/धारणा “पंक्ति-अन्तक ध्वनि-साम्य” हो, ओकर नाम की?

- (A) सोरठा
- (B) तुक
- (C) चौपाइ
- (D) दोहा

८६३. ‘तुक’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।

८६४. काव्यशास्त्रमे ‘तुक’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) पंक्ति-अन्तक ध्वनि-साम्य

८६५. 'तुक' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।

८६६. 'लयात्मकता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) छन्दक गीतिमय प्रवाह

८६७. जे स्थिति/धारणा "छन्दक गीतिमय प्रवाह" हो, ओकर नाम की?

- (A) लयात्मकता
- (B) चौपाइ
- (C) दोहा
- (D) सोरठा

८६८. 'लयात्मकता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।

८६९. काव्यशास्त्रमे 'लयात्मकता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) छन्दक गीतिमय प्रवाह
- (C) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८७०. 'लयात्मकता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

८७१. 'गेयता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) गाओल जाएबाक योग्यता
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८७२. जे स्थिति/धारणा "गाओल जाएबाक योग्यता" हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) सोरठा
- (C) चौपाइ
- (D) गेयता

८७३. 'गेयता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।

८७४. काव्यशास्त्रमे 'गेयता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) गाओल जाएबाक योग्यता
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८७५. 'गेयता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

८७६. 'सूक्तिपरकता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) छोट कथनमे नीति वा सार

८७७. जे स्थिति/धारणा "छोट कथनमे नीति वा सार" हो, ओकर नाम की?

- (A) सोरठा
- (B) सूक्तिपरकता
- (C) चौपाइ
- (D) दोहा

८७८. 'सूक्तिपरकता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८७९. काव्यशास्त्रमे 'सूक्तिपरकता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) छोट कथनमे नीति वा सार

८८०. 'सूक्तिपरकता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८८१. 'कथात्मकता'क सही लक्षण की अछि?

- (A) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) कथा कहबाक प्रवाह
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८८२. जे स्थिति/धारणा "कथा कहबाक प्रवाह" हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) कथात्मकता
- (C) चौपाइ
- (D) सोरठा

८८३. 'कथात्मकता' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।

८८४. काव्यशास्त्रमे 'कथात्मकता' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) कथा कहबाक प्रवाह
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८८५. 'कथात्मकता' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

८८६. 'वृत्ताकार प्रभाव'क सही लक्षण की अछि?

- (A) आरम्भक पदक अन्तमे पुनरागमन
- (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८८७. जे स्थिति/धारणा "आरम्भक पदक अन्तमे पुनरागमन" हो, ओकर नाम की?

- (A) दोहा
- (B) सोरठा
- (C) वृत्ताकार प्रभाव
- (D) चौपाइ

८८८. 'वृत्ताकार प्रभाव' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
- (D) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।

८८९. काव्यशास्त्रमे 'वृत्ताकार प्रभाव' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) आरम्भक पदक अन्तमे पुनरागमन
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम

८९०. 'वृत्ताकार प्रभाव' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) कुण्डलिया नामँ एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८९१. 'यति-नियम'क सही लक्षण की अछि?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) मात्रा-क्रममे नियत ठहराव
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८९२. जे स्थिति/धारणा "मात्रा-क्रममे नियत ठहराव" हो, ओकर नाम की?

- (A) यति-नियम
- (B) चौपाइ
- (C) दोहा
- (D) सोरठा

८९३. 'यति-नियम' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (B) यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।
- (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।

८९४. काव्यशास्त्रमे 'यति-नियम' कै केना चिन्हल जाए?

- (A) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (B) मात्रा-क्रममे नियत ठहराव
- (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा

८९५. 'यति-नियम' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (D) यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।

८९६. 'लोकप्रचलित छन्द'क सही लक्षण की अछि?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (C) जन-गीत, कथा आ उपदेशमे चलनवला छन्द
- (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम

८९७. जे स्थिति/धारणा “जन-गीत, कथा आ उपदेशमे चलनवला छन्द” हो, ओकर नाम की?

- (A) चौपाइ
- (B) सोरठा
- (C) लोकप्रचलित छन्द
- (D) दोहा

८९८. ‘लोकप्रचलित छन्द’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।

८९९. काव्यशास्त्रमे ‘लोकप्रचलित छन्द’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम
- (B) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम
- (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा
- (D) जन-गीत, कथा आ उपदेशमे चलनवला छन्द

९००. ‘लोकप्रचलित छन्द’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
- (B) दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
- (D) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।

९०१. ‘काव्य-परीक्षा दृष्टि’क सही लक्षण की अछि?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९०२. जे स्थिति/धारणा “लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान” हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) भेद-पहचान
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९०३. ‘काव्य-परीक्षा दृष्टि’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९०४. काव्यशास्त्रमे ‘काव्य-परीक्षा दृष्टि’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

९०५. 'काव्य-परीक्षा दृष्टि' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९०६. 'लक्षण आ उदाहरण'क सही लक्षण की अछि?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (C) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९०७. जे स्थिति/धारणा "सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) लक्षण आ उदाहरण
- (D) भेद-पहचान

९०८. 'लक्षण आ उदाहरण' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९०९. काव्यशास्त्रमे 'लक्षण आ उदाहरण' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब

९१०. 'लक्षण आ उदाहरण' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।

९११. 'प्रयोजन आ कारण भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब

९१२. जे स्थिति/धारणा "प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षण आ उदाहरण
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) प्रयोजन आ कारण भेद
- (D) भेद-पहचान

९१३. 'प्रयोजन आ कारण भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९१४. काव्यशास्त्रमे 'प्रयोजन आ कारण भेद' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९१५. 'प्रयोजन आ कारण भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९१६. 'भेद-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९१७. जे स्थिति/धारणा "रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) लक्षण आ उदाहरण
- (D) भेद-पहिचान

९१८. 'भेद-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९१९. काव्यशास्त्रमे 'भेद-पहिचान' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब

९२०. 'भेद-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९२१. 'अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सीधा अर्थ, सम्बन्धित अर्थ आ सूचित अर्थक अन्तर

९२२. जे स्थिति/धारणा "सीधा अर्थ, सम्बन्धित अर्थ आ सूचित अर्थक अन्तर" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद

९२३. 'अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।

९२४. काव्यशास्त्रमे 'अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) सीधा अर्थ, सम्बन्धित अर्थ आ सूचित अर्थक अन्तर

९२५. 'अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९२६. 'रस-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) स्थायीभाव आ प्रसंगक आधार पर रस चिन्हब

९२७. जे स्थिति/धारणा "स्थायीभाव आ प्रसंगक आधार पर रस चिन्हब" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (B) रस-पहिचान
- (C) लक्षण आ उदाहरण
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९२८. 'रस-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।

९२९. काव्यशास्त्रमे 'रस-पहचान' कैं केना चिन्हल जाए?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) स्थायीभाव आ प्रसंगक आधार पर रस चिन्हब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब

९३०. 'रस-पहचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (C) उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९३१. 'विभाव-अनुभाव सम्बन्ध'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) कारण आ बाहरी अभिव्यक्ति बीच भेद
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९३२. जे स्थिति/धारणा "कारण आ बाहरी अभिव्यक्ति बीच भेद" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षण आ उदाहरण
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) विभाव-अनुभाव सम्बन्ध
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९३३. 'विभाव-अनुभाव सम्बन्ध' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९३४. काव्यशास्त्रमे 'विभाव-अनुभाव सम्बन्ध' कैं केना चिन्हल जाए?

- (A) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) कारण आ बाहरी अभिव्यक्ति बीच भेद

९३५. 'विभाव-अनुभाव सम्बन्ध' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।

९३६. 'गुण-रीति सम्बन्ध'क सही लक्षण की अछि?

- (A) गुण प्रभाव अछि, रीति शैलीक मार्ग
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सिद्धान्तकें उदाहरणसँ जोड़ब

९३७. जे स्थिति/धारणा “गुण प्रभाव अछि, रीति शैलीक मार्ग” हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षण आ उदाहरण
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) गुण-रीति सम्बन्ध
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९३८. ‘गुण-रीति सम्बन्ध’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।

९३९. काव्यशास्त्रमे ‘गुण-रीति सम्बन्ध’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) गुण प्रभाव अछि, रीति शैलीक मार्ग
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

९४०. ‘गुण-रीति सम्बन्ध’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९४१. ‘शब्दालंकार-पहिचान’क सही लक्षण की अछि?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) ध्वनि वा शब्द-चमत्कारक आधार
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९४२. जे स्थिति/धारणा “ध्वनि वा शब्द-चमत्कारक आधार” हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) शब्दालंकार-पहिचान
- (C) लक्षण आ उदाहरण
- (D) काव्य-परीक्षा दृष्टि

९४३. ‘शब्दालंकार-पहिचान’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९४४. काव्यशास्त्रमे ‘शब्दालंकार-पहिचान’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) ध्वनि वा शब्द-चमत्कारक आधार
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९४५. 'शब्दालंकार-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९४६. 'अर्थालंकार-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) अर्थ-विन्यासक चमत्कार
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९४७. जे स्थिति/धारणा "अर्थ-विन्यासक चमत्कार" हो, ओकर नाम की?

- (A) अर्थालंकार-पहिचान
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९४८. 'अर्थालंकार-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९४९. काव्यशास्त्रमे 'अर्थालंकार-पहिचान' कें केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) अर्थ-विन्यासक चमत्कार
- (C) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९५०. 'अर्थालंकार-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।

९५१. 'उपमा-रूपक भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) उपमामे तुलना, रूपकमे अभेद
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९५२. जे स्थिति/धारणा "उपमामे तुलना, रूपकमे अभेद" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षण आ उदाहरण
- (B) प्रयोजन आ कारण भेद
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) उपमा-रूपक भेद

९५३. 'उपमा-रूपक भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) 'सन' उपमा, सीधा समानता रूपक।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९५४. काव्यशास्त्रमे 'उपमा-रूपक भेद' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) उपमामे तुलना, रूपकमे अभेद
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९५५. 'उपमा-रूपक भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) 'सन' उपमा, सीधा समानता रूपक।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९५६. 'विभावना-विशेषोक्ति भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) कारण बिना कार्य, वा कारण रहितो कार्य-अभाव
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९५७. जे स्थिति/धारणा "कारण बिना कार्य, वा कारण रहितो कार्य-अभाव" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) विभावना-विशेषोक्ति भेद

९५८. 'विभावना-विशेषोक्ति भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९५९. काव्यशास्त्रमे 'विभावना-विशेषोक्ति भेद' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) कारण बिना कार्य, वा कारण रहितो कार्य-अभाव
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९६०. 'विभावना-विशेषोक्ति भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (C) दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९६१. 'सन्देह-भ्रान्तिमान भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) सन्देहमे संशय, भ्रान्तिमानमे भ्रम
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

९६२. जे स्थिति/धारणा "सन्देहमे संशय, भ्रान्तिमानमे भ्रम" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) सन्देह-भ्रान्तिमान भेद
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९६३. 'सन्देह-भ्रान्तिमान भेद' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) 'की ई चन्द्र?' सन्देह, 'चन्द्र बुझलक' भ्रान्तिमान।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९६४. काव्यशास्त्रमे 'सन्देह-भ्रान्तिमान भेद' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) सन्देहमे संशय, भ्रान्तिमानमे भ्रम
- (C) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९६५. 'सन्देह-भ्रान्तिमान भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) 'की ई चन्द्र?' सन्देह, 'चन्द्र बुझलक' भ्रान्तिमान।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९६६. 'अतिशयोक्ति-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल बात

९६७. जे स्थिति/धारणा "बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल बात" हो, ओकर नाम की?

- (A) लक्षण आ उदाहरण
- (B) प्रयोजन आ कारण भेद
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) अतिशयोक्ति-पहिचान

९६८. 'अतिशयोक्ति-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता लेल सीमा तोड़ैत अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९६९. काव्यशास्त्रमे 'अतिशयोक्ति-पहिचान' के केना चिन्हल जाए?

- (A) बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल बात
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

९७०. 'अतिशयोक्ति-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता लेल सीमा तोड़ैत अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९७१. 'छन्द-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) मात्रा, वर्ण, यति आ गति देखब
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

९७२. जे स्थिति/धारणा "मात्रा, वर्ण, यति आ गति देखब" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) छन्द-पहिचान
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९७३. 'छन्द-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) छन्दक सही नाम गणना आ लय सँ ठहरैत अछि।

९७४. काव्यशास्त्रमे 'छन्द-पहिचान' के केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) मात्रा, वर्ण, यति आ गति देखब

९७५. 'छन्द-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) छन्दक सही नाम गणना आ लय सँ ठहरैत अछि।
- (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९७६. 'वर्णवृत्त-मात्रिक भेद'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) वर्णवृत्त वर्णपर, मात्रिक मात्रा पर आधारित

९७७. जे स्थिति/धारणा “वर्णवृत्त वर्णपर, मात्रिक मात्रा पर आधारित” हो, ओकर नाम की?

- (A) वर्णवृत्त-मात्रिक भेद
- (B) प्रयोजन आ कारण भेद
- (C) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (D) लक्षण आ उदाहरण

९७८. ‘वर्णवृत्त-मात्रिक भेद’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) अनुष्टुप् वर्णवृत्त, दोहा मात्रिक छन्द।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९७९. काव्यशास्त्रमे ‘वर्णवृत्त-मात्रिक भेद’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) वर्णवृत्त वर्णपर, मात्रिक मात्रा पर आधारित
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९८०. ‘वर्णवृत्त-मात्रिक भेद’ विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) अनुष्टुप् वर्णवृत्त, दोहा मात्रिक छन्द।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।

९८१. ‘दोहा-सोरठा भेद’क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) मात्रा क्रम उलट होइत अछि

९८२. जे स्थिति/धारणा “मात्रा क्रम उलट होइत अछि” हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) दोहा-सोरठा भेद
- (C) लक्षण आ उदाहरण
- (D) काव्य-परीक्षा दृष्टि

९८३. ‘दोहा-सोरठा भेद’ सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) दोहा तेरह-एगारह, सोरठा एगारह-तेरह।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९८४. काव्यशास्त्रमे ‘दोहा-सोरठा भेद’ केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (B) मात्रा क्रम उलट होइत अछि
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९८५. 'दोहा-सोरठा भेद' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) दोहा तेरह-एगारह, सोरठा एगारह-तेरह।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९८६. 'चौपाइ-पहिचान'क सही लक्षण की अछि?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) सोलह मात्रा-प्रधान चारि चरण
- (C) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९८७. जे स्थिति/धारणा "सोलह मात्रा-प्रधान चारि चरण" हो, ओकर नाम की?

- (A) चौपाइ-पहिचान
- (B) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (C) प्रयोजन आ कारण भेद
- (D) लक्षण आ उदाहरण

९८८. 'चौपाइ-पहिचान' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनमे सहज अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९८९. काव्यशास्त्रमे 'चौपाइ-पहिचान' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (B) सोलह मात्रा-प्रधान चारि चरण
- (C) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (D) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब

९९०. 'चौपाइ-पहिचान' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) चौपाइ कथा-वाचनमे सहज अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९९१. 'काव्यशास्त्रक उपयोग'क सही लक्षण की अछि?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) सिद्धान्तक उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) काव्यकें बुझब, परखब आ आस्वाद करब

९९२. जे स्थिति/धारणा "काव्यकें बुझब, परखब आ आस्वाद करब" हो, ओकर नाम की?

- (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) काव्यशास्त्रक उपयोग
- (D) प्रयोजन आ कारण भेद

९९३. 'काव्यशास्त्रक उपयोग' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (B) काव्यशास्त्र रटबाक विषय नहि, आस्वादक साधन अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

९९४. काव्यशास्त्रमे 'काव्यशास्त्रक उपयोग' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) काव्यकेँ बुझब, परखब आ आस्वाद करब
- (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब

९९५. 'काव्यशास्त्रक उपयोग' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) काव्यशास्त्र रटबाक विषय नहि, आस्वादक साधन अछि।

९९६. 'समेकित सौन्दर्य-बोध'क सही लक्षण की अछि?

- (A) रस, गुण, अलंकार, रीति, छन्द आ अर्थक मेल
- (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन
- (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान

९९७. जे स्थिति/धारणा "रस, गुण, अलंकार, रीति, छन्द आ अर्थक मेल" हो, ओकर नाम की?

- (A) प्रयोजन आ कारण भेद
- (B) लक्षण आ उदाहरण
- (C) समेकित सौन्दर्य-बोध
- (D) काव्य-परीक्षा दृष्टि

९९८. 'समेकित सौन्दर्य-बोध' सम्बन्धी सही कथन चुनू।

- (A) श्रेष्ठ काव्य अनेक तत्त्वक संतुलित समन्वयसँ बनैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
- (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।

९९९. काव्यशास्त्रमे 'समेकित सौन्दर्य-बोध' केँ केना चिन्हल जाए?

- (A) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान
- (B) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब
- (C) रस, गुण, अलंकार, रीति, छन्द आ अर्थक मेल
- (D) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन

१०००. 'समेकित सौन्दर्य-बोध' विषयक परीक्षोपयोगी मुख्य संकेत कोन अछि?

- (A) श्रेष्ठ काव्य अनेक तत्त्वक संतुलित समन्वयसँ बनैत अछि।
- (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
- (C) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
- (D) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।

१. (B) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग — काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
२. (B) काव्यक लक्षण — काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
३. (C) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि। — काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
४. (D) शब्द आ अर्थक रमणीय, रसदायी आ सहृदय-आनन्ददायी संयोग — काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
५. (D) काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि। — काव्य मात्र सूचना नहि; ओ सौन्दर्य, भाव आ अर्थक कलात्मक रूप अछि।
६. (A) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल — शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
७. (B) शब्दार्थ-सौन्दर्य — शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
८. (B) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि। — शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
९. (D) शब्द आ अर्थ दुनूक सुन्दर मेल — शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
१०. (D) शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि। — शब्द सुन्दर हो मुदा अर्थ निर्जीव हो त' काव्यक प्रभाव घटि जाइत अछि।
११. (D) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि — रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
१२. (D) रसात्मक वाक्य — रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
१३. (D) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि। — रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
१४. (C) जे वाक्य सहृदयमे रसक आस्वाद जगबैत अछि — रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
१५. (B) रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि। — रस काव्यक प्राण मानल जाइत अछि।
१६. (D) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश — प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
१७. (D) काव्यक प्रयोजन — प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
१८. (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि। — प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
१९. (C) यश, अर्थ, व्यवहारज्ञान, आनन्द, लोकमंगल आ मधुर उपदेश — प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
२०. (A) प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि। — प्रयोजनसँ बुझाईत अछि जे काव्य किएक रचल आ पढ़ल जाइत अछि।
२१. (D) श्रेष्ठ काव्य द्वारा कविक कीर्ति — काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
२२. (D) यश — काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
२३. (B) काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि। — काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
२४. (C) श्रेष्ठ काव्य द्वारा कविक कीर्ति — काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
२५. (C) काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि। — काव्य कविक नामकें कालातीत बना सकैत अछि।
२६. (D) कविक जीविका वा पुरस्कार-संबंधी लाभ — अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
२७. (C) अर्थ — अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
२८. (B) अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि। — अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
२९. (B) कविक जीविका वा पुरस्कार-संबंधी लाभ — अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
३०. (C) अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि। — अर्थ काव्यक एक प्रयोजन अछि, मुदा एकमात्र लक्ष्य नहि।
३१. (B) जीवन, समाज आ नीति सम्बन्धी व्यावहारिक बोध — काव्य अनुभवक माध्यमँ जीवनक शिक्षा देइत अछि।

३२. (C) व्यवहारज्ञान — काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि।
३३. (B) काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि। — काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि।
३४. (A) जीवन, समाज आ नीति सम्बन्धी व्यावहारिक बोध — काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि।
३५. (D) काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि। — काव्य अनुभवक माध्यममें जीवनक शिक्षा देइत अछि।
३६. (A) प्रियाक वचन जकाँ मधुर ढंगसँ उपदेश — काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।
३७. (A) कान्तासम्मितोपदेश — काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।
३८. (D) काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि। — काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।
३९. (C) प्रियाक वचन जकाँ मधुर ढंगसँ उपदेश — काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।
४०. (D) काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि। — काव्य कठोर सीखकें मधुर, ग्रहणीय रूप दैत अछि।
४१. (B) अमंगल, अज्ञान आ अनैतिक प्रवृत्तिक हास — श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
४२. (B) शिवेतर क्षय — श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
४३. (A) श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि। — श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
४४. (C) अमंगल, अज्ञान आ अनैतिक प्रवृत्तिक हास — श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
४५. (C) श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि। — श्रेष्ठ काव्य मनुष्यकें परिष्कृत करैत अछि।
४६. (B) रसास्वादसँ उत्पन्न आन्तरिक सुख — काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
४७. (B) आनन्द — काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
४८. (A) काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि। — काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
४९. (D) रसास्वादसँ उत्पन्न आन्तरिक सुख — काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
५०. (C) काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि। — काव्यक आनन्द साधारण मनोरंजनसँ गहिर होइत अछि।
५१. (D) समाजक हित आ संवेदनाक विस्तार — लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
५२. (A) लोकमंगल — लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
५३. (C) लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि। — लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
५४. (B) समाजक हित आ संवेदनाक विस्तार — लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
५५. (B) लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि। — लोकमंगल काव्यकें निजी भावसँ ऊपर उठबैत अछि।
५६. (B) कविक सहज सृजन-शक्ति — प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
५७. (C) प्रतिभा — प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
५८. (D) प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि। — प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
५९. (B) कविक सहज सृजन-शक्ति — प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
६०. (B) प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि। — प्रतिभा काव्य-सृजनक मूल कारण मानल जाइत अछि।
६१. (B) अध्ययन, शास्त्रज्ञान आ परम्परा-बोध — व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।
६२. (D) व्युत्पत्ति — व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।
६३. (C) व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि। — व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।
६४. (C) अध्ययन, शास्त्रज्ञान आ परम्परा-बोध — व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।
६५. (D) व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि। — व्युत्पत्ति कविक प्रतिभाकें दिशा दैत अछि।
६६. (B) निरन्तर रचना, संशोधन आ साधना — अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
६७. (A) अभ्यास — अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।

६८. (B) अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि। — अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
६९. (C) निरन्तर रचना, संशोधन आ साधना — अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
७०. (B) अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि। — अभ्यास प्रतिभाकें निखारैत अछि।
७१. (B) जीवन आ समाजक प्रत्यक्ष अनुभव — लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
७२. (A) लोकानुभव — लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
७३. (A) लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। — लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
७४. (A) जीवन आ समाजक प्रत्यक्ष अनुभव — लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
७५. (B) लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि। — लोकानुभव काव्यकें धरती आ व्यवहारसँ जोड़ैत अछि।
७६. (B) अनुभवकें नव कलात्मक रूप देबाक शक्ति — कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
७७. (C) कल्पना — कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
७८. (B) कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि। — कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
७९. (C) अनुभवकें नव कलात्मक रूप देबाक शक्ति — कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
८०. (B) कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि। — कल्पना साधारण दृश्यकें असाधारण बना दैत अछि।
८१. (A) दुख-सुखक सूक्ष्म मानवीय अनुभव ग्रहण करबाक क्षमता — संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
८२. (D) संवेदना — संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
८३. (C) संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि। — संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
८४. (A) दुख-सुखक सूक्ष्म मानवीय अनुभव ग्रहण करबाक क्षमता — संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
८५. (A) संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि। — संवेदना बिना काव्यक भाव-संसार रूख भऽ जाइत अछि।
८६. (D) विषय, पात्र, काल, भाषा आ भावक उचित मेल — औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
८७. (C) औचित्य — औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
८८. (B) औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि। — औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
८९. (C) विषय, पात्र, काल, भाषा आ भावक उचित मेल — औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
९०. (C) औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि। — औचित्य टूटलासँ रसक बाधा होइत अछि।
९१. (B) रस ग्रहण करबाक संस्कारयुक्त पाठक वा श्रोता — सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।
९२. (A) सहृदय — सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।
९३. (D) सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि। — सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।
९४. (C) रस ग्रहण करबाक संस्कारयुक्त पाठक वा श्रोता — सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।
९५. (D) सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि। — सहृदय पाठक काव्यक सूक्ष्म अर्थ अनुभव करैत अछि।
९६. (C) कहल बातक पाछाँ सूचित गहिर अर्थ — ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।
९७. (C) ध्वनि-सूत्र — ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।
९८. (D) ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि। — ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।
९९. (C) कहल बातक पाछाँ सूचित गहिर अर्थ — ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।
१००. (D) ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि। — ध्वनि काव्यक बहुस्तरीय अर्थक आधार अछि।
१०१. (B) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य — पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
१०२. (B) पद्य — पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
१०३. (D) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि। — पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।

१०४. (D) लय, वर्ण वा मात्राक अनुशासनमे रचल काव्य — पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
१०५. (C) पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि। — पद्यक पहचान छन्द, ताल आ श्रवणीयतासँ होइत अछि।
१०६. (B) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना — गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
१०७. (C) गद्य — गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
१०८. (D) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि। — गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
१०९. (C) छन्दक कठोर बन्धन बिना कलात्मक भाषा-रचना — गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
११०. (C) गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि। — गद्य सेहो काव्यात्मक भऽ सकैत अछि।
१११. (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप — चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
११२. (A) चम्पू — चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
११३. (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि। — चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
११४. (C) गद्य आ पद्य दुनूक मिश्रित रूप — चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
११५. (A) चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि। — चम्पूमे कथा गद्यसँ आ भाव पद्यसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि।
११६. (C) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य — प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
११७. (B) प्रबन्ध-काव्य — प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
११८. (B) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि। — प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
११९. (B) विस्तृत, क्रमबद्ध आ कथानक-प्रधान काव्य — प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
१२०. (C) प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि। — प्रबन्धमे आरम्भ, विस्तार आ परिणामक क्रम रहैत अछि।
१२१. (A) स्वतंत्र पद जे अपने-आपमे पूर्ण हो — मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
१२२. (B) मुक्तक-काव्य — मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
१२३. (C) मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि। — मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
१२४. (D) स्वतंत्र पद जे अपने-आपमे पूर्ण हो — मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
१२५. (B) मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि। — मुक्तककेँ अलग कथा-क्रमक आवश्यकता नहि।
१२६. (B) विशाल कथाविस्तार, उदात्त नायक आ व्यापक दृष्टिवला काव्य — महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
१२७. (A) महाकाव्य — महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
१२८. (A) महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि। — महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
१२९. (B) विशाल कथाविस्तार, उदात्त नायक आ व्यापक दृष्टिवला काव्य — महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
१३०. (B) महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि। — महाकाव्य समाज, इतिहास, प्रकृति आ आदर्शक विस्तृत चित्र देइत अछि।
१३१. (D) कोनो एक प्रसंग वा जीवन-खंड पर केन्द्रित काव्य — खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
१३२. (D) खण्डकाव्य — खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
१३३. (B) खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि। — खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
१३४. (D) कोनो एक प्रसंग वा जीवन-खंड पर केन्द्रित काव्य — खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
१३५. (A) खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि। — खण्डकाव्य महाकाव्यसँ संक्षिप्त आ केन्द्रित होइत अछि।
१३६. (D) व्यक्तिगत भाव, लय आ गेयता प्रधान काव्य — गीतिका मे भावक तीव्रता आ संगीतात्मकता रहैत अछि।
१३७. (D) गीतिकाव्य — गीतिका मे भावक तीव्रता आ संगीतात्मकता रहैत अछि।

१७४. (C) जे मंच पर देखल जा सकय — दृश्यकाव्य अभिनय आ दृश्य-विधानसँ सम्बद्ध अछि।
१७५. (B) दृश्यकाव्य अभिनय आ दृश्य-विधानसँ सम्बद्ध अछि। — दृश्यकाव्य अभिनय आ दृश्य-विधानसँ सम्बद्ध अछि।
१७६. (C) भक्ति, समर्पण आ आराध्य-भावक काव्य — भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
१७७. (A) भक्तिकाव्य — भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
१७८. (C) भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि। — भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
१७९. (B) भक्ति, समर्पण आ आराध्य-भावक काव्य — भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
१८०. (B) भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि। — भक्तिकाव्य मे श्रद्धा आ प्रेमक प्रधानता रहैत अछि।
१८१. (D) प्रेम, सौन्दर्य, मिलन-विरह आ रति-भावक काव्य — शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।
१८२. (C) शृङ्गार-काव्य — शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।
१८३. (D) शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि। — शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।
१८४. (C) प्रेम, सौन्दर्य, मिलन-विरह आ रति-भावक काव्य — शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।
१८५. (D) शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि। — शृङ्गार-काव्य रसात्मक कोमलता दैत अछि।
१८६. (C) शौर्य, उत्साह आ पराक्रम प्रधान काव्य — वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
१८७. (A) वीरकाव्य — वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
१८८. (D) वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि। — वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
१८९. (B) शौर्य, उत्साह आ पराक्रम प्रधान काव्य — वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
१९०. (C) वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि। — वीरकाव्य मे उत्साह स्थायीभावक विस्तार होइत अछि।
१९१. (C) व्यवहार, सदाचार आ नीति-ज्ञानक काव्य — नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
१९२. (D) नीतिकाव्य — नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
१९३. (B) नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि। — नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
१९४. (C) व्यवहार, सदाचार आ नीति-ज्ञानक काव्य — नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
१९५. (A) नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि। — नीतिकाव्य मधुर रूपमे शिक्षा दैत अछि।
१९६. (C) ऋतु, प्रकृति, नगर, युद्ध वा सौन्दर्यक विस्तारयुक्त चित्रण — वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
१९७. (B) वर्णनात्मक काव्य — वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
१९८. (B) वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि। — वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
१९९. (C) ऋतु, प्रकृति, नगर, युद्ध वा सौन्दर्यक विस्तारयुक्त चित्रण — वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
२००. (D) वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि। — वर्णनात्मक काव्य बिम्ब आ विवरणसँ प्रभाव बनबैत अछि।
२०१. (C) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति — अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
२०२. (D) अभिधा — अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
२०३. (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि। — अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
२०४. (D) शब्दक सीधा, प्रचलित आ मुख्य अर्थ बताबयवाली शक्ति — अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
२०५. (A) अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि। — अभिधा द्वारा वाच्यार्थ प्रकट होइत अछि।
२०६. (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति — लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
२०७. (A) लक्षणा — लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
२०८. (D) लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि। — लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।
२०९. (A) मुख्यार्थ अनुपयुक्त भेलापर सम्बन्धित दोसर अर्थ ग्रहण कराबयवाली शक्ति — लक्षणा अर्थक स्थानान्तरण करैत अछि।

२८२. (B) तात्पर्य — तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
२८३. (A) तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि। — तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
२८४. (D) पूरा कथनक अभिप्रेत अर्थ — तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
२८५. (B) तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि। — तात्पर्य वाक्यक कुल दिशा सँ बुझाईत अछि।
२८६. (B) वक्ता, प्रसंग, परिस्थिति आ वाक्य-संबंध — सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
२८७. (C) सन्दर्भ — सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
२८८. (A) सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि। — सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
२८९. (A) वक्ता, प्रसंग, परिस्थिति आ वाक्य-संबंध — सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
२९०. (C) सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि। — सन्दर्भ शब्दक सही अर्थ तय करैत अछि।
२९१. (D) शब्द आ अर्थक सामाजिक सम्बन्ध — संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
२९२. (B) संकेत — संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
२९३. (D) संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि। — संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
२९४. (B) शब्द आ अर्थक सामाजिक सम्बन्ध — संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
२९५. (A) संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि। — संकेतक कारण शब्द सुनिते अर्थक स्मरण होइत अछि।
२९६. (D) मुख्य अर्थ छोड़ि सम्बन्धित अर्थमे शब्दक प्रयोग — लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि।
२९७. (B) लाक्षणिक प्रयोग — लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि।
२९८. (C) लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि। — लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि।
२९९. (D) मुख्य अर्थ छोड़ि सम्बन्धित अर्थमे शब्दक प्रयोग — लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि।
३००. (B) लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि। — लाक्षणिक प्रयोग भाषा कें लचीला बनबैत अछि।
३०१. (C) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद — रस काव्यक प्राण अछि।
३०२. (D) रस — रस काव्यक प्राण अछि।
३०३. (B) रस काव्यक प्राण अछि। — रस काव्यक प्राण अछि।
३०४. (A) भावक परिपाकसँ सहृदयमे उपजल सौन्दर्य-आस्वाद — रस काव्यक प्राण अछि।
३०५. (D) रस काव्यक प्राण अछि। — रस काव्यक प्राण अछि।
३०६. (C) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि — स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
३०७. (C) स्थायीभाव — स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
३०८. (A) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि। — स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
३०९. (B) मनमे टिकि रहल मूल भाव जे रस बनैत अछि — स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
३१०. (C) स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि। — स्थायीभाव रसक बीज रूप अछि।
३११. (D) भाव जगाबयवला कारण वा आधार — विभाव भावक जागरण करैत अछि।
३१२. (B) विभाव — विभाव भावक जागरण करैत अछि।
३१३. (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि। — विभाव भावक जागरण करैत अछि।
३१४. (B) भाव जगाबयवला कारण वा आधार — विभाव भावक जागरण करैत अछि।
३१५. (D) विभाव भावक जागरण करैत अछि। — विभाव भावक जागरण करैत अछि।
३१६. (B) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि — नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
३१७. (C) आलम्बन विभाव — नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।

३१८. (B) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि। — नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
३१९. (D) जे व्यक्ति वा वस्तु भावक आधार बनैत अछि — नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
३२०. (C) नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि। — नायक, नायिका वा आराध्य आलम्बन भऽ सकैत छथि।
३२१. (A) परिसर, ऋतु वा वस्तु जे भावकें उद्दीप्त करैत अछि — बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
३२२. (B) उद्दीपन विभाव — बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
३२३. (C) बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि। — बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
३२४. (D) परिसर, ऋतु वा वस्तु जे भावकें उद्दीप्त करैत अछि — बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
३२५. (B) बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि। — बसन्त, चन्द्रमा, वन आदि उद्दीपन भऽ सकैत अछि।
३२६. (C) भीतरक भावक बाहरी चेष्टा — नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
३२७. (A) अनुभाव — नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
३२८. (C) नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि। — नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
३२९. (A) भीतरक भावक बाहरी चेष्टा — नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
३३०. (C) नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि। — नोर, रोमांच, मुस्की आदि अनुभाव होइत अछि।
३३१. (D) क्षणिक सहायक भाव जे स्थायीभाव कें पुष्ट करैत अछि — सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
३३२. (D) सञ्चारीभाव — सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
३३३. (C) सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि। — सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
३३४. (B) क्षणिक सहायक भाव जे स्थायीभाव कें पुष्ट करैत अछि — सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
३३५. (C) सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि। — सञ्चारीभाव रसक प्रवाह बढ़बैत अछि।
३३६. (C) रति स्थायीभाव पर आधारित प्रेम-सौन्दर्यक रस — शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
३३७. (D) शृङ्गार रस — शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
३३८. (B) शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि। — शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
३३९. (A) रति स्थायीभाव पर आधारित प्रेम-सौन्दर्यक रस — शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
३४०. (D) शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि। — शृङ्गारमे मिलन आ विरह दुनू रहैत अछि।
३४१. (A) हास स्थायीभाव पर आधारित विनोदक रस — हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
३४२. (B) हास्य रस — हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
३४३. (A) हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि। — हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
३४४. (A) हास स्थायीभाव पर आधारित विनोदक रस — हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
३४५. (D) हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि। — हास्य मनमे प्रसन्नता उत्पन्न करैत अछि।
३४६. (D) शोक स्थायीभाव पर आधारित दया-विषादक रस — करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
३४७. (A) करुण रस — करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
३४८. (A) करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि। — करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
३४९. (C) शोक स्थायीभाव पर आधारित दया-विषादक रस — करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
३५०. (D) करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि। — करुण रस संवेदनाकें कोमल बनबैत अछि।
३५१. (B) क्रोध स्थायीभाव पर आधारित उग्र रस — रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।
३५२. (B) रौद्र रस — रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।
३५३. (D) रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि। — रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।

३५४. (A) क्रोध स्थायीभाव पर आधारित उग्र रस — रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।
३५५. (D) रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि। — रौद्र अन्याय-विरोध आ क्रोधक सौन्दर्य रूप अछि।
३५६. (C) उत्साह स्थायीभाव पर आधारित पराक्रमक रस — वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
३५७. (D) वीर रस — वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
३५८. (A) वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि। — वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
३५९. (D) उत्साह स्थायीभाव पर आधारित पराक्रमक रस — वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
३६०. (A) वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि। — वीर रस साहस आ कर्म-प्रवृत्ति जगबैत अछि।
३६१. (B) भय स्थायीभाव पर आधारित रस — अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
३६२. (A) भयानक रस — अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
३६३. (C) अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि। — अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
३६४. (B) भय स्थायीभाव पर आधारित रस — अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
३६५. (A) अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि। — अँधार, संकट आ अनिश्चितता भयानक भाव जगबैत अछि।
३६६. (B) जुगुप्सा स्थायीभाव पर आधारित घृणाक रस — कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
३६७. (C) बीभत्स रस — कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
३६८. (D) कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि। — कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
३६९. (A) जुगुप्सा स्थायीभाव पर आधारित घृणाक रस — कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
३७०. (A) कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि। — कुरूप वा अपवित्र दृश्य बीभत्स उत्पन्न करैत अछि।
३७१. (D) विस्मय स्थायीभाव पर आधारित आश्चर्यक रस — अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
३७२. (B) अद्भुत रस — अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
३७३. (C) अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि। — अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
३७४. (C) विस्मय स्थायीभाव पर आधारित आश्चर्यक रस — अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
३७५. (A) अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि। — अद्भुत विलक्षणता आ चमत्कारसँ जुड़ल अछि।
३७६. (D) निर्वेद वा शम पर आधारित शान्तिक रस — शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
३७७. (A) शान्त रस — शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
३७८. (C) शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि। — शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
३७९. (C) निर्वेद वा शम पर आधारित शान्तिक रस — शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
३८०. (C) शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि। — शान्त रस वैराग्य आ स्थिरताक अनुभव दैत अछि।
३८१. (D) शृङ्गार रसक स्थायीभाव — रति प्रेमक मूल भाव अछि।
३८२. (D) रति — रति प्रेमक मूल भाव अछि।
३८३. (B) रति प्रेमक मूल भाव अछि। — रति प्रेमक मूल भाव अछि।
३८४. (A) शृङ्गार रसक स्थायीभाव — रति प्रेमक मूल भाव अछि।
३८५. (C) रति प्रेमक मूल भाव अछि। — रति प्रेमक मूल भाव अछि।
३८६. (B) करुण रसक स्थायीभाव — शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
३८७. (C) शोक — शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
३८८. (C) शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि। — शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
३८९. (A) करुण रसक स्थायीभाव — शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।

३९०. (A) शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि। — शोक दुःखक गाढ़ अनुभूति अछि।
३९१. (C) वीर रसक स्थायीभाव — उत्साह साहसक आधार अछि।
३९२. (A) उत्साह — उत्साह साहसक आधार अछि।
३९३. (A) उत्साह साहसक आधार अछि। — उत्साह साहसक आधार अछि।
३९४. (D) वीर रसक स्थायीभाव — उत्साह साहसक आधार अछि।
३९५. (B) उत्साह साहसक आधार अछि। — उत्साह साहसक आधार अछि।
३९६. (C) अद्भुत रसक स्थायीभाव — विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
३९७. (A) विस्मय — विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
३९८. (A) विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि। — विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
३९९. (D) अद्भुत रसक स्थायीभाव — विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
४००. (C) विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि। — विस्मय आश्चर्यक मूल भाव अछि।
४०१. (A) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह — प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
४०२. (A) प्रसाद गुण — प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
४०३. (B) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि। — प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
४०४. (B) सरल, स्वच्छ आ सहज ग्रहणीय अर्थ-प्रवाह — प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
४०५. (C) प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि। — प्रसादसँ काव्य बिना बाधा मनमे उतरैत अछि।
४०६. (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा — माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
४०७. (B) माधुर्य गुण — माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
४०८. (C) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि। — माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
४०९. (C) कोमल, मधुर आ श्रवणप्रिय भाषा — माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
४१०. (D) माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि। — माधुर्य कोमल भावक अनुकूल अछि।
४११. (A) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति — ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
४१२. (D) ओज गुण — ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
४१३. (A) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि। — ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
४१४. (C) तेज, ऊर्जा आ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति — ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
४१५. (B) ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि। — ओज वीर आ रौद्र प्रसंगमे विशेष उपयोगी अछि।
४१६. (D) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह — समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
४१७. (A) समता गुण — समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
४१८. (A) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि। — समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
४१९. (A) भाषा आ भावक संतुलित प्रवाह — समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
४२०. (C) समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि। — समता रचनाकेँ टूटल-बिखरल नहि होमय दैत अछि।
४२१. (D) कोमलता आ नाजुक भाषा-प्रयोग — सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
४२२. (A) सौकुमार्य — सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
४२३. (B) सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि। — सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
४२४. (D) कोमलता आ नाजुक भाषा-प्रयोग — सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।
४२५. (A) सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि। — सौकुमार्य सूक्ष्म भाव व्यक्त करैत अछि।

४२६. (B) अर्थक स्पष्ट आ पूर्ण अभिव्यक्ति — अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।
४२७. (D) अर्थव्यक्ति — अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।
४२८. (D) अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि। — अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।
४२९. (B) अर्थक स्पष्ट आ पूर्ण अभिव्यक्ति — अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।
४३०. (D) अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि। — अर्थव्यक्ति अस्पष्टता हटबैत अछि।
४३१. (D) विस्तृत, उन्नत आ गरिमामय भाव — उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
४३२. (D) उदारता — उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
४३३. (C) उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत। — उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
४३४. (B) विस्तृत, उन्नत आ गरिमामय भाव — उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
४३५. (A) उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत। — उदारता काव्यकें संकीर्ण नहि रहय दैत।
४३६. (C) भाषाक चमक आ सौन्दर्यपूर्ण उज्ज्वलता — कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
४३७. (B) कान्ति — कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
४३८. (D) कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि। — कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
४३९. (B) भाषाक चमक आ सौन्दर्यपूर्ण उज्ज्वलता — कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
४४०. (B) कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि। — कान्ति काव्यकें आकर्षक बनबैत अछि।
४४१. (C) सरल, मधुर, प्रसादपूर्ण आ कोमल शैली — वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
४४२. (A) वैदर्भी रीति — वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
४४३. (C) वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि। — वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
४४४. (D) सरल, मधुर, प्रसादपूर्ण आ कोमल शैली — वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
४४५. (C) वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि। — वैदर्भी रीति माधुर्यसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।
४४६. (A) ओजस्वी, गाढ़ आ समासयुक्त शैली — गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
४४७. (D) गौड़ी रीति — गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
४४८. (C) गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि। — गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
४४९. (D) ओजस्वी, गाढ़ आ समासयुक्त शैली — गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
४५०. (A) गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि। — गौड़ी रीतिमे शब्दबल आ दीर्घ विन्यास भेटैत अछि।
४५१. (C) मध्यम, संतुलित आ स्वाभाविक शैली — पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
४५२. (D) पाञ्चाली रीति — पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
४५३. (A) पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि। — पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
४५४. (D) मध्यम, संतुलित आ स्वाभाविक शैली — पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
४५५. (D) पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि। — पाञ्चाली वैदर्भी आ गौड़ीक बीचक संतुलन राखैत अछि।
४५६. (D) शब्द-व्यवस्था आ शैलीक विशिष्ट मार्ग — रीति कविक भाषिक चाल अछि।
४५७. (C) रीति — रीति कविक भाषिक चाल अछि।
४५८. (C) रीति कविक भाषिक चाल अछि। — रीति कविक भाषिक चाल अछि।
४५९. (A) शब्द-व्यवस्था आ शैलीक विशिष्ट मार्ग — रीति कविक भाषिक चाल अछि।
४६०. (B) रीति कविक भाषिक चाल अछि। — रीति कविक भाषिक चाल अछि।
४६१. (A) कविक निज अभिव्यक्ति-पद्धति — शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।

४६२. (C) शैली — शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।
४६३. (A) शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि। — शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।
४६४. (D) कविक निज अभिव्यक्ति-पद्धति — शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।
४६५. (D) शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि। — शैली कविक पहचान बनि सकैत अछि।
४६६. (B) शब्दक क्रम, चयन आ विन्यास — पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
४६७. (C) पदरचना — पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
४६८. (A) पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि। — पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
४६९. (B) शब्दक क्रम, चयन आ विन्यास — पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
४७०. (D) पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि। — पदरचना गुण आ रीतिक आधार बनैत अछि।
४७१. (D) कम शब्दमे प्रभावी कथन — लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
४७२. (C) लाघव — लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
४७३. (A) लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि। — लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
४७४. (C) कम शब्दमे प्रभावी कथन — लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
४७५. (C) लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि। — लाघव अर्थ केँ सघन बनबैत अछि।
४७६. (B) गहिर आ विचारपूर्ण अभिव्यक्ति — गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
४७७. (C) गाम्भीर्य — गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
४७८. (B) गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि। — गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
४७९. (C) गहिर आ विचारपूर्ण अभिव्यक्ति — गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
४८०. (A) गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि। — गाम्भीर्य काव्यकेँ बौद्धिक वजन दैत अछि।
४८१. (A) बिना जटिलता सहज अर्थ पहुँचाबयवाली भाषा — सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
४८२. (A) सरलता — सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
४८३. (C) सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि। — सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
४८४. (D) बिना जटिलता सहज अर्थ पहुँचाबयवाली भाषा — सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
४८५. (B) सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि। — सरलता प्रसाद गुणसँ सम्बद्ध अछि।
४८६. (A) तेजस्वी आ चमकदार प्रभाव — दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
४८७. (C) दीप्ति — दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
४८८. (D) दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि। — दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
४८९. (D) तेजस्वी आ चमकदार प्रभाव — दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
४९०. (C) दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि। — दीप्ति ओज आ कान्तिक समीप अछि।
४९१. (C) वाक्य आ पदक संतुलित गति — लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
४९२. (B) लय-समता — लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
४९३. (D) लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि। — लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
४९४. (B) वाक्य आ पदक संतुलित गति — लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
४९५. (B) लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि। — लय-समता श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
४९६. (B) भावानुकूल सटीक शब्दक चयन — शब्द-चयन औचित्य आ गुण केँ पुष्ट करैत अछि।
४९७. (C) शब्द-चयन — शब्द-चयन औचित्य आ गुण केँ पुष्ट करैत अछि।

४९८. (B) शब्द-चयन औचित्य आ गुण कें पुष्ट करैत अछि। — शब्द-चयन औचित्य आ गुण कें पुष्ट करैत अछि।
४९९. (B) भावानुकूल सटीक शब्दक चयन — शब्द-चयन औचित्य आ गुण कें पुष्ट करैत अछि।
५००. (A) शब्द-चयन औचित्य आ गुण कें पुष्ट करैत अछि। — शब्द-चयन औचित्य आ गुण कें पुष्ट करैत अछि।
५०१. (B) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास — अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
५०२. (D) अलंकार — अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
५०३. (C) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि। — अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
५०४. (C) काव्यक शोभा बढ़ाबयवला विशेष शब्द वा अर्थ-विन्यास — अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
५०५. (B) अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि। — अलंकार गहना जकाँ काव्यक सौन्दर्य बढ़बैत अछि।
५०६. (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो — शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
५०७. (B) शब्दालंकार — शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
५०८. (D) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि। — शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
५०९. (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः शब्द वा ध्वनिपर आधारित हो — शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
५१०. (B) शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि। — शब्द बदलिते चमत्कार घटि जाइत अछि।
५११. (D) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो — अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
५१२. (B) अर्थालंकार — अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
५१३. (C) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि। — अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
५१४. (C) जहाँ चमत्कार मुख्यतः अर्थक विन्यासपर आधारित हो — अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
५१५. (B) अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि। — अर्थ बचल रहिते शब्द बदललो पर प्रभाव रहि सकैत अछि।
५१६. (D) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग — अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
५१७. (A) अनुप्रास — अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
५१८. (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि। — अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
५१९. (C) एके वा समान ध्वनिक बारम्बार प्रयोग — अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
५२०. (C) अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि। — अनुप्रासमे ध्वनि-सौन्दर्य मुख्य अछि।
५२१. (C) एके शब्दसँ अनेक अर्थक बोध — श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
५२२. (D) श्लेष — श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
५२३. (D) श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि। — श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
५२४. (C) एके शब्दसँ अनेक अर्थक बोध — श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
५२५. (A) श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि। — श्लेष अर्थक बहुलता सँ चमत्कार पैदा करैत अछि।
५२६. (B) एके शब्द वा ध्वनिक पुनरावृत्ति, मुदा अर्थ भिन्न — यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
५२७. (B) यमक — यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
५२८. (A) यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि। — यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
५२९. (B) एके शब्द वा ध्वनिक पुनरावृत्ति, मुदा अर्थ भिन्न — यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
५३०. (A) यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि। — यमकमे पुनरावृत्ति आ अर्थ-भेद दुनू जरूरी अछि।
५३१. (A) उपमेय आ उपमानक स्पष्ट सादृश्य — उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि।
५३२. (A) उपमा — उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि।
५३३. (C) उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि। — उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि।

५३४. (C) उपमेय आ उपमानक स्पष्ट सादृश्य — उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि।
५३५. (A) उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि। — उपमामे ‘सन’, ‘जकाँ’, ‘समान’ आदि संकेत भेटैत अछि।
५३६. (A) उपमेय केँ उपमान मानि अभेद स्थापित करब — रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
५३७. (B) रूपक — रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
५३८. (C) रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि। — रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
५३९. (A) उपमेय केँ उपमान मानि अभेद स्थापित करब — रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
५४०. (C) रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि। — रूपकमे तुलना नहि, सीधा अभिन्नता कहल जाइत अछि।
५४१. (C) सम्भावना वा कल्पनात्मक सादृश्य — ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
५४२. (C) उत्प्रेक्षा — ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
५४३. (A) ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि। — ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
५४४. (A) सम्भावना वा कल्पनात्मक सादृश्य — ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
५४५. (A) ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि। — ‘मानू’, ‘लगै जे’ आदि भाव उत्प्रेक्षा सूचित करैत अछि।
५४६. (B) कारण बिना कार्य घटित भेल जकाँ कथन — विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
५४७. (A) विभावना — विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
५४८. (D) विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि। — विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
५४९. (D) कारण बिना कार्य घटित भेल जकाँ कथन — विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
५५०. (A) विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि। — विभावनासँ आश्चर्यपूर्ण प्रभाव बनैत अछि।
५५१. (B) कारण रहितो कार्य नहि भेल जकाँ कथन — विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
५५२. (D) विशेषोक्ति — विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
५५३. (C) विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि। — विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
५५४. (B) कारण रहितो कार्य नहि भेल जकाँ कथन — विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
५५५. (D) विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि। — विशेषोक्ति कारण आ परिणामक असामान्य सम्बन्ध देखबैत अछि।
५५६. (D) बढ़ा-चढ़ा कऽ कथन — अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
५५७. (A) अतिशयोक्ति — अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
५५८. (A) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि। — अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
५५९. (A) बढ़ा-चढ़ा कऽ कथन — अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
५६०. (C) अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि। — अतिशयोक्ति भावक तीव्रता बढ़बैत अछि।
५६१. (C) अप्रस्तुत वस्तुद्वारा प्रस्तुत विषयक प्रशंसा वा निन्दा — एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
५६२. (C) अप्रस्तुत-प्रशंसा — एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
५६३. (A) एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि। — एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
५६४. (B) अप्रस्तुत वस्तुद्वारा प्रस्तुत विषयक प्रशंसा वा निन्दा — एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
५६५. (A) एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि। — एहि अलंकारमे एकक माध्यमँ दोसरक गुण-दोष कहल जाइत अछि।
५६६. (B) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ अप्रस्तुत अर्थक संकेत — समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
५६७. (D) समासोक्ति — समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
५६८. (C) समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि। — समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
५६९. (A) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ अप्रस्तुत अर्थक संकेत — समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।

५७०. (C) समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि। — समासोक्ति कम शब्दमे अधिक अर्थ दैत अछि।
५७१. (B) दू वा अधिक सम्भावनामे संशय व्यक्त करब — सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।
५७२. (D) सन्देह — सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।
५७३. (D) सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि। — सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।
५७४. (A) दू वा अधिक सम्भावनामे संशय व्यक्त करब — सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।
५७५. (D) सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि। — सन्देहमे निर्णय स्थगित रहैत अछि।
५७६. (B) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक काव्यगत भ्रम — भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
५७७. (D) भ्रान्तिमान — भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
५७८. (C) भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि। — भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
५७९. (C) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक काव्यगत भ्रम — भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
५८०. (C) भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि। — भ्रान्तिमानमे भ्रमे सौन्दर्य बनैत अछि।
५८१. (D) विपरीत वा असंगत वस्तुक चमत्कारपूर्ण मेल — विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
५८२. (D) विषम — विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
५८३. (D) विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि। — विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
५८४. (A) विपरीत वा असंगत वस्तुक चमत्कारपूर्ण मेल — विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
५८५. (A) विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि। — विषम विरोधी तत्त्वक संगति देखबैत अछि।
५८६. (C) टेढ़, व्यंग्यपूर्ण वा चमत्कारपूर्ण कथन — वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
५८७. (D) वक्रोक्ति — वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
५८८. (A) वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि। — वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
५८९. (D) टेढ़, व्यंग्यपूर्ण वा चमत्कारपूर्ण कथन — वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
५९०. (D) वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि। — वक्रोक्ति सीधा कथन छोड़ि कलात्मक मोड़ दैत अछि।
५९१. (D) अलंकारक विषय आ भावसँ मेल — अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
५९२. (B) अलंकार-औचित्य — अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
५९३. (A) अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही। — अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
५९४. (A) अलंकारक विषय आ भावसँ मेल — अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
५९५. (D) अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही। — अलंकार भावकेँ ढाँपय नहि, चमकाबय चाही।
५९६. (A) अतिरिक्त सजावटसँ भावक बाधा — अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि।
५९७. (B) अलंकार-दोष — अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि।
५९८. (A) अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि। — अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि।
५९९. (B) अतिरिक्त सजावटसँ भावक बाधा — अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि।
६००. (C) अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि। — अलंकारक अति काव्यकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि।
६०१. (D) अनुप्रास — म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
६०२. (D) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि। — म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
६०३. (B) अनुप्रास — म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
६०४. (C) म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि। — म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।
६०५. (A) अनुप्रास — म ध्वनिक आवृत्ति ध्वनि-सौन्दर्य रचैत अछि।

६०६. (C) अनुप्रास — च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६०७. (C) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि। — च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६०८. (D) अनुप्रास — च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६०९. (A) च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि। — च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६१०. (A) अनुप्रास — च ध्वनिक बारम्बारता अनुप्रासक संकेत अछि।

६११. (D) यमक — एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६१२. (C) एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि। — एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६१३. (B) यमक — एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६१४. (C) एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि। — एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

६१५. (C) यमक — एके 'कर' ध्वनिक पुनरावृत्ति भिन्न अर्थ देबय सकैत अछि।

૬૧૬. (A) યમક — ‘ફલ’ક પુનરાવૃત્તિમે ફલ આ પરિણામક અર્થ-ભેદ અછિ।

૬૧૭. (D) ‘ફલ’ક પુનરાવૃત્તિમે ફલ આ પરિણામક અર્થ-ભેદ અછિ। — ‘ફલ’ક પુનરાવૃત્તિમે ફલ આ પરિણામક અર્થ-ભેદ અછિ।

૬૧૮. (D) યમક — ‘ફલ’ક પુનરાવૃત્તિમે ફલ આ પરિણામક અર્થ-ભેદ અછિ।

६१९. (C) 'फल'क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि। — 'फल'क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।

६२०. (D) यमक — ‘फल’क पुनरावृत्तिमे फल आ परिणामक अर्थ-भेद अछि।

૬૨૧. (C) શ્લેષ — હરિ શબ્દ અનેક અર્થક સંકેત કરૈત અછિ।

६२२. (B) हरि शब्द अनेक अर्थक संकेत करैत अछि। — हरि शब्द अनेक अर्थक संकेत करैत अछि।

૬૨૩. (A) શ્લેષ — હરિ શબ્દ અનેક અર્થક સંકેત કરેત અછિ।

૬૨૪. (D) હરિ શબ્દ અનેક અર્થક સંકેત કરૈત અછિ। — હરિ શબ્દ અનેક અર્થક સંકેત કરૈત અછિ।

૬૨૫. (A) શ્લેષ — હરિ શબ્દ અનેક અર્થક સંકેત કરૈત અછિ।

६२६. (D) श्लेष — मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।

६२७. (A) मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि। — मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।

६२८. (A) श्लेष — मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।

६२९. (A) मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि। — मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।

६३०. (B) श्लेष — मधु शब्द ऋतु आ मधुर द्रव्य दुनू संकेत कऽ सकैत अछि।

६३१. (D) उपमा — ‘सन’ स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।

६३२. (A) 'सन' स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि। — 'सन' स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।

६३३. (A) उपमा — ‘सन’ स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।

६३४. (B) 'सन' स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि। — 'सन' स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।

६३५. (D) उपमा — ‘सन’ स्पष्ट तुलना सूचित करैत अछि।

૬૩૬. (C) રૂપક — વીરકે સીધા સિંહ કહલ ગેલ અછિ।

६३७. (B) वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि। — वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि।

૬૩૮. (A) રૂપક — વીરકે સીધા સિંહ કહલ ગેલ અછિ।

६३९. (A) वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि। — वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि।

६४०. (B) रूपक — वीरकें सीधा सिंह कहल गेल अछि।

६४१. (C) उत्प्रेक्षा — मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।

६४२. (A) मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि। — मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।
६४३. (B) उत्प्रेक्षा — मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।
६४४. (D) मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि। — मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।
६४५. (C) उत्प्रेक्षा — मानू भाव कल्पनात्मक सम्भावना दैत अछि।
६४६. (B) विभावना — कारण बिना कार्यक कथन अछि।
६४७. (B) कारण बिना कार्यक कथन अछि। — कारण बिना कार्यक कथन अछि।
६४८. (A) विभावना — कारण बिना कार्यक कथन अछि।
६४९. (B) कारण बिना कार्यक कथन अछि। — कारण बिना कार्यक कथन अछि।
६५०. (C) विभावना — कारण बिना कार्यक कथन अछि।
६५१. (D) विशेषोक्ति — कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
६५२. (A) कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल। — कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
६५३. (C) विशेषोक्ति — कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
६५४. (B) कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल। — कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
६५५. (D) विशेषोक्ति — कारण रहितो अपेक्षित कार्य नहि भेल।
६५६. (B) अतिशयोक्ति — दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
६५७. (B) दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल। — दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
६५८. (B) अतिशयोक्ति — दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
६५९. (B) दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल। — दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
६६०. (B) अतिशयोक्ति — दुखकें अत्यधिक बढ़ा कऽ कहल गेल।
६६१. (B) अप्रस्तुत-प्रशंसा — दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
६६२. (C) दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि। — दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
६६३. (C) अप्रस्तुत-प्रशंसा — दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
६६४. (B) दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि। — दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
६६५. (A) अप्रस्तुत-प्रशंसा — दीपकक माध्यमें त्यागी जनक प्रशंसा सूचित अछि।
६६६. (D) समासोक्ति — संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
६६७. (D) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि। — संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
६६८. (D) समासोक्ति — संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
६६९. (B) संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि। — संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
६७०. (A) समासोक्ति — संक्षिप्त कथनमे गूढ़ प्रसंगक संकेत अछि।
६७१. (C) सन्देह — दू सम्भावनामे संशय अछि।
६७२. (B) दू सम्भावनामे संशय अछि। — दू सम्भावनामे संशय अछि।
६७३. (D) सन्देह — दू सम्भावनामे संशय अछि।
६७४. (B) दू सम्भावनामे संशय अछि। — दू सम्भावनामे संशय अछि।
६७५. (C) सन्देह — दू सम्भावनामे संशय अछि।
६७६. (A) भ्रान्तिमान — एक वस्तुकें दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
६७७. (C) एक वस्तुकें दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि। — एक वस्तुकें दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।

६७८. (B) भ्रान्तिमान — एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
६७९. (A) एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि। — एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
६८०. (A) भ्रान्तिमान — एक वस्तुकेँ दोसर बुझि लेबाक भ्रम अछि।
६८१. (C) विषम — विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
६८२. (A) विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि। — विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
६८३. (C) विषम — विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
६८४. (D) विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि। — विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
६८५. (B) विषम — विपरीत तत्त्वक चमत्कारपूर्ण मेल अछि।
६८६. (D) वक्रोक्ति — व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
६८७. (A) व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि। — व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
६८८. (D) वक्रोक्ति — व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
६८९. (B) व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि। — व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
६९०. (D) वक्रोक्ति — व्यंग्यपूर्ण टेढ़ कथन अछि।
६९१. (C) उपमा — उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
६९२. (C) उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि। — उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
६९३. (D) उपमा — उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
६९४. (D) उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि। — उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
६९५. (B) उपमा — उपमेय-उपमानक स्पष्ट तुलना अछि।
६९६. (B) रूपक — गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
६९७. (D) गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि। — गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
६९८. (C) रूपक — गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
६९९. (A) गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि। — गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
७००. (C) रूपक — गुरु केँ दीपक रूपमे अभिन्न कहल गेल अछि।
७०१. (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण — अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
७०२. (D) अनुष्टुप् — अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
७०३. (D) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि। — अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
७०४. (C) चारि पाद, प्रत्येक पादमे आठ वर्ण — अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
७०५. (C) अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि। — अनुष्टुप् संस्कृत श्लोक-परम्पराक अत्यन्त प्रचलित छन्द अछि।
७०६. (B) यगण-प्रधान तरंगित गति — भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
७०७. (A) भुजंगप्रयात् — भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
७०८. (C) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि। — भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
७०९. (D) यगण-प्रधान तरंगित गति — भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
७१०. (B) भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि। — भुजंगप्रयात् साँपक गतिक संकेत देबयवला नाम अछि।
७११. (A) पन्द्रह वर्णक पादवला संस्कृत वर्णवृत्त — मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
७१२. (B) मालिनी — मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।
७१३. (D) मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि। — मालिनी संतुलित, गंभीर आ मधुर प्रवाह दैत अछि।

७५०. (A) भुजंगप्रयात् मे यगणक महत्त्व बताओल जाइत अछि। — भुजंगप्रयात् मे यगणक महत्त्व बताओल जाइत अछि।
७५१. (D) लय, वर्ण, मात्रा, यति आ गति केर अध्ययन — छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।
७५२. (D) छन्दोविचार — छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।
७५३. (D) छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि। — छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।
७५४. (A) लय, वर्ण, मात्रा, यति आ गति केर अध्ययन — छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।
७५५. (D) छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि। — छन्दोविचार काव्य-पाठक संगीतात्मक आधार बुझबैत अछि।
७५६. (B) छन्दमे ठहरावक नियत स्थान — यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
७५७. (D) यति — यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
७५८. (C) यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि। — यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
७५९. (B) छन्दमे ठहरावक नियत स्थान — यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
७६०. (C) यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि। — यति पाठकें सहज आ प्रभावी बनबैत अछि।
७६१. (C) छन्दक प्रवाह आ चाल — गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
७६२. (C) गति — गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
७६३. (A) गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि। — गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
७६४. (B) छन्दक प्रवाह आ चाल — गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
७६५. (C) गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि। — गति भावानुसार छन्दक प्रभाव बदलैत अछि।
७६६. (C) वर्णवृत्तक चरण वा भाग — संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
७६७. (A) पाद — संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
७६८. (C) संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि। — संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
७६९. (B) वर्णवृत्तक चरण वा भाग — संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
७७०. (D) संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि। — संस्कृत छन्दमे पाद गणना महत्त्वपूर्ण अछि।
७७१. (D) छन्दमे वर्णक संख्या गिनब — वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
७७२. (C) वर्ण-गणना — वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
७७३. (A) वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि। — वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
७७४. (C) छन्दमे वर्णक संख्या गिनब — वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
७७५. (D) वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि। — वर्णवृत्त चिन्हबाक ई मूल उपाय अछि।
७७६. (C) ध्वनिक नियमित प्रवाह — लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
७७७. (A) लय — लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
७७८. (B) लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि। — लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
७७९. (D) ध्वनिक नियमित प्रवाह — लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
७८०. (A) लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि। — लय बिना छन्दक आस्वाद अधूरा अछि।
७८१. (A) पाठमे नियमित ध्वनि-संयोजन — ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।
७८२. (C) ताल-संबंध — ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।
७८३. (B) ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि। — ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।
७८४. (A) पाठमे नियमित ध्वनि-संयोजन — ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।
७८५. (B) ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि। — ताल छन्दकें श्रवणीय बनबैत अछि।

७८६. (A) धीम, मंथर आ कोमल छन्द-प्रवाह — मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
७८७. (B) विरह-गति — मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
७८८. (C) मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि। — मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
७८९. (A) धीम, मंथर आ कोमल छन्द-प्रवाह — मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
७९०. (A) मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि। — मन्दाक्रान्ता जकाँ छन्द विरह-भावसँ जुड़ैत अछि।
७९१. (D) ऊँच, गंभीर आ गरिमामय प्रवाह — शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
७९२. (A) उदात्त गति — शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
७९३. (B) शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि। — शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
७९४. (B) ऊँच, गंभीर आ गरिमामय प्रवाह — शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
७९५. (D) शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि। — शिखरिणी जकाँ छन्द उदात्त प्रसंगमे सुहाइत अछि।
७९६. (D) गण, वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमसँ छन्द चिन्हब — वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
७९७. (C) वृत्त-पहिचान — वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
७९८. (C) वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि। — वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
७९९. (B) गण, वर्ण-संख्या आ गुरु-लघु क्रमसँ छन्द चिन्हब — वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
८००. (B) वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि। — वृत्त-पहिचान अभ्याससँ स्पष्ट होइत अछि।
८०१. (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम — दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
८०२. (B) दोहा — दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
८०३. (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि। — दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
८०४. (D) तेरह-एगारह, तेरह-एगारह मात्रा-क्रम — दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
८०५. (C) दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि। — दोहा नीति, भक्ति आ सूक्तिपरक कथनमे उपयोगी अछि।
८०६. (B) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम — सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
८०७. (D) सोरठा — सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
८०८. (B) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि। — सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
८०९. (C) एगारह-तेरह, एगारह-तेरह मात्रा-क्रम — सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
८१०. (C) सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि। — सोरठा दोहाक उलट मात्रा-विन्यास मानल जाइत अछि।
८११. (D) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा — चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
८१२. (B) चौपाइ — चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
८१३. (D) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि। — चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
८१४. (C) चारि चरण, प्रत्येकमे साधारणतः सोलह मात्रा — चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
८१५. (C) चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि। — चौपाइ कथा-वाचनक अत्यन्त लोकप्रिय छन्द अछि।
८१६. (D) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द — कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
८१७. (C) कुण्डलिया — कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
८१८. (A) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि। — कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
८१९. (C) दोहा आ रोला मिलि बनल छह पंक्तिक छन्द — कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
८२०. (D) कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि। — कुण्डलियामे आरम्भिक पद अन्तमे लौटैत अछि।
८२१. (C) चौबीस मात्रा-प्रधान मात्रिक छन्द — रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।

૮૨૨. (D) રોલા — રોલા મે પ્રાયઃ ઇગારહ-તેરહ યતિ દેખલ જાડત અછિ।

८२३. (D) रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि। — रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।

८२४. (C) चौबीस मात्रा-प्रधान मात्रिक छन्द — रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।

८२५. (B) रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि। — रोला मे प्रायः एगारह-तेरह यति देखल जाइत अछि।

८२६. (B) प्रत्येक चरणमे अट्टाईस मात्रा-प्रधान छन्द — हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि।

૮૨૭. (B) હરિગીતિકા — હરિગીતિકા ગેય આ દીર્ઘ પ્રવાહવાળા છન્દ અછિ।

८२८. (D) हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि। — हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि।

८१९. (D) प्रत्येक चरणमे अट्टाईस मात्रा-प्रधान छन्द — हरिगीतिका गेय आ दीर्घ प्रवाहवाला छन्द अछि।

૮૩૦. (D) હરિગીતિકા ગેય આ દીર્ઘ પ્રવાહવાલા છન્દ અછિ। — હરિગીતિકા ગેય આ દીર્ઘ પ્રવાહવાલા છન્દ અછિ।

८३१. (B) मात्रा-गणना पर आधारित छन्द — मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।

८३२. (A) मात्रिक छन्द — मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।

८३३. (B) मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि। — मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।

८३४. (C) मात्रा-गणना पर आधारित छन्द — मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।

८३५. (B) मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि। — मात्रिक छन्दमे गुरु-लघु संख्याक मात्रा-मूल्य महत्त्वपूर्ण अछि।

૮૩૬. (C) ધ્વનિક કાલ-મૂલ્ય — માત્રા ગણના માત્રિક છન્દક આધાર અછિ।

૮૩૭. (B) માત્રા — માત્રા ગણના માત્રિક છન્દક આધાર અછિ।

८३८. (D) मात्रा गणना मालिक छन्दक आधार अछि। — मात्रा गणना मालिक छन्दक आधार अछि।

૮૩૯. (B) ધ્વનિક કાલ-મૂલ્ય — માત્રા ગણના માત્રિક છન્દક આધાર અછિ।

८४०. (D) मात्रा गणना मालिक छन्दक आधार अछि। — मात्रा गणना मालिक छन्दक आधार अछि।

८४१. (B) छन्दक दोसर आ चारिम चरण — दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि।

८४२. (B) सम चरण — दोहा-सोरठा में सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि।

८४३. (D) दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि। — दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि।

८४४. (B) छन्दक दोसर आ चारिम चरण — दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि।

८४५. (A) दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि। — दोहा-सोरठा मे सम-विषम चरणक मात्रा क्रम महत्त्वपूर्ण अछि।

८४६. (D) छन्दक पहिल आ तेसर चरण — दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।

૮૪૭. (D) વિષમ ચરણ — દોહામે વિષમ ચરણ તેરહ માત્રાક હોડત અછિ।

८४८. (D) दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि। — दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।

८४९. (C) छन्दक पहिल आ तेसर चरण — दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।

८५०. (A) दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि। — दोहामे विषम चरण तेरह मात्राक होइत अछि।

८५१. (D) मात्रा-क्रमक उलटफेर — दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।

८५२. (D) दोहा-सोरठा भेद — दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।

૮૫૩. (A) દોહા આ સોરઠાક મુખ્ય અન્તર માત્રા-વિન્યાસ અછિ। — દોહા આ સોરઠાક મુખ્ય અન્તર માત્રા-વિન્યાસ અછિ।

८५४. (A) मात्रा-क्रमक उलटफेर — दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।

८५५. (D) दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि। — दोहा आ सोरठाक मुख्य अन्तर मात्रा-विन्यास अछि।

८५६. (D) छन्दक एक पंक्ति-खंड — चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधरा अछि।

૮૫૭. (C) ચરણ — ચરણ ગણના બિના છન્દ-પહિચાન અધૂરા અછિ।

८५८. (A) चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि। — चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि।
८५९. (A) छन्दक एक पंक्ति-खंड — चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि।
८६०. (C) चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि। — चरण गणना बिना छन्द-पहिचान अधूरा अछि।
८६१. (D) पंक्ति-अन्तक ध्वनि-साम्य — तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
८६२. (B) तुक — तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
८६३. (D) तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि। — तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
८६४. (D) पंक्ति-अन्तक ध्वनि-साम्य — तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
८६५. (D) तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि। — तुक पद्यक श्रवणीयता बढ़बैत अछि।
८६६. (D) छन्दक गीतिमय प्रवाह — लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
८६७. (A) लयात्मकता — लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
८६८. (D) लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि। — लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
८६९. (B) छन्दक गीतिमय प्रवाह — लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
८७०. (B) लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि। — लयात्मकता पाठकक कान आ मन दुनूकें बाँधैत अछि।
८७१. (C) गाओल जाएबाक योग्यता — भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
८७२. (D) गेयता — भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
८७३. (D) भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि। — भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
८७४. (C) गाओल जाएबाक योग्यता — भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
८७५. (C) भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि। — भजन, गीत आ लोकछन्दमे गेयता प्रमुख अछि।
८७६. (D) छोट कथनमे नीति वा सार — दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
८७७. (B) सूक्तिपरकता — दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
८७८. (C) दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि। — दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
८७९. (D) छोट कथनमे नीति वा सार — दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
८८०. (A) दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि। — दोहा सूक्तिपरक अभिव्यक्तिक लेल प्रसिद्ध अछि।
८८१. (C) कथा कहबाक प्रवाह — चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
८८२. (B) कथात्मकता — चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
८८३. (D) चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि। — चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
८८४. (B) कथा कहबाक प्रवाह — चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
८८५. (A) चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि। — चौपाइ कथा-विस्तारमे सहज अछि।
८८६. (A) आरम्भक पदक अन्तमे पुनरागमन — कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
८८७. (C) वृत्ताकार प्रभाव — कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
८८८. (C) कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि। — कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
८८९. (A) आरम्भक पदक अन्तमे पुनरागमन — कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
८९०. (C) कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि। — कुण्डलिया नामें एही चक्राकार रचना संकेतित अछि।
८९१. (C) मात्रा-क्रममे नियत ठहराव — यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।
८९२. (A) यति-नियम — यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।
८९३. (B) यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि। — यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।

८९४. (B) मात्रा-क्रममे नियत ठहराव — यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।
८९५. (D) यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि। — यति पाठक स्पष्टता बढ़बैत अछि।
८९६. (C) जन-गीत, कथा आ उपदेशमे चलनवला छन्द — दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
८९७. (C) लोकप्रचलित छन्द — दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
८९८. (D) दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि। — दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
८९९. (D) जन-गीत, कथा आ उपदेशमे चलनवला छन्द — दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
९००. (B) दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि। — दोहा, चौपाइ, सोरठा आदि लोकपाठमे खूब भेटैत अछि।
९०१. (D) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान — परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
९०२. (A) काव्य-परीक्षा दृष्टि — परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
९०३. (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि। — परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
९०४. (B) लक्षण, उदाहरण आ भेदक स्पष्ट पहचान — परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
९०५. (D) परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि। — परीक्षामे परिभाषा मात्र नहि, प्रयोगो बुझब जरूरी अछि।
९०६. (C) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब — उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
९०७. (C) लक्षण आ उदाहरण — उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
९०८. (A) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि। — उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
९०९. (D) सिद्धान्तकेँ उदाहरणसँ जोड़ब — उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
९१०. (C) उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि। — उदाहरण सिद्धान्तक वास्तविक पहचान करबैत अछि।
९११. (B) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन — यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
९१२. (C) प्रयोजन आ कारण भेद — यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
९१३. (C) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि। — यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
९१४. (C) प्रयोजन लक्ष्य अछि, कारण सृजनक साधन — यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
९१५. (B) यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि। — यश प्रयोजन अछि, प्रतिभा कारण अछि।
९१६. (A) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब — नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
९१७. (D) भेद-पहिचान — नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
९१८. (B) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि। — नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
९१९. (D) रचनाक रूप, माध्यम आ संरचना देखब — नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
९२०. (C) नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि। — नाटक दृश्य, मुक्तक स्वतंत्र, प्रबन्ध क्रमबद्ध अछि।
९२१. (D) सीधा अर्थ, सम्बन्धित अर्थ आ सूचित अर्थक अन्तर — शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
९२२. (D) अभिधा-लक्षणा-व्यंजना भेद — शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
९२३. (D) शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि। — शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
९२४. (D) सीधा अर्थ, सम्बन्धित अर्थ आ सूचित अर्थक अन्तर — शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
९२५. (C) शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि। — शब्दशक्ति बुझबाक मूल कुंजी ई तीन अछि।
९२६. (D) स्थायीभाव आ प्रसंगक आधार पर रस चिन्हब — उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।
९२७. (B) रस-पहिचान — उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।
९२८. (D) उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए। — उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।
९२९. (B) स्थायीभाव आ प्रसंगक आधार पर रस चिन्हब — उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।

९३०. (C) उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए। — उत्साहसँ वीर, शोकसँ करुण, विस्मयसँ अद्भुत चिन्हल जाए।
९३१. (B) कारण आ बाहरी अभिव्यक्ति बीच भेद — विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
९३२. (C) विभाव-अनुभाव सम्बन्ध — विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
९३३. (B) विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि। — विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
९३४. (D) कारण आ बाहरी अभिव्यक्ति बीच भेद — विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
९३५. (D) विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि। — विभाव भाव जगबैत अछि, अनुभाव भाव देखबैत अछि।
९३६. (A) गुण प्रभाव अछि, रीति शैलीक मार्ग — प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
९३७. (C) गुण-रीति सम्बन्ध — प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
९३८. (D) प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि। — प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
९३९. (A) गुण प्रभाव अछि, रीति शैलीक मार्ग — प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
९४०. (B) प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि। — प्रसाद गुण, वैदर्भी रीति — दूनू जुड़ल मुदा समान नहि।
९४१. (C) ध्वनि वा शब्द-चमत्कारक आधार — अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
९४२. (B) शब्दालंकार-पहिचान — अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
९४३. (B) अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि। — अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
९४४. (A) ध्वनि वा शब्द-चमत्कारक आधार — अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
९४५. (B) अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि। — अनुप्रास, यमक, श्लेष मुख्य शब्दालंकार अछि।
९४६. (C) अर्थ-विन्यासक चमत्कार — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
९४७. (A) अर्थालंकार-पहिचान — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
९४८. (B) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि। — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
९४९. (B) अर्थ-विन्यासक चमत्कार — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
९५०. (D) उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि। — उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अर्थालंकार अछि।
९५१. (B) उपमामे तुलना, रूपकमे अभेद — ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक।
९५२. (D) उपमा-रूपक भेद — ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक।
९५३. (C) ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक। — ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक।
९५४. (A) उपमामे तुलना, रूपकमे अभेद — ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक।
९५५. (A) ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक। — ‘सन’ उपमा, सीधा समानता रूपक।
९५६. (A) कारण बिना कार्य, वा कारण रहितो कार्य-अभाव — दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
९५७. (D) विभावना-विशेषोक्ति भेद — दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
९५८. (A) दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि। — दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
९५९. (A) कारण बिना कार्य, वा कारण रहितो कार्य-अभाव — दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
९६०. (C) दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि। — दूनू कारण-कार्य सम्बन्धसँ जुड़ल मुदा विपरीत ढंग अछि।
९६१. (C) सन्देहमे संशय, भ्रान्तिमानमे भ्रम — ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान।
९६२. (C) सन्देह-भ्रान्तिमान भेद — ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान।
९६३. (C) ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान। — ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान।
९६४. (B) सन्देहमे संशय, भ्रान्तिमानमे भ्रम — ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान।
९६५. (B) ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान। — ‘की ई चन्द्र?’ सन्देह, ‘चन्द्र बुझलक’ भ्रान्तिमान।

૧૬૬. (D) બઢા-ચઢા કડ કહલ બાત — અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ।
૧૬૭. (D) અતિશયોક્તિ-પહિચાન — અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ।
૧૬૮. (C) અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ। — અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ।
૧૬૯. (A) બઢા-ચઢા કડ કહલ બાત — અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ।
૧૭૦. (C) અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ। — અતિશયોક્તિ ભાવક તીવ્રતા લેલ સીમા તોઢૈત અછિ।
૧૭૧. (B) માત્રા, વર્ણ, યતિ આ ગતિ દેખબ — છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ।
૧૭૨. (C) છન્દ-પહિચાન — છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ।
૧૭૩. (D) છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ। — છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ।
૧૭૪. (D) માત્રા, વર્ણ, યતિ આ ગતિ દેખબ — છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ।
૧૭૫. (B) છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ। — છન્દક સહી નામ ગણના આ લય સँ ઠહરૈત અછિ।
૧૭૬. (D) વર્ણવૃત્ત વર્ણપર, માત્રિક માત્રા પર આધારિત — અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ।
૧૭૭. (A) વર્ણવૃત્ત-માત્રિક ભેદ — અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ।
૧૭૮. (C) અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ। — અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ।
૧૭૯. (B) વર્ણવૃત્ત વર્ણપર, માત્રિક માત્રા પર આધારિત — અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ।
૧૮૦. (B) અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ। — અનુષ્ટુપ્ વર્ણવૃત્ત, ઢોહા માત્રિક છન્દ।
૧૮૧. (D) માત્રા ક્રમ ડલટ હોઢત અછિ — ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ।
૧૮૨. (B) ઢોહા-સોરઠા ભેદ — ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ।
૧૮૩. (A) ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ। — ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ।
૧૮૪. (B) માત્રા ક્રમ ડલટ હોઢત અછિ — ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ।
૧૮૫. (C) ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ। — ઢોહા તેરહ-ંગારહ, સોરઠા ંગારહ-તેરહ।
૧૮૬. (B) સોલહ માત્રા-પ્રધાન ચારિ ચરણ — ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ।
૧૮૭. (A) ચૌપાઢ-પહિચાન — ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ।
૧૮૮. (C) ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ। — ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ।
૧૮૯. (B) સોલહ માત્રા-પ્રધાન ચારિ ચરણ — ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ।
૧૯૦. (C) ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ। — ચૌપાઢ કથા-વાચનમે સહજ અછિ।
૧૯૧. (D) કાવ્યકેં બુઢ્ઢબ, પરખબ આ આસ્વાદ કરબ — કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ।
૧૯૨. (C) કાવ્યશાસ્ત્રક ડપયોગ — કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ।
૧૯૩. (B) કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ। — કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ।
૧૯૪. (A) કાવ્યકેં બુઢ્ઢબ, પરખબ આ આસ્વાદ કરબ — કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ।
૧૯૫. (D) કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ। — કાવ્યશાસ્ત્ર રટબાક વિષય નહિ, આસ્વાદક સાધન અછિ।
૧૯૬. (A) રસ, ગુણ, અલંકાર, રીતિ, છન્દ આ અર્થક મેલ — શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ।
૧૯૭. (C) સમેકિત સૌન્દર્ય-બોધ — શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ।
૧૯૮. (A) શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ। — શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ।
૧૯૯. (C) રસ, ગુણ, અલંકાર, રીતિ, છન્દ આ અર્થક મેલ — શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ।
૨૦૦૦. (A) શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ। — શ્રેષ્ઠ કાવ્ય અનેક તત્ત્વક સંતુલિત સમન્વયસँ બનૈત અછિ।